खंड 5
आधुनिक मनोविज्ञान में विचारधाराएँ तथा वाद-विवाद

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 12 मनोविज्ञान में वर्तमान विचारधाराएं*

संरचना

12.0 प्रस्तावना

12.1 संज्ञानवाद

12.2 सामाजिक रचनावाद

12.3 सांस्कृतिक, अंतः सांस्कृतिक एवं देशज मनोविज्ञान

12.4 नारीवाद

12.5 सकारात्मक मनोविज्ञान

12.6 सारांश

12.7 मुख्य शब्द

12.8 पुनरावलोकन प्रश्न

12.9 संदर्भ एवं पढ़ने के सुझाव

12.10 चित्रों के संदर्भ

12.11 ऑनलाइन संसाधन

सीखने के उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात, आप :

- मनोविज्ञान में कुछ वर्तमान विचारधाराओं की व्याख्या कर सकेंगे;
- संज्ञानात्मक मनोविज्ञान के उदभव पर चर्चा कर सकेंगे;
- मनोविज्ञान में सामाजिक रचनावाद के विचार का वर्णन कर सकेंगे;
- सांस्कृतिक मनोविज्ञान, अंतःसांस्कृतिक मनोविज्ञान और देशज मनोविज्ञान के मध्य अंतर और उनके महत्व को समझा सकेंगे;
- मनोविज्ञान में नारीवाद आंदोलन को स्पष्ट कर सकेंगे; और
- सकारात्मक मनोविज्ञान की प्रासंगिकता का वर्णन कर सकेंगे।

12.0 प्रस्तावना

अब तक, आपने मानव, प्रकृति और व्यवहार पर विचार या विभिन्न दृष्टिकोणों के बारे में सीखा हैं। वर्तमान इकाई में, हम समकालीन समय में विचारधाराओं और नए दृष्टिकोणों पर चर्चा करेंगे। यह अब तक स्पष्ट होना चाहिए कि 20वीं शताब्दी के मध्य से गुजरने के बाद और 21वीं सदी में चलते हुए मनोविज्ञान के अध्ययन एक परिवर्तन से गुजर रहा था। विशिष्ट होने के लिए, मनोविज्ञान जिसमें मनोविज्ञान की जाँच को पहचानने योग्य और विपरीत प्रणाली शामिल थी, आंकड़े संग्रह पर बल देने और मनोविज्ञान की अनुभवजन्य जड़ों में बदल गई। विशिष्ट प्रणालियों के पालन की

* डॉ. सैफ. आर. फारूकी, सहायक प्राध्यापक, अनुप्रयुक्त मनोविज्ञान विभाग, विवेकानन्द कॉलेज, नई दिल्ली

सार्वभौमिक अस्वीकृति का यह परिवर्तन अचानक नहीं हुआ। बजाय इसके कि विशिष्ट समस्याओं की जाँच करने की प्रवृत्ति, जो एक विशिष्ट शोध रणनीति को दर्शाती थी, प्रणालियां स्वयं महत्वपूर्ण समस्याओं को निर्धारित करने की कम संभावना रखते थे।

समकालीन मनोविज्ञान संकाय के विभिन्न क्षेत्रों से बना एक संकाय के रूप में जाना जाता है, जिसमें अधिगम, प्रत्यक्षण, विकास, सामाजिक गतिविधि या व्यक्तित्व जैसे पारंपरिक समस्याएं शामिल हो सकती हैं। इन क्षेत्रों में से कुछ में अनुसंधान को कभी-कभी एक विशेष अनुसंधान रणनीति के प्रमुख को प्रतिबंधित करने के लिए पाया गया है जो पहले की प्रणालियों में से एक है। हालांकि, समकालीन समय सें मनोविज्ञान अधिकतर एक उदार दृष्टिकोण का उपयोग कर रहा है जो एक व्यवस्थित ढ़ाँचे के साथ किसी भी तरह के जुड़ाव से बच जाता है। इसके अलावा, एक पूर्व कल्पित ढ़ांचे द्वारा निर्देशित होने के कारण, मनोविज्ञान को विशिष्ट मुद्दों द्वारा निर्देशित किया जा रहा है। इस अर्थ में भले ही समकालीन मनोविज्ञान को एक अनुभवजन्य विज्ञान कहा जा सकता है, यह प्रकृति में पूर्णतः प्रयोगात्मक नहीं है।

समकालीन मनोविज्ञान में एक अन्य विचारधारा यह है कि यह अध्ययन के क्षेत्रों को फिर से परिभाषित करता है। यह या तो मनोविज्ञान में विशेषता प्राप्त करने या पारंपरिक मनोवैज्ञानिक समस्याओं को कुछ अन्य संकाय के साथ जोड़ने का प्रयास करता है। मनोवैज्ञानिक भूमिकाओं में बदलाव लाने के लिए मनोवैज्ञानिकों की मांग के कारण अक्सर नई विशेषता सामने आई है। मनोविज्ञान के बजाय अन्तर और बहुविषयक अध्ययन की ओर ही सामान्य विधियों की स्वीकृति और पारंपरिक विषयों की बाधाओं को तोड़ते हुए, एक दी हुई समस्या को संबोधित करने के लिए वास्तव में दो या दो से अधिक विषयों को एक साथ लाया गया है। वैज्ञानिक जाँच के तकनीकी परिष्कार की प्रगति ने पारंपरिक दृष्टिकोणों को अप्रचलित और अपर्याप्त बनाने की इस प्रवृत्ति को और तेज कर दिया है।

समकालीन मनोविज्ञान पर हावी होने वाले मनोविज्ञान में वर्तमान के अग्रिम है - संज्ञानात्मक मनोविज्ञान, सामाजिक रचनावाद, सांस्कृतिक और अंतःसांस्कृतिक मनोविज्ञान, नारीवाद तथा सकारात्मक मनोविज्ञान।

12.1 संज्ञानवाद

व्यवहारवाद लगभग 50 वर्षों से मनोविज्ञान पर हावी रहा था। अधिकांश ग्रंथों से मन या चेतना जैसे मानसिक शब्द पूरी तरह से हटा दिए गए थे। मानसिक शब्दों के किसी भी उपयोग को अलोकप्रिय एवं अनुचित माना जाता था। हालांकि, कुछ मनोवैज्ञानिकों ने इसके बारे में बात करना शुरू कर दिया था। मानसिक शब्दों के उपयोग को लेकर कुछ हलचल सामने आई।

1978 में **थॉमस नैटसोलस** ने अमेरिकन साइकोलाजिस्ट में एक लेख 'कान्शियसनेस' प्रकाशित किया शोध पत्र सुझाव दे रहा था कि चेतन का मनोवैज्ञानिकों द्वारा फिर से अध्ययन किया जा रहा है, और यह कि इसे उपलब्ध साहित्य में सम्मान दिया जाना चाहिए। एक साल बाद 1979 में **डेविड लिबरमैन** ने अमेरिकन मनोवैज्ञानिक में एक लेख *बिहेवियरियन एंड द माइंड : ए काल फार एक रिटर्न ई इंट्रोस्पेक्शन* प्रकाशित किया। अमेरिकन साइकोलाजिकल एसोसिएशन (APA) के तत्कालीन अध्यक्ष **निकोलस कमिंग** ने अपने वार्षिक अध्यक्षीय संबोधन में सुझाव दिया कि मनोविज्ञान

की प्रकृति बहुत यान्त्रिक हो गई है, मनोविज्ञान निरंतर बदल रहा है, जिसमें चेतना पर अध्ययन की आवृत्ति शामिल है।

एक प्रतिष्ठित शोध पत्रिका में प्रकाशन और अमेरिकन साइकोलाजिकल एसोसिएशन के अध्यक्ष ने खुद बदलाव लाने का सुझाव दिया जो मनोविज्ञान के अन्दर धारा को जोड़ने के लिए पर्याप्त थे। पाठ्य पुस्तकों को संशोधित किया जाने लगा एवं मानसिक अवधारणाओं के समावेश का सुझाव दिया जा रहा था और सभी ने यह कहा कि शुरू करने के लिए मनोविज्ञान में संज्ञानात्मक क्रांति की ओर मोड़ दिया जाए। मनोविज्ञान में यह नाटकीय बदलाव धीरे-धीरे और शांति से दिखाई दिया। संज्ञानात्मक मनोविज्ञान के संस्थापक रातोंरात नहीं हुए थे, और न ही उन्हें एक एकल व्यक्ति की दृढ़ता के बारे में पता लगाया जा सकता है, जिन्होंने अकेले ही प्रभुत्व क्षेत्र को बदल दिया था। संज्ञानात्मक आंदोलन किसी एक संरचनात्मक की पुष्टि नहीं करता है, शायद इसलिए कि इस क्षेत्र में काम करने वाले मनोवैज्ञानिकों में से किसी में भी नए आन्दोलन का नेतृत्व करने की व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा नहीं थी। हालांकि शब्द के औपचारिक अर्थ में दोनों विद्वान संस्थापक नहीं है, लेकिन अनुसंधान केन्द्र और एक पुस्तक के रूप में क्रांतिकारी कार्य में योगदान दिया, जो संज्ञानात्मक मनोविज्ञान के विकास में एक मील का पत्थर माना जाता है। ये दो विद्वान हैंः **जॉर्ज ए मिलर** और **यूलिक नीस्सर**।

चित्र 12.1 : जॉर्ज ए. मिलर (1920–2012)

स्रोत : www.newyorktimes.com

जॉर्ज मिलर ने अपने सहयोगी, जीरोम ब्रूनर के साथ मिलकर, हॉवर्ड में मानव आत्मा को अध्ययन करने के लिए एक अनुसंधान केंद्र स्थापित किया। मिलर और ब्रूनर ने अपने विषय को नामित करने के लिए संज्ञान शब्द का चुनाव किया और उन्होंने इस नई व्यवस्था का नाम *सेंटर फॉर काग्निटिव स्टडीज* रखा। इसके संस्थापकों ने प्रदर्शित किया कि कैसे वे व्यवहारवाद से बहुत भिन्न थे।

सेन्टर फॉर कांग्निटिव स्टडीज में विविध विषयों की जाँच की गई, जिसमें भाषा, स्मृति, प्रत्यक्षण, संप्रत्यय निर्माण, चिंतन और विकासात्मक मनोविज्ञान शामिल थे। व्यवहारवाद के प्रभुत्व के दौरान इन विषयों में से अधिकांश को मनोविज्ञान से समाप्त कर दिया गया था। बाद में मिलर ने प्रिंसटन विश्वविद्यालय में संज्ञानात्मक विज्ञान पाठ्यक्रम की नींव डाली।

मिलर ये संज्ञानात्मक आंदोलन को क्रांतिकारी के बजाय विकासवादी के रूप में देखा। उन्होंने महसूस किया कि यह सामान्य 'भाव या बोध की वापसी थी, जिसने स्वीकार किया और पुष्टि की कि मनोविज्ञान मानसिक जीवन के साथ-साथ व्यवहार को भी संबोधित करता है। मिलर के अनुसंधान ने कई संज्ञानात्मक मनोविज्ञान प्रयोगशालाओं का सृजन किया। उनके काम से मनोविज्ञान के दृष्टिकोण का तेजी से विकास हुआ। मिलर के अलावा संज्ञानात्मक मनोविज्ञान की स्थापना से जुड़े दूसरे व्यक्ति का नाम यूलिक निस्सर है। 1967 में निस्सर ने *कॉग्निटिव साइकोलॉजी* नामक पुस्तक प्रकाशित की, जिसने संज्ञानात्मक मनोविज्ञान के क्षेत्र को स्थापित किया। उन्होंने अपने कार्य को व्यक्तिगत प्रयास के रूप में वर्णित किया कि वह किस तरह के मनोवैज्ञानिक थे और बनने की इच्छा रखते थे।

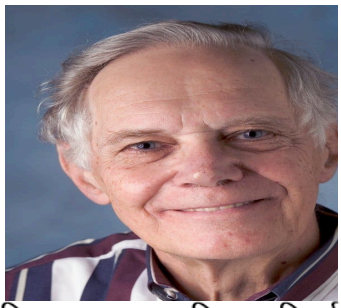

चित्र 12.2: यूलिक रिचर्ड़ गुस्ताव नीस्सर (1928–2012)
स्रोत :
www.newyorktimes.com

पुस्तक में एक नए प्रकार के मनोविज्ञान का भी वर्णन किया गया है। पुस्तक बेहद लोकप्रिय हो गई और निस्सर को *संज्ञानात्मक मनोविज्ञान का जनक* कहा गया। उनकी पुस्तक ने मनोविज्ञान को व्यवहारवाद, से दूर रखने और *संज्ञान* की ओर बढ़ने में सहायता की। निस्सर ने इन प्रक्रियाओं के संदर्भ में संज्ञान का वर्णन किया है जिसके द्वारा संवेदी इनपुट परिवर्तन, कम, विस्तृत, संग्रहीत, पुर्नप्राप्ति और उपयोग किया जाता है। उनके अनुसार संज्ञान हर चीज में विकसित होती है जो मनुष्य संभवतः कर सकता है। इसलिए, संज्ञानात्मक मनोविज्ञान भावनाओं, प्रत्यक्षण, इमेजिंग स्मृति, समस्या समाधान, चिंतन और अन्य सभी मानसिक गतिविधियों पर केन्द्रित हैं।

मिलर और निस्सर द्वारा संज्ञानात्मक मनोविज्ञान की स्थापना के पश्चात, कम्प्यूटर को संज्ञानात्मक मनोविज्ञान के लिए एक प्रतिमान के रूप में जाना जाने लगा। इसे *कम्प्यूटर रूपक* के रूप में सन्दर्भित किया गया था। मनोवैज्ञानिक संज्ञानात्मक घटनाओं को समझने के तरीके के रूप में कम्प्यूटर का उपयोग करने पर भरोसा करते रहे हैं। कम्प्यूटर को कृत्रिम बुद्धिमता प्रदर्शित करने के रूप में माना जाता है और अक्सर वे जिस प्रकार से कार्य करते हैं, उसे मानवीय शब्दों में वर्णित किया गया है। उदाहरण के लिए कम्प्यूटर की भण्डारण क्षमता को *मेमोरी* कहा जाता है, प्रोग्राम कोड को *भाषा* कहा जाता है, और विकसित होने वाले शब्दों को कम्प्यूटर की नई पीढ़ी के संबंध में प्रयोग किया जाता है। यह कहा जाता है कि कम्प्यूटर प्रोग्राम जो मुख्य रूप से प्रतीकों से निपटने के लिए निर्देशों का एक सेट है, मानव मन के समान कार्य करते हैं। दोनों कम्प्यूटर के साथ-साथ मानव मन, पर्यावरण से बहुत सारी सूचना (उददीपक; आंकड़े) प्राप्त करता और रखता है। यह जानकारी कई अलग-अलग तरीकों से संसाधित, प्रहस्तन, संग्रहीत और पुनर्प्राप्ति की जाती है। इस प्रकार, कम्प्यूटर प्रोग्रामिंग एक प्रतिमान है, जिसका पालन मानव सूचना प्रसंस्करण, तर्क और समस्या निवारण में किया जाता है। यह कम्प्यूटर नहीं है, लेकिन मानसिक क्रियाओं को समझाने के लिए उपयोग किया जाने वाला प्रोग्राम है।

संज्ञानात्मक मनोवैज्ञानिकों का मुख्य बल प्रतीक के प्रहस्तन के अनुकम को समझना है जो मानव सोच से गुजरता है। उन्हें मानसिक प्रक्रियाओं के शारीरिक संबंधों को समझने में कम रुचि है। संज्ञानात्मक मनोवैज्ञानिकों का उद्देश्य मानव स्मृति में संग्रहीत कार्यक्रम की लाइब्रेरी को खोजना है। ये ऐसे कार्यक्रम हैं जो व्यक्ति को वाक्यों को समझने और बनाने, स्मृति को अनुभव करने और समस्याओं के समाधान करने में सक्षम बनाते हैं। यह मानव मन का सूचना प्रक्रम है जो संज्ञानात्मक मनोविज्ञान का आधार बनता है।

संज्ञानात्मक मनोविज्ञान एक ऐसे समय में उभरा जब व्यवहारवाद का प्रभुत्व था, संज्ञानात्मक मनोविज्ञान की प्रकृति को समझने का एक अच्छा तरीका इसे व्यवहारवाद से अलग करना है। संज्ञानात्मक मनोवैज्ञानिकों में जानने की प्रक्रिया पर बल दिया न कि यह कैसे व्यक्ति उद्दीपकों पर प्रतिक्रिया करते हैं। संज्ञानात्मक मनोवैज्ञानिकों के लिए महत्वपूर्ण कारक मानसिक प्रक्रियाएं और घटनाएं हैं न कि उद्दीपक-अनुक्रिया सहचर्यो, व्यवहार के बजाय मस्तिष्क पर बल देते हैं। संज्ञानात्मक मनोवैज्ञानिक व्यवहार प्रक्रियाओं को अनदेखा नहीं करते है, लेकिन उन प्रक्रियाओं को समझना केवल उनकी जाँच का लक्ष्य नहीं हैं। व्यवहारिक प्रतिक्रियाओं का अनुमान लगाने के लिए एक स्त्रोत के रूप में देखा जाता है और उनके साथ होने वाली मानसिक प्रक्रियाओं के बारे में निष्कर्ष निकाला जाता है।

इसके साथ-साथ, संज्ञानात्मक मनोवैज्ञानिक उन तरीकों की जाँच करते है जिनमें मन अनुभवों को व्यवस्थित करता है। एक प्रकार से सचेत अनुभवों को व्यवस्थित करने की जन्मजात प्रवृत्ति जो इसे अर्थपूर्ण बनाती है। संज्ञानात्मक मनोविज्ञान की विषय वस्तु, तब है जब मन मानसिक अनुभवों को सुसंगत बनाता है। इस दृष्टिकोण के विपरीत व्यवहारवादियों ने तर्क दिया कि मन के पास ऐसी कोई सहज याथोजन क्षमता नहीं है। इसके अतिरिक्त, संज्ञानात्मक मनोविज्ञान के अनुसार व्यक्ति एक सक्रिय एजेंट है जो रचनात्मक तरीके से, पर्यावरण में उददीपकों की व्यवस्था करता है। संज्ञानात्मक मनोविज्ञान का सुझाव है कि मनुष्य ज्ञान के अधिग्रहण और अनुप्रयोग में सक्रिय रूप से जानबूझकर कुछ घटनाओं में भाग लेने और उन्हें स्मृत्ति के लिए चुनने के लिए भाग लेता है। दूसरी और व्यवहारवादी पर्यावरण में मनुष्यों के सक्रिय होने के विचार से कभी सहमत नहीं होते है। उन्होंने हमेशा दावा किया है कि मनुष्य बाहरी घटनाओं का निष्क्रिय रूप से जवाब देते हैं। वे खाली स्लेट के समान है जिस पर संवेदी अनुभव लिखे जायेंगे।

बॉक्स 12.1 : अचेतन संज्ञान

संचेतन जागरूकता से परे मानसिक प्रक्रियायें संज्ञानात्मक मनोवैज्ञानिक द्वारा संचेतन मानसिक प्रक्रियाओं का अध्ययन ने अचेतन संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं में नई रुचि पैदा की है। ये अचेतन संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं वही अचेतन प्रक्रियाएं नहीं है जिनके विषय में सिगमण्ड फ्रायड ने बात की थी। संज्ञानात्मक मनोवैज्ञानिकों द्वारा सन्दर्भित अचेतन फ्रायड की संवेगात्मकता के विपरीत तर्कसंगत प्रक्रियाएं है, जिनमें आघात, द्वंद्व और यौन आक्रामक आग्रह शामिल है। अचेतन के मनोविश्लेषणात्मक रूप से संज्ञानात्मक अचेतन को अलग करने के लिए और कुछ संज्ञानात्मक मनोवैज्ञानिक अचेतन शब्द का उपयोग करना पसंद करते हैं।

संज्ञानात्मक मनोवैज्ञानिकों के अनुसार अचेतन मानव के पहले चरण में शामिल होता है। जो उददीपकों के प्रतिक्रियात्मक कार्य में उत्पन्न होता है। यह सीखने एवं सूचना प्रसंस्करण का एक अभिन्न अंग हैं, जिसे नियन्त्रित प्रयोगों के विभिन्न रूपों के माध्यम से अध्ययन किया जा सकता है। शोधकर्त्ता अब आमतौर पर इस बात से सहमत है कि मनुष्य की अधिकांश मानसिक प्रक्रियाएं गैर-अचेतन स्तर पर होती हैं।

अचेतन का एक प्रसिद्ध उदाहरण अवसीमांत प्रत्यक्षण है जो जागरूकता अवसीमांत प्रत्यक्षण है। शोधकर्त्ताओं में पाया कि लोग उददीपकों से प्रभावित हो सकते हैं जिन्हें न तो देखा और न ही सुना जा सकता है। इन और अन्य समान खोजों को संज्ञानात्मक मनोवैज्ञानिक ने निष्कर्ष निकालते हैं कि प्रायोगिक प्रयोगशाला के अंदर या बाहर ज्ञान प्राप्त करने की प्रक्रिया, चेतन एवं अचेतन दोनों स्तर पर होती है। अधिकतर मानसिक कार्य जो अधिगम में शामिल होते हैं अचेतन स्तर का स्थान ले लेते है। अनुसंधान सुझाव देता है कि अचेतन सूचना प्रक्रम संचेतन सूचना प्रक्रिया के स्तर की तुलना में तेज, अधिक प्रभावी एवं अधिक जटिल होती है।

12.2 सामाजिक रचनावाद

विज्ञान के दार्शनिकों ने सुझाव दिया है कि सैद्धान्तिक मान्यताओं के साथ अवलकनों को अनुमति दी जाती है जो भी परीक्षण किए जाते है, वे पूर्व सिद्धांत के आधार पर उस वस्तु के लिए जिम्मेदार अर्थ से प्रभावित होते है। इस विचार को अवलोकन के

लेडनेस - सिद्धांत के रूप में संदर्भित किया जाता है, और अब आधुनिक दर्शन विज्ञान का एक केन्द्रीय हिस्सा बन गया है।

हालांकि यह विचार विज्ञान के दर्शन के लिए अद्वितीय नहीं है। गेस्टाल्ट मनोविज्ञान के साथ-साथ प्रत्यक्षण के परिस्थितिक दृष्टिकोण का भी यही विचार है। लेडनेस सिद्धांत क्यों उत्पन्न होता है इसके लिए गेस्टाल्ट मनोविज्ञान एक व्याख्या प्रस्तुत करता है। गेस्टाल्टवादियों के अनुसार लोग वस्तुओं को समग्र रूप से देखते है, लेकिन यह समग्र प्रत्यक्षण पूर्व सिद्धांत पर आधारित है।

विज्ञान और गेस्टाल्टवादियों के विचार के दर्शन में विद्यमान पूर्व सिद्धांत के आधार पर लेडनेस सिद्धांत या अर्थ की विशेषता को सामाजिक रचनावाद कहा जाता है। सामाजिक रचनावाद का महत्वपूर्ण विचार यह है कि वास्तविकता की व्याख्या किसी व्यक्ति के मस्तिष्क में अलगाव तक सीमित नहीं है। इसके बजाय, निरीक्षण और घटनाओं की व्याख्या अन्य लोगों के साथ भाषण एवं संवाद के रूप में उभरती है। इसका तात्पर्य है कि वास्तविकता व्यक्ति द्वारा निर्मित होने के बजाय सामाजिक रूप से निर्मित है। सामाजिक अंतःक्रियाओं से वास्तविकता उभरती है।

सामाजिक रचनावाद शब्द का उपयोग कई अलग-अलग तरीकों से किया गया है। यह शब्द पहली बार **पीटर बर्गर** एवं **थॉमस लुकमैन** द्वारा लिखी गई पुस्तक के शीर्षक में दिखायी दिया, जिसे *द सोशल कंस्ट्रक्शन ऑफ रियलिटीः ए ट्रीटाइज इन द सोशियोलॉजी ऑफ नॉलेज,* 1966 में प्रकाशित हुई। जैसा कि पुस्तक के शीर्षक से पता चलता है कि यह समाजशास्त्र के संदर्भ में उपयोग हुआ। बाद में इस शब्द का उपयोग सामाजिक मनोवैज्ञानिकों द्वारा किया जाने लगा। प्रारंभ में मनोविज्ञान में सामाजिक रचनावाद शब्द का उपयेाग सामाजिक सन्दर्भ में किसी व्यक्ति के अर्थ के विकास पर बल देने के लिए किया जाता था। हालांकि 1980 के दशक तक सामाजिक संरचनावाद को मनोविज्ञान से जोड़ा गया था।

मनोविज्ञान में सामाजिक संरचनावाद के प्रमुख समर्थकों में से एक सामाजिक मनोवैज्ञानिक **केन गेर्गन** थे। 1985 में गेर्गन ने अमेरिकन साइकॉलॉजिस्ट में एक लेख *द सोशल कन्स्ट्रक्शनिस्ट मूवमेंट इन मॉडर्न साइकोलॉजी* लिखा। गेर्गन का यह लेख एक सकारात्मक अर्थ में घोषणापत्र की भांति निकला। इसने मनोविज्ञान के सम्बन्ध में जो चिन्ता की कुछ समस्याओं को अनुभव करने का संक्षिप्त वर्णन प्रस्तुत किया। सामाजिक रचनावादी दृष्टिकोण अपनाने के कारण उसे जो लाभ अनुभव हुआ उसको व्यक्त किया। अपने लेख में गेर्गन ने अपनी परिभाषा का वर्णन करने के लिए ''सामाजिक संरचनावादी जाँच शब्द गढ़ा।

चित्र 12.3 : केन गेर्गन (1935)
स्रोत :
www.positivitystrategist.com

गेर्गन के अनुसार एक सामाजिक संरचनावादी जाँच मुख्य रूप से उन प्रक्रियाओं को स्पष्ट करने से सम्बन्धित है जिनके द्वारा लोग उस दुनिया (स्वयं सहित) के बारे में वर्णन करते हुए समझाते है जिसमें वे रहते हैं। यह समझने के सामान्य रूपों को स्पष्ट करने का प्रयास करता है जैसे, वे अभी या ऐतिहासिक अवधि के रहे है। वे या वे हो सकते है यदि वे अधिक रचनात्मक ध्यान देते हैं।

अन्य शब्दों में जो वास्तव में चल रहा था, उसके मनोवैज्ञानिक स्पष्टीकरण के लिए रोजमर्रा की भाषा से परे देखने के बजाय गेर्गन ने सुझाव दिया कि मनोवैज्ञानिकों को सामाजिक रूप से रचनात्मक प्रक्रियाओं के संदर्भ में अपने शोध को देखना चाहिए।

यह सामाजिक रूप से निर्मित प्रक्रियाएं है, गेर्गन के अनुसार यह साझा समझ उत्पन्न करती हैं।

इस सम्बन्ध में गेर्गन ने सुझाव दिया कि मनोवैज्ञानिकों को भाषाई मोड़ को जो उन्होंने कहा है उसके व्यापक प्रभावों पर विचार करना चाहिए जो बाद में शास्त्रार्थ मीमांसा विद्वानों के कार्यों में पाया जा सकता है। इसने सुझाव दिया कि जो अर्थ अनुभव करने के लिए दिया गया है, उसे पूर्ण अर्थ में नहीं देखा जा सकता है। बजाय इसके इसे निरंतर मानवीय और सांस्कृतिक प्रयासों में योगदान के रूप में देखा जाना चाहिए।

गेर्गन के विचार व्यापक है और उन्हें दार्शनिक, ऐतिहासिक एवं साहित्यिक विचार के विभिन्न भागों से लिया गया था। गेर्गन का उद्देश्य ऐसे परिप्रेक्ष्य के बारे में बाहर लाना था, जो उत्पन्न ज्ञान रचना की वकालत करता है के ताकि इस प्रकार के ज्ञान का लाभ अपने उपयोगकर्ताओं के लिए अनुकूलित किया जा सके। इसने मनोचिकित्सा के उनके दृष्टिकोण को बढ़ाया। उनके अनुसार चिकित्सकीय प्रक्रियाओं में चिकित्सीय व्यवहार में भाषा उपयोग का विचार अपर्याप्त है। उन्हें नैदानिक घटनाओं में अनुसंधान के लिए भी यही चिन्ता थी। सामाजिक रचनावाद का विचार सौन्दर्य लिंग, नैतिकता, विकृति विज्ञान, नस्ल, और कामुकता जैसे क्षेत्रों में रुचि रखने वाले सामाजिक वैज्ञानिकों के लिए प्रासंगिक हो जाता है। जबकि यह व्यापक रूप से माना जाता था कि इन धाराओं को निश्चित प्राकृतिक या आध्यात्मिक नियमों द्वारा निर्धारित किया गया था और इसलिए सामाजिक ऐतिहासिक रूप से अपरिवर्तनीय थे, सामाजिक रचनावादियों ने बार-बार यह प्रदर्शित किया कि ये अवधारणा वास्तव में सांस्कृतिक रूप से सापेक्ष या ऐतिहासिक रूप से विशिष्ट है। वैचारिक संसाधन जिसके साथ सामाजिक विज्ञानों के भीतर और बाहर दोनों तरह की सैद्धान्तिक स्रोतों की एक विस्तृत श्रृंखला से सम्प्रत्यात्मक स्रोतों जो ऐसे प्रदर्शनों के साथ होते ही प्राप्त हुए है। सामाजिक रचनावाद के सम्बन्ध में आधुनिक सामाजिक विज्ञान के तीन सबसे प्रमुख संस्थापकों **इमाइल दुर्खीम, मैक्स वेबर** और **कार्ल मार्क्स** ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उन्होंने सामाजिक रचनावादी सामाजिक विज्ञान के लिए प्रमुख मिसालें कायम की है।

सामाजिक रचनावादी अनुसंधान पर इमाइल दुर्खीम का बहुत प्रभाव था। उन्होंने तर्क दिया कि वर्गीकरण की प्रणालियों उन समाजों के सामाजिक संगठन को दर्शाती है जिन समाजों में वे होते हैं। मानवशास्त्र में वर्गीकरण और ज्ञान के समाजशास्त्र में इस बदलाव ने कई लेखकों के लिए एक पैटर्न स्थापित किया जो रचनावादी आंदोलन में प्रभावशाली नेता बन गये। इन लेखकों में **पियरे बोरडेयू, मैरीडगल्स, पीटर विंच एवं माइकल फोकाल्ट** शामिल हैं।

जर्मन समाजशास्त्री, दार्शनिक और राजनीतिक अर्थशास्त्री मैक्स वेबर ने *वेरस्टेन समाजशास्त्र* को लोकप्रिय बनाया। जर्मन में वेरस्टेन सामान्य तौर पर गहरे तरीके से समझना या सहानुभूतिपूर्ण समझ में अनुवाद किया जाता है। इसने जर्मन आदर्शवाद से जुड़े शुरुआती लेखकों की एक विस्तृत श्रृंखला को प्रभावित किया, जिसमें रचनावादी परंपरा के नेता शामिल हैं जैसे कि **इमैनुअल कांट, विल्हेम डिल्ले** और **फ्रेडरिक नीत्शे**। यह सुझाव दिया गया कि यदि यह वेबर का प्रभाव नहीं था, तो सामाजिक विज्ञानों ने सामाजिक रचनावाद के विकास के लिए काफी कम उपयोगी आधार दिया होता। हाल के दिनों में आदर्श प्रकार, अर्थ, मूल्य और युक्तिपरक पर वेबर के लेखों ने रचनावाद के विचार में अन्य महत्वपूर्ण योगदानकर्ताओं पर विशिष्ट प्रभावों की एक

विस्तृत श्रृंखला का उपयेाग किया जिसमें **अल्फ्रेड शुट्ज, कार्ल मैनहेम** और **जुएगैन हेवरमास** शामिल है।

शास्त्रीय सिद्धान्तकारों में कार्ल मार्क्स है जिन्होंने सामाजिक रचनावाद कि विचारधारा पर अपने लेखन के माध्यम से सबसे अधिक प्रभाव डाला है। मार्क्स, ने इस अवधारणा को विकसित करने के लिए सुझाव दिया कि कैसे लोग एक झूठी चेतना में उलझा देती है। इस विचार को बाद में मार्क्सवादी, जैसे **जॉर्ज लुकास** एवं **ऐटोनियों ग्रामस्की** द्वारा विकसित किया गया था। उन्होंने वर्ग चेतना, पुनर्सरचना और आधिपत्य जैसी अवधारणाओं पर विस्तार से बताया। जिनका विचारों की अपेक्षित वैधता को उन नेताओं के हितों से जोड़कर सामाजिक रचनावाद पर अनुसंधान पर काफी प्रभाव पड़ा जो उन मानको को प्रभावित करने के लिए पर्याप्त रूप से शक्तिशाली है जिनके द्वारा उनकी वैधता को मापा जाता है।

चित्र 12.4 : कार्ल मार्क्स (1818–1883)
स्रोत :
www.britannica.com

सामाजिक, रचनावाद अर्थ और शक्ति पर केन्द्रित है। अर्थ स्वयं वस्तुओं और घटनाओं की संपत्ति नहीं है, बल्कि एक रचना है। अर्थ सामाजिक, भाषाई, विवेकशील और प्रतीकात्मक प्रथाओं के प्रचलित सांस्कृतिक वर्ग का उत्पाद है। सामाजिक व्यवस्था में एक-दूसरे के साथ बातचीत करने वाले व्यक्ति और समूह, समय-समय पर एक दूसरे के कार्यों की अवधारणा या मानसिक स्वरूप का प्रतिनिधित्व करते हैं। ये अवधारणायें अन्ततः एक दूसरे के सम्बन्ध में नायकों द्वारा निभाई गई पारस्परिक भूमिकाओं में अभ्यस्त हो जाती है। भूमिकाओं को समाज के अन्य सदस्यों को प्रवेश करने और बाहरी खेलने के लिए उपलब्ध कराया जाता है। पारस्परिक बातचीत जिसे संस्थागत कहा जाता है। इस संस्थागत की प्रक्रिया में अर्थ समाज में अन्तर्निहित है। इसलिए समाज की संस्थागत रचना, ज्ञान, अवधारणाएँ एवं मान्यताएँ और वास्तविकता के संबंध में विश्वास से ओत-प्रोत हो जाती है।

सामाजिक रचनावाद के दृष्टिकोण से ज्ञान एवं प्रणालियों स्वाभाविक रूप से साझा समझदारी और इसके विपरीत के समुदायों पर निर्भर है। वे ऐतिहासिक और सांस्कृतिक रूप से स्थित मानक नियमों द्वारा बड़े पैमाने पर शासित हैं, मानदंड जो व्यवहार और घटनाओं की पहचान करने के लिए होते है, बड़े पैमाने पर संस्कृति इतिहास और सामाजिक सन्दर्भ द्वारा परिचालित होते है। इसलिए सामाजिक रचनावाद का अर्थ यह है कि एक सामाजिक, सामुदायिक सन्दर्भ में समय के साथ विचारों और दृष्टिकोणों को कैसे विकसित किया जाता है, इसकी समझ है। सम्पूर्ण ज्ञान लोगों के मध्य और आम दुनिया के दायरे में विकसित होता है। इस प्रकार एक व्यक्ति केवल अंतरंग के साथ चल रही बातचीत के माध्यम से पहचान या आन्तरिक आवाज की भावना विकसित करता है। सामाजिक रचनावाद किसी व्यक्ति को विशिष्ट समय और स्थानों में सांस्कृतिक, राजनीतिक और ऐतिहासिक विकास का एक अभिन्न अंग मानता है। परिणामस्वरूप, मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं को सामाजिक और लौकिक सन्दर्भों में सांस्कृतिक रूप से देखा जाता है। मानवता की विरासत और विकास के पहलुओं के अलावा सामाजिक रचनावाद बताता है कि मानवता के सभी पहलुओं को समय के माध्यम से दूसरों के साथ बातचीत के लिए बनाया, बनाए रखा और नष्ट किया जाता है। जीवन की सामाजिक प्रथाएं शुरू होती हैं और वर्तमान में पुनः निर्मित होती हैं, और अन्त में समाप्त हो जाती हैं।

बॉक्स 12.2 : रचनावाद, सामाजिक रचनावाद एवं सामाजिक रचनावाद

रचनावाद सैद्धान्तिक दृष्टिकोण है जो यह बताता है कि लोग सक्रिय रूप से दुनिया के बारे में अपना प्रत्यक्षण का निर्माण करते है और उन वस्तुओं एवं घटनाओं की व्याख्या करते हैं, जो उन्हें पहले से ही ज्ञात हैं। इस प्रकार, ज्ञान की उनकी वर्तमान स्थिति प्रसंस्करण को निर्देशित करती है जिसका एक महत्वपूर्ण प्रभाव यह है कि नई जानकारी कैसे प्राप्त की जाती है, और किस प्रकार की नवीन जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

रचनाकारों का मानना है कि ज्ञान और वास्तविकता का निर्माण व्यक्ति के अन्दर होता है। वे संज्ञानात्मक और जैविक प्रक्रियाओं पर ध्यान केन्द्रित करते हुए व्यक्ति के मन और मस्तिष्क के अन्दर क्या होता है इस पर बल देते हैं।

सामाजिक रचनावाद विचार की यह सम्प्रदाय है जो यह बताती है कि ज्ञान सामाजिक सन्दर्भों और विचारों, भावनाओं, भाषा और व्यवहार में बाहरी दुनिया के साथ, अन्तर्संबन्धों के परिणामस्वरूप अन्तर्निहित होता है। सामाजिक रचनावादियों का तर्क है कि व्यक्तिवाद एवं वस्तुनिष्ठता के बीच कोई अलगाव नहीं है और व्यक्ति और परिस्थिति के बीच द्वन्दवाद गलत है। वे सुझाव देते है कि व्यक्ति सामाजिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक शक्तियों के अन्दर आत्मीयता से जुड़ा हुआ है और इस सामाजिक शक्तियों पर विचार किए बिना पूरी तरह से समझा नहीं जा सकता है। सामाजिक रचनावाद के अनुसार न केवल ज्ञान बल्कि वास्तविकता भी एक संवादात्मक प्रक्रिया में बनाई गई है और इस प्रकार लोग विशेष रूप से वही है जो उनके समाज उन्हें आकार देते हैं।

सामाजिक रचनावाद ज्ञानमीमांसीय स्थिति है जो मुख्यतः उत्तर आधुनिकतावाद से जुड़ी है। सामाजिक रचनावाद के अनुसार वास्तविकता का ज्ञान वास्तव में भाषा, संस्कृति और समाज का निर्माण है जिसका कोई उद्देश्य या सार्वभौमिक वैधता नहीं है। इस अर्थ में ज्ञान किसी भी अन्तर्निहित गुणों के बजाय मानवता के सामूहिक सामाजिक आत्म पर निर्भर है इसलिए सामाजिक रचनावादी, उन तरीकों की खोज करना चाहते हैं, जिसमें व्यक्ति और समूह विभिन्न घटनाओं को देखते हुए उनकी समझ में आने वाली वास्तविकता के निर्माण में भाग लेते हैं, समझते हैं और सामाजिक संस्थाओं और सन्दर्भों द्वारा स्वीकार किये जाते हैं जिनमें वे उपस्थित हैं।

अपनी प्रगति की जाँच कीजिए 1

1) जॉर्ज मिलर एवं यूलरिक निस्सर ने संज्ञानात्मक मनोविज्ञान के क्षेत्र को कैसे स्थापित किया। चर्चा कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) सामाजिक रचनावाद के परिप्रेक्ष्य में अर्थ के विचार की चर्चा कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

3) संज्ञानात्मक मनोवैज्ञानिकों की मुख्य अवधारणा क्या है?

.....

.....

.....

.....

.....

4) अवसीमांत प्रत्यक्षण को परिभाषित कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

5) लेडनेस सिद्धांत से क्या तात्पर्य है?

.....

.....

.....

.....

.....

12.3 सांस्कृतिक, अंतःसांस्कृतिक एवं देशज मनोविज्ञान

ऐसे कई तरीके हैं जिनसे यह देखा जा सकता है कि 21वीं सदी में संस्कृति को मनोविज्ञान के दायरे में कैसे शामिल किया गया। सर्वप्रथम, सांस्कृतिक मानवविज्ञान और समाजशास्त्र जैसे विषयांतर विषयों के साथ यथार्थवादी सम्बन्ध हुए, जहाँ से इस तरह के प्रयासों से उनकी शुरुआत हो सकी है। फिर भी, संस्कृति ने पिछले एक दशक में मनोविज्ञान के विशाल क्षेत्र में कदम रखा गया है।

मनोविज्ञान सदैव एक विषम संकाय रहा है। मनोविज्ञान के अन्तर्गत, संस्कृति के विचार को अपनाने की दिशा में कई कदम उठाए गये हैं। अतीत को देखते हुए,

मनोविज्ञान में संस्कृति के विचार को 1980 के दशक के शैक्षिक और विकासात्मक चिन्ताओं से शुरू हुआ देखा जा सकता है, जो अधिकतर अपने प्रयासों के लिए वायगोत्सकी के विचारों का उपयोग करते थे। हालांकि 2010 तक सामाजिक मनोविज्ञान के प्रयासों पर भी विचार किया जाता है, दोनों यूरोप और संयुक्त राज्य अमेरिका में, जहाँ सामान्य सामाजिक स्तर अक्सर *सांस्कृतिक* द्वारा लिया जाता है।

दूसरा, यह संदेशों और लोगों का तेजी से चलता आन्दोलन है, जिसने सजातीय वर्गों की पूर्व छवियों को बना दिया है जो अंतःसांस्कृतिक मनोविज्ञान पर हावी या तो विवादास्पद या समस्याग्रस्त है।

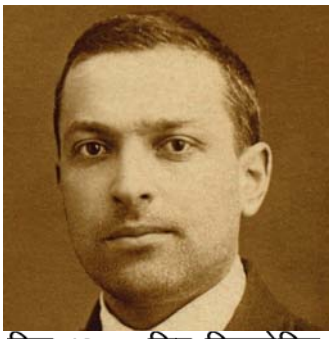

चित्र 12.5 : लिव सिमनोविच वाइगोत्सकी (1986–1934)
स्रोत :
www.verywellmind.com

समाजों की तुलना करने की परंपरा, अर्थात सांस्कृतियों के रूप में फिर से अधिकृत किए जाने वाले देशों को अंतःसांस्कृतिक मनोविज्ञान में एक स्वीकृत अभ्यास बन गया था। आंकड़ों की औसत की अनुभवजन्य तुलना ''विभिन्न संस्कृतियों से'' (देशों) सांस्कृतिक मनोविज्ञान द्वारा आगे के विश्लेषण के लिए रुचिकर शुरुआती आंकड़े ला सकती है।

यह सभी वास्तविक जीवन के सामाजिक परिवर्तनों द्वारा समर्थित है। विशेष रूप से वैश्वीकरण में एक तरह से सांस्कृतिक विदेशियों को अगले दरवाजे वाला पड़ोसी बना दिया है। दिए गए स्थान के पहले से स्थापित उपनिवेशवादियों के लिए उनके जीवन जीने के तरीकों की समझ बनाने की समस्या है। पिछले सदी में जो था, उससे अब दुनिया बदल गई है। लोग अब संस्कृति के अन्य लोगों के साथ घनिष्ठ संम्पर्क रखते है और इस नवाचार के लिए सभी सामाजिक मनोवैज्ञानिक अनुकूलन एक सांस्कृतिक उच्चारण प्राप्त करते हैं।

समकालीन सामाजिक मनोविज्ञान ऐसी सामाजिक घटनाओं की जाँच करने पर बल देता है जो जटिल सांस्कृतिक उच्चारण होते है। यह अलग-अलग देशों और उनके सामाजिक राजनीतिक संगठनों से दोनों के प्रचार-प्रसार की माँग के कारण सांस्कृतिक रूप से दूसरों को समझने और प्रशासन करने के लिए अभी तक अपने स्वयं के प्रमुख केन्द्रीयता को बनाए रखता है। 1990 के दशक से वर्तमान समय तक चली आ रही संस्कृति और मनोविज्ञान को एकजुट करने का यह प्रयास वास्तव में मनोविज्ञान के इतिहास में पहली बार नहीं है। हाल के दशकों में यह देखा गया कि सामान्य तौर पर विज्ञान में संस्कृति के पहलू को प्रस्तुत करने के लिए कई प्रयास किए गए है। इसी भांति मनोविज्ञान ने नये तरीके से सांस्कृतिक क्षेत्र में प्रवेश करना शुरू कर दिया जिसकी कभी कल्पना नहीं की गई थी।

मनोविज्ञान के ऐतिहासिक अन्तर्द्वनदों ने वास्तव में संस्कृति में ऐसी वापसी करने में देर कर दी है। मनोविज्ञान के इतिहास में जटिल, अर्थपूर्ण उद्देश्यपूर्ण एवं गत्यात्मक मनोविज्ञानिक घटनाओं की समस्याएँ वैचारिक मुद्दे रहे है। 19वीं शताब्दी के पहले सात दशकों में दार्शनिकों द्वारा जर्मनी में उभरते मनोविज्ञान के सन्दर्भ में इन घटनाओं को सक्रिय रूप से संबोधित किया गया था। इसके वाबजूद, ये सभी योगदान विलुप्त हो गए क्योंकि वे मनोविज्ञान के इतिहास से बाहर थे क्योंकि यह 1870 के बाद फिर से लिखा गया था। इसलिए, 1980 के दशक में शुरू हुआ सांस्कृतिक मनोविज्ञान आन्दोलन उस दिशा में एक और प्रयास है।

मनोविज्ञान में संस्कृति के उद्भव ने संस्कृति को तीन अलग-अलग दृष्टिकोणों से देखा - अंतःसांस्कृतिक मनोविज्ञान, सांस्कृतिक मनोविज्ञान और देशज मनोविज्ञान।

अंतःसांस्कृतिक मनोविज्ञान, सांस्कृतिक मनोविज्ञान एवं *देशज मनोविज्ञान* प्रत्येक शब्द जो आंशिक रूप से अविव्यापन सेट के साथ एक अवधारणा है। अंतःसांस्कृतिक मनोविज्ञान में संस्कृति को आमतौर पर एक पूर्वगामी चर के रूप में संचालित किया जाता है। इस प्रकार के दृष्टिकोण के विरोधाभासी उदाहरणों में संस्कृति को व्यक्तिगत रूप से और इसके अलावा बाहर देखा जाता है। संस्कृति एवं मानव गतिविधि को अलग-अलग संस्थाओं के रूप में देखा जाता है। सांस्कृतिक मनोविज्ञान में इसके विपरीत संस्कृति को व्यक्ति के बाहर नहीं, बल्कि एक महत्वपूर्ण तरीके से अन्दर देखा जाता है। *संस्कृति दुनिया को और दूसरों को जानने का एक तरीका* है बातचीत और संचार की प्रक्रियाओं के माध्यम से, इन बाधाओं से अन्तरवैयक्तिक या साझा अर्थ का एक निश्चित अंश प्राप्त होता है। साझा ज्ञान और साझा अर्थ रोजमर्रा की प्रथाओं का एक समूह उत्पन्न करते हैं जो संस्कृति को भी परिभाषित करते हैं। इस प्रकार संस्कृति एवं व्यवहार, संस्कृति और मन को अविभाज्य के रूप में देखा जाता है। अंतःसांस्कृतिक मनोविज्ञान में अक्सर उपयोग की जाने वाली विधि एक ऐसी प्रक्रिया है जो एक संस्कृति में स्थापित की गई है, ज्ञान मनोवैज्ञानिक गुणों के साथ और इसकी तुलना एक या अधिक संस्कृतियों के साथ की जाती है। सांस्कृतिक मनोविज्ञान में स्थापित प्रक्रियाओं का उपयोग करने और तुलना करने के बजाय, कार्यप्रणाली प्रक्रियाएं प्रत्येक संस्कृति के लिए उस संस्कृति के जीवन काल और संचार के तरीकों से ली जाती है। अंतःसांस्कृतिक मनोविज्ञान के विपरीत, सांस्कृतिक मनोविज्ञान संस्कृति की प्रकृति के विश्लेषण से इसकी समस्याओं और प्रक्रियाओं को प्राप्त करता है। अंतःसांस्कृतिक मनोविज्ञान में संस्कृति को एक पूर्ववर्ती या एक स्वतन्त्र चर के रूप में देखा जाता है। यह एक प्रक्रिया के बजाय एक सूचकांक के रूप में संस्कृति की जाँच करता है। ठीक इसी तरह अंतःसांस्कृतिक मनोविज्ञान व्यक्ति को एक आश्रित चर के रूप में देखता है। यह आश्रित चर आमतौर पर व्यक्तिगत सांस्कृतिक प्रक्रियाओं जैसे सांस्कृतिक गतिविधियों और सामाजिक बातचीत के सूचकांकों के रूप में कार्य करता है। व्यक्तिगत रूप से प्रक्रियाओं को देखने के रूप में नहीं देखा जाता है जैसा कि सांस्कृतिक मनोविज्ञान में पाया जा सकता है। क्योंकि सांस्कृतिक मनोविज्ञान एक विशेष संस्कृति की प्रक्रियाओं पर बल देता है, यह पूर्व से स्थापित मनोवैज्ञानिक गुणों के साथ उपायों का उपयोग नहीं करता है, जिसे अधिकांशता अंतःसांस्कृतिक मनोविज्ञान में पाया जाता है। इसके विपरीत सांस्कृतिक मनोविज्ञान ने अपनी स्वयं की विधियों की टूलकिट विकसित की है जिसमें मानवविज्ञान और बोले जाने वाली भाषा का विश्लेषण शामिल है। इन विधियों को मानवविज्ञान से अनुकूलित किया गया है।

सांस्कृतिक मनोविज्ञान में सर्वप्रथम बल दिया जाता है, संस्कृति के सांकेतिक गुणवत्ता कम से कम भावनात्मक *देशज मनोविज्ञान* के साथ साझा किया जाता है। हालांकि देशज मनोविज्ञान और सांस्कृतिक मनोविज्ञान में बहुत स्पष्ट स्वतन्त्र उत्पत्ति है, लेकिन वे इस घटना को साझा करते हैं कि अध्ययन का मुख्य विषय व्यक्ति प्रणालियों का अर्थ है, विशेष रूप से प्रणाली जो एक परिभाषित सांस्कृतिक समूह के भीतर साझा या आदर्श है। अलग-अलग तरीकों से दोनों परंपराओं ने माना है कि मनोवैज्ञानिक सिद्धांत साझा सांस्कृतिक अर्थ के महत्वपूर्ण पहलू हैं।

अभी के समय में, सांस्कृतिक मनोवैज्ञानिक **जॉन मिलर** ने सैद्धांतिक स्तर पर सभी मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त में सांस्कृतिक आधार पर बल दिया। देशज मनोविज्ञान के लिए एक स्पष्ट मेटा - सैद्धांतिक कथन नहीं तो यह सिद्धांत के सांस्कृतिक आधार का एक

मजबूत इरादा रहा है। देशज मनोविज्ञान का अनूठा योगदान यह है कि अवधारणाओं और सिद्धांत दोनों को प्रत्येक संस्कृति के अन्दर विकसित किया जाना चाहिए।

हालांकि, देशज मनोविज्ञान के विपरीत, सांस्कृतिक मनोविज्ञान की अनुभवजन्य अनुसंधान परंपरा संस्कृति - विशिष्ट मूल के साथ औपचारिक मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों पर आधारित नहीं है। सांस्कृतिक मनोविज्ञान ने पिछले कुछ वर्षों में मनोवैज्ञानिक कार्यप्रणाली के नृजाति सिद्धांतों (लोक सिद्धांतों) को विकसित करने और अनुभवजन्य जाँच के लिए एक संकाय बनाने के लिए इसका विज्ञान का लक्ष्य एक कदम आगे जाना है। देशज या स्वदेशी मनोविज्ञान का लक्ष्य मनोवैज्ञानिक कामकाज के अनौपचारिक लोक सिद्धांतों के औपचारिक रूप देता है।

चित्र 12.6 : जॉन मिलर
स्रोत :
www.newschool.edu

सांस्कृतिक मनोविज्ञान विशेष रूप से मनोवैज्ञानिक विकास के लोक सिद्धांतों सहित, लोक सिद्धांतों के अनुभवजन्य अध्ययन पर पहुँचे है। बदले में, देशज मनोविज्ञान ने आनुभविक अध्ययन के उद्देश्य से नृजाति-मनोविज्ञान को औपचारिक मनोवैज्ञानिक प्रतिमान के संसाधन में स्थानान्तरित कर दिया है। दूसरे शब्दो में, देशज मनोवैज्ञानिकों ने मनोविज्ञान के औपचारिक सिद्धांतों में नैतिकता के सिद्धांतों का अनुवाद करने के लिए और इन सिद्धांतों से अनुभवजन्य मनोवैज्ञानिक अध्ययन करने के लिए कदम उठाए हैं।

विकासशील देशों में एक उभरते हुए वैज्ञानिक अभिजात वर्ग के साथ अपनी खुद की उत्पति के कारण, विशेषरूप सें पूर्वी एशिया में, देशज मनोविज्ञान, कुल मिलाकर कुलीन आबादी को विशेषाधिकार के रूप में अध्ययन और संस्कृति के विषयों को एक शोध विषय के रूप में बदल देता है। सांस्कृतिक मनोविज्ञान, इसके विपरीत, अपेक्षाकृत स्थिर निर्वाह ग्राम संस्कृतियों पर बहुत हद तक ध्यान केन्द्रित करता है।

वहीं देशज मनोविज्ञान सांस्कृतिक मनोविज्ञान की भावना को साझा करता है, लेकिन इसके तरीके अंतःसांस्कृतिक मनोविज्ञान के समान है। इसलिए, देशज मनोविज्ञान अक्सर मानक मनोवैज्ञानिक पद्धति का उपयोग करता है जैसे प्रश्नावली और प्रक्रियाओं के बजाय चर का अध्ययन करने पर अधिक बल देता है।

बॉक्स 12.3 : अंतःसांस्कृतिक मनोविज्ञान, सांस्कृतिक मनोविज्ञान एंव देशज मनोविज्ञान : परिभाषा और उद्देश्य

अंतःसांस्कृतिक मनोविज्ञान विभिन्न संस्कृतियों और जातीय समूहों में मनोवैज्ञानिक कामकाज में समानता और अन्तर की जाँच करना है। अंतःसांस्कृतिक मनोविज्ञान का उद्देश्य एक ऐसे मनोविज्ञान का विकास करता है जो समावेशिता और सार्वभौमिकता के सम्बन्ध में अधिक है। यह विभिन्न संस्कृतियों में विचारों और व्यवहारों की तुलना करता हैं।

सांस्कृतिक मनोविज्ञान ऐतिहासिक और सामाजिक-सांस्कृतिक सन्दर्भ में व्यक्तियों को समझने के बारे में है। सांस्कृतिक मनोविज्ञान का उद्देश्य इसकी समझ विकसित करना है की विशिष्ट सन्दर्भों में मन और संस्कृति एक दूसरे को कैसे प्रभावित करते हैं,

देशज मनोविज्ञान एक विशिष्ट सांस्कृतिक सन्दर्भ में लोगों का अध्ययन है। इसे लोगों के स्थान के सन्दर्भ में विद्वानों द्वारा लागू किया जाता है। देशज मनोविज्ञान का उद्देश्य एक मनोविज्ञान का विकास है जो पूरी तरह से सार्वभौमिक नहीं है जिसका विशिष्ट संस्कृतियों और जातीय सन्दर्भों में अर्थ और अनुप्रयोग है।

12.4 नारीवाद

नारीवाद सामाजिक और राजनीतिक आन्दोलनों की एक श्रृंखला है जिसका उद्देश्य लिंगों की सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक समानता को परिभाषित और स्थापित करना है। नारीवादी आन्दोलन ने मनोविज्ञान के संकाय सहित कई क्षेत्रों में व्यापक परिवर्तन के लिए राजनीतिक और बौद्धिक गति प्रदान की है। नारीवादी जो मनोवैज्ञानिक भी थे और मनोवैज्ञानिक जो नारीवादी बने, उन्होंने इस गति का उपयोग प्रभावी रूप से एक नए क्षेत्र और एक नई संकायात्मक उपस्थिति को रोकते हुए संकाय की परिधि से अपने केन्द्र में स्थानांतरित करने के लिए किया। मनोवैज्ञानिकों ने मनोविज्ञान के लगभग हर क्षेत्र में जेंडर के बारे में सवाल किए है।

नारीवाद हमेशा महिलाओं की अधीनता को समाप्त करने पर केंद्रित रहा है और अतिरिक्त विचारों, सिद्धांतों और प्रथाओं की एक विस्तृत श्रृंखला को शामिल करता है। नारीवादी मनोवैज्ञानिकों के मध्य विचारों की विस्तृत श्रृंखला पूर्ण रूप से प्रतिनिधित्व करती है। मनोविज्ञान में नारीवादी आंदोलन की एक प्रमुख शक्ति यह है कि विविध बिन्दुओं को परस्पर सम्पर्क में लाया जाता है, जिससे उत्पादक बौद्धिक आदान-प्रदान और नए विकास होते हैं।

नारीवादी मनोवैज्ञानिक मनोविज्ञान को महिलाओं के प्रति अनुचित बर्ताव करने वाली मनोवृत्ति होने के रूप में देखते हैं; अर्थात महिलाओं को पुरुषों से नीचे माना जाता है और उनके साथ भेदभाव किया जाता है क्योंकि वे महिला है। वे मनोविज्ञान को विषमलैंगिक के रूप में भी देखते हैं, अर्थात समलैंगिक पुरुषों और समलैंगिक महिलाओं को असमान्य माना जाता है और उनके साथ भेदभाव किया जाता है क्योंकि वे समलैंगिक है। इसके अतिरिक्त नारीवादी मनोवैज्ञानिकों का दावा है कि भले ही मनोविज्ञान को एक विज्ञान माना जाता है, और इसे तटस्थ उद्देश्य और मूल्य आधारित है, पुरुषों को सार्वभौमिक मानक बनाने के लिए केन्द्रित है जिसके चारों और सब कुछ है। इस प्रकार *लिंग भेद* और विणमतावादी होने के अलावा, नारीवादी मनोवैज्ञानिक भी मनोविज्ञान की *पुरूष प्रधान* मानते है जो पुरुष केंद्रित है।

नारीवादी मनोविज्ञान महिलाओं की स्थिति में सुधार करने के लिए मनोविज्ञान की शक्ति का उपयोग करता है तथा करने का प्रयास करता है। दुनिया में व्यापक बदलाव लाने के लिए मनोविज्ञान का उपयोग करने के लिए नारीवादी मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि उन्हें मनोविज्ञान में भी बदलाव लाना होगा। इस विचार के पीछे यह विचार है कि जैसे समाज में एक अंतर्निहित जेन्डर पूर्वाग्रह है, पारंपरिक मनोविज्ञान अभी उस पूर्वग्रह को दर्शाता है, भले ही वह सूक्ष्म और अन्तर्निहित तरीके से हो। नारीवादी मनोविज्ञान स्पष्ट रूप से नारीवादी आन्दोलन द्वारा राजनीतिक एवं पोषित है।

नारीवादी मनोवैज्ञानिक एक शोधकर्त्ता, व्यवसायी, अध्यापक या कार्यकर्त्ता होने के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण संवाद में संलग्न है कि कैसे लिंग का अध्ययन एवं कैसे मनोविज्ञान का उत्तम अध्ययन किया जाए। नारीवादी मनोविज्ञान के पारंपरिक दृष्टिकोण के अपने संदेहवाद के लिए जाना जाता है। नारीवादियों ने उल्लेख किया है कि मनोवैज्ञानिक ज्ञान ने अधिकतर सामाजिक समूहों के हितों की सेवा की है जिसका मनोवैज्ञानिक हिस्सा हैं। उन्होंने उन बौद्धिक आदतों का भी विश्लेषण किया है जिन्होंने

मनोवैज्ञानिकों को रखकर महिलाओं के बारे में ज्ञान को हाशिये पर ले जाने और जेन्डर के बारे सवालों को सबको कम महत्व के रूप में माना है।

नारीवादी मनोविज्ञान का क्षेत्र अधिकारिक तौर पर 1960 के दशक के अन्त और 1970 के दशक की शुरुआत में स्थापित किया गया था। हालांकि महिलाओं द्वारा विपरीत मनोवृत्ति जैसी बाधाओं को तोड़ने और मनोविज्ञान में लिंग विपरीत मनोवृत्ति जैसी धारणाओं को कम करने के प्रयास बहुत पहले शुरू हो चुके थे। मनोविज्ञान में नारीवादी आन्दोलन वास्तव में इसके स्वयं के संकाय की शुरुआत वास्तव में इसके स्वयं के संकाय की शुरुआत से ही शुरू हुआ था। जब 1800 के दशक के उत्तरार्ध में मनोविज्ञान का संकाय स्थापित किया गया था, तो पहली लहर नारीवाद का लम्बा प्रक्षेपवक्र अपने मध्य बिन्दु के करीब था।

जैसा कि नारीवादी आंदोलन बढ़ रहा था, नारीवादी मनोवैज्ञानिकों ने अपने चुने हुए संकाय के अन्दर यह मांग करते हुए लड़ाई लड़ी कि प्रभुत्ववादी सिद्धान्तों को स्वीकार और सुधार किया जाए और लिंग के विपरीत मनोवृत्ति जैसी संस्थागत प्रथाओं को समाप्त किया जाए। इन मनोवैज्ञानिकों में से एक **नियोमी वेइस्टीन**, एक उत्साही, समाजवादी, नारीवादी और शिकागो महिला मुक्ति संघ के संस्थापकों में से एक थीं।

चित्र 12.7 : नियोमी वेइस्टीन (1939–2015)
स्रोत : www.wcwonline.org

वेइस्टीन अपने स्नातक अध्ययन के दौरान खुद लिंग विपरीत मनोवृत्ति का शिकार हो गयी थीं। इन अनुभवों ने उसे महत्वपूर्ण सिद्धांत के बारे में जागरूक किया और उसकी नारवादी सोच को बढ़ाया। 1968 में उन्होंने *किडर, किरके, कुचे नामक साइंटिफिक लॉ : साइकोलॉजी कन्स्ट्रक्टन्स द फीमेल* नाम से एक शोध पत्र प्रकाशित किया, शोध पत्र में उन्होंने सामाजिक संदर्भ को देखे बिना जीव विज्ञान पर अधिक निर्भरता के कारण महिलाओं को समझने में विफल रहने के लिए मनोविज्ञान के क्षेत्र की आलोचना की। इस शोध पत्र ने जेन्डर के सामाजिक निर्माण के लिए आधार तैयार किया और नारीवादी मनोविज्ञान के संस्थापक दस्तावेजों में से एक बन गया।

उनके ऐतिहासिक शोध पत्र *किंडर, किरके, कुचे एज साइंटिफिक लॉ : साइकोलॉजी कन्ट्ररक्शन द फीमेल,* में वेइस्टीन ने तर्क दिया कि मनोविज्ञान के पास यह कहने के लिए कुछ भी नहीं था कि महिलाएं वास्तव में क्या पसंद करती थीं क्योंकि अनिवार्य रूप से मनोविज्ञान को इसके बारे में कोई जानकारी नहीं थी। उन्होंने प्रस्तावित किए कि यह आन्तरिक लक्षणों पर मनोवैज्ञानिकों के ध्यान केन्द्रित करने और इस प्रकार सामाजिक सन्दर्भ की अनदेखी के कारण था। वोइस्टीन ने सामाजिक मनोविज्ञान अनुसंधान के एक बढ़ते निकाय की महत्वपूर्ण सूचना दी जिसमें प्रदर्शित किया गया कि स्थितिजन्य और पारस्परिक कारक मानव व्यवहार को कैसे निर्धारित करते हैं और महिलाओं के व्यवहार को कैसे प्रदर्शित करते है। वेइस्टीन के लिए महिलाओं के बारे में सामाजिक अपेक्षाओं और उन सामाजिक परिस्थितियों पर विचार किए बिना जिनके तहत महिलाएं रहती थीं, मनोवैज्ञानिकों के पास महिलाओं के अनुभवों के बारे में कहने के लिए कुछ भी मूल्य नहीं थे।

1969 में महिलाओं के आन्दोलन को बढ़ावा देने और नियोमी वेइस्टीन जैसे मनोवैज्ञानिकों के अग्रणी प्रयासों के कारण, महिला मनोवैज्ञानिकों ने अमेरिकन साइकोलाजिकल एसोसिएशन के वार्षिक सम्मेलन में इस क्षेत्र के अन्दर लिंग विपरीत मनोवृत्ति प्रथाओं पर चर्चा की। इन प्रथाओं में नौकरी के विज्ञापन शामिल थे जो यह दर्शाते है कि ''केवल पुरुष'' आवेदन करने और यौन उत्पीड़न को उजागर करने की

आवश्यकता है। इस तरह के गुस्से और गरमागरम चर्चा के परिणाम ने 1969 में एसोसिएशन फॉर वूमेन इन साइकोलॉजी (AWP) का गठन किया।

1973 में, अमेरिकन साइकोलाजी एसोसिएशन द्वारा स्थापित एक कार्यकारी बल ने पाया कि महिलाओं के बारे में ज्ञान की कमी थी। अधिकांश मनोवैज्ञानिक शोध, उस समय से इस क्षेत्र में प्रकाशित होने के साथ श्वेत, कॉलेज आयु वर्ग के पुरुषों के साथ आयोजित किए गए थे, इस धारणा के साथ कि इन परिणामों को सार्वभौमिक मानव अनुभव के लिए सामान्यीकृत किया जा सकता है। गर्भावस्था, बच्चे का पालन-पोषण, मासिक धर्म, यौन उत्पीड़न और बलात्कार जैसी महिलाओं के अनुभवों पर अनुसंधान पूर्णरूपेण अनुपस्थित था। नतीजन कार्यकारी बल ने सिफारिश की कि इस क्षेत्र में अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए महिलाओं के मनोविज्ञान को समर्पित प्रभाव स्थापित किया जाए। 1973 में डिवीजन 35, *महिला का मनोविज्ञान*, प्रभाग स्थापित हुआ। इस प्रभाग की प्रथम अध्यक्ष मिशिगन विश्वविद्यालय की सामाजिक मनोवैज्ञानिक ***एलिजाबेथ डोवन*** थी। यह प्रभाव अब अमेरिकन साइकोलाजी एसोसिएशन के सबसे बड़े प्रभाग में से एक बन गया है।

वर्षों से, नारीवादी मनोवैज्ञानिक ने अपना ध्यान आलोचना से हटाकर महिलाओं और जेन्डर के बारे में नए ज्ञान के निर्माण की ओर लगाया। महिलाओं और जेंडर का मनोविज्ञान अब एक विविध उद्यम है जो मनोविज्ञान के अन्दर लगभग प्रत्येक विशेषता क्षेत्र और बौद्धिक ढ़ांचे को शामिल करता है। यह अन्तर्राष्ट्रीय सीमाओं तक फैला है और इसने अनुसंधान एवं शोधवृत्ति के एक संस्था का निर्माण किया है।

मनोविज्ञान में नारीवादियों ने मनोविज्ञान में अनुसंधान विषयों की पसंद को खुले तौर पर चुनौती दी है। उन्होंने इसके सैद्धांतिक निर्माण और अनुसंधान विधियों और महिलाओं के मानसिक स्वास्थ्य, निदान के तरीकों और चिकित्सीय ध्यान के बारे में अपने सिद्धांतों में दोष पाया। नारीवादी दृष्टिकोण के अनुसार मनोवैज्ञानिक ज्ञान के कई पहलू पुरुष केन्द्रित रहे हैं। नारीवादी मनोवैज्ञानिकों ने सुझाव दिया कि पूरे इतिहास में पुरुषों को महिलाओं की तुलना में अधिक बार अध्ययन में शामिल किया गया है। उन्होंने मरे और आलॅपोर्ट द्वारा व्यक्तित्व के शास्त्रीय अध्ययन के उदाहरण पेश किए, साथ ही उपलब्धि प्रेरणा पर मैक्लेलैण्ड के ऐतिहासिक अध्ययन, जिनमें से सभी ने महिलाओं को बाहर रखा था। इसके अलावा, अनुभूति, सामाजिक व्यवहार, संवेग और प्रेरणा के कई पहलूओं के बारे में मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त महिलाओं के खिलाफ सांस्कृतिक पूर्वाग्रह से प्रभावित है। महिलाओं के व्यवहार, पुरुषों की तुलना में अधिकतर जैविक रूप से निर्धारित किए गए हैं, शोधकर्त्ताओं से महिलाओं और पुरुषों की विभिन्न सामाजिक स्थितियों की अनदेखी की है।

शुरुआत में मनोवैज्ञानिक संज्ञानात्मक क्षमताओं, संवेगों, व्यक्तित्व शीलगुणों, मूल्यों एवं रुचि में पुरुषों और महिलाओं के बीच गहरा अन्तर मान चुके थे। इन अनुमानों ने पुरूष श्रेष्ठता के आदर्श का समर्थन किया और पुरुषों और महिलाओं के बीच कई प्रकार की असमानताओं को उचित ठहराया। नारीवादी मनोवैज्ञानिकों की पहली परियोजनाओं में से एक जो थी वो सुधारात्मक अनुसंधान का एक कार्यक्रम था जिसका उद्देश्य पुरुषों एवं महिलाओं के मध्य कथित अन्तर की पुनः जाँच करना था इसमें लिंग के अन्तर को देखने के तरीकों में बदलाव आया। वर्षों से लिंग भेद के शोधों में कई महत्वपूर्ण कार्यप्रणाली और वैचारिक प्रगति हुई है। नारीवादी शोधकर्ताओं ने बार-बार ध्यान दिलाया है कि लिंग भेद का पता लगाना एक अन्तर को इंगित नहीं

करता है जो अन्तर्निहित या जैविक रूप से निर्धारित है। नारीवादी शोध के एक बड़े हिस्से ने भूमिकाओं की शक्ति, मानदंडों और व्यवहार को प्रभावित करने वाली प्रणाली की जाँच की है, साथ ही भूमिका के उल्लंघन के लिए दण्ड भी लगाया है।

मनोविज्ञान में पुरुषत्व और स्त्रीत्व के मापन की अवधारणा को नारीवादी मनोवैज्ञानिकों ने चुनौती दी थी। 1973 में नारीवादी मनावैज्ञानिकों, **ऐने कांस्टेंटिनोपल** ने बताया कि मानक मनोवैज्ञानिक आविष्कारों का निर्माण एकल, द्विध्रुवीय सातत्य के विपरीत छोरों के रूप में पुरुषत्व और स्त्रीत्व के साथ किया गया था। उन परीक्षणों के अनुसार पुरुषत्व एवं स्त्रीत्व को परस्पर विशेष माना जाता है। कॉस्टेटिनोपन ने इस धारणा के विरुद्ध तर्क दिया। उसने बल दिया कि एक व्यक्ति पुरुषत्व और स्त्री दोनों के लक्षणों और व्यवहारों को अपना सकता है।

चित्र 12.8 : सेण्ड्रा रूथ लिपसिज बेम (1944–2014)
स्रोत : www.feministvoices.com

सामाजिक मनोवैज्ञानिक **सैण्ड्रा बेम** ने 1974 में तर्क दिया कि इष्टतम मनोवैज्ञानिक कार्यप्रणाली और व्यक्तिगत समायोजन के लिए पुरुषत्व और स्त्रीत्व दोनों गुणों का होना आवश्यक है। इस प्रकार वह एक उभयलिंगी लिंग-भूमिका पहचान को अपनाने का सुझाव दे रही थी। बेम ने बेम लिंग-भूमिका इन्वेंट्री, पुरुषत्व एवं स्त्रीत्व के एक पैमाने का निर्माण किया, जिसने उत्तरदाताओं को पुरुषत्व एवं स्त्रीत्व दोनों विशेषताओं का समर्थन करने की अनुमति दी। अगले आने वाले वर्षों के लिए, बेम के विचारों और उसकी इन्वेन्ट्री ने नारीवादी अनुसंधान और नारीवादी दृष्टिकोण को चिकित्सा के लिए तैयार किया। इस समय के दौरान कार्य ने जेन्डर पहचान पर बाद के सिद्धान्तों के लिए नींव रखी गई।

1980 के दशक की शुरुआत में, नारीवादी जाँच की एक नई पंक्ति उभरी। पुरुषों एवं महिलाओं के बीच तुलना करने के बजाय, कुछ शोधकत्ताओं ने अपना ध्यान महिलाओं की अनुँठी संवेगात्मक क्षमताओं, पहचान और संबंधपरक जरूरतों पर केन्द्रित किया। इस प्रकार महिलाओं को अनुसंधान के केन्द्र में रखा गया, जिसने शोधकत्ताओं को उन स्त्री संबंधी गुणों की पुनः जाँच एवं मूल्यांकन करने के लिए तैयार किया, जिन्हें नजरअंदाज, तिरस्कार कर दिया गया था तथा जिन्हें अपरिपक्वता की कमी या संकेत के रूप में देखा गया था।

नारीवादियों की शुरुआती आलोचना के जवाब में, सांस्कृतिक पूर्वाग्रहों के सम्बन्ध में सामाजिक सन्दर्भों की अनदेखी, निदान एवं नैदानिक अभ्यास में लिंगवाद और चिकित्सा में शक्ति अन्तर नारीवादी मनोवैज्ञानिकों ने वैकल्पिक सिद्धान्तों को विकसित किया और नवीन अनुसंधान किए है। उन्होंने नारीवादी-प्रेरित चिकित्सा और नैदानिक मनोवैज्ञानिकों ने भी महिला चिकित्सकों के लिए काम की स्थिति में सुधार करने के लिए कार्य किया है। उन्होंने चिकित्सीय मरीजों के अधिकारों की बात की है और मरीजों के लिए बेहतर सुरक्षा प्रदान करने के लिए एपीए (अमेरिकन साइकोलाजिकल एसोसिएशन) नैतिक कोड में परिवर्तन को बढ़ावा दिया है।

बाक्स 12.4 : नारीवादी मनोविज्ञान और जेन्डर की संकल्पना

1979 में, नारीवादी मनोवैज्ञानिक **रोडा अंगर** ने मनोविज्ञान में *जेन्डर* शब्द को प्रस्तावित किया। उन्होंने परिभाषित किया कि जेन्डर उन लक्षणों एवं शीलगुणों के रूप में होता है जिसे सामाजिक-सांस्कृतिक रूप से पुरुष एवं महिलाओं के लिए उपयुक्त माना गया है। इस पद का उद्देश्य जैविक कार्यप्रणाली के बजाय *पुरुषत्व* एवं *स्त्रीत्व* का सामाजिक पहलू निर्धारित करना था, इसलिए इसे वैज्ञानिक रूप से जाँचा जा

सका। अगर द्वारा यह परिभाषा उस समय में महत्वपूर्ण मानी जाती थी। हालांकि, आज के समय में अंगर की जेन्डर की परिभाषा उन कई परिभाषाओं में से एक है जिसका उपयोग किया जाता है। कुछ ने जेन्डर की परिभाषा को सामाजिक रूप से निर्धारित संबंधों के रूप में लिंग के दृष्टिकोण के पक्ष में व्यक्तियों के शीलगुणों के एक बंडल के रूप में अलग रखने के लिए तर्क दिया है।

नारीवादी सिद्धान्तकारों ने जेन्डर की अवधारणा दी है जो केवल व्यक्तिगत मतभेदों के परिप्रेक्ष्य से परे है। जेन्डर को सिद्धांतों के एक जटिल समूह के रूप में देखा गया है– एक अर्थ प्रणाली जो एक विशेष सामाजिक समूह या संस्कृति में पुरुष-महिला सम्बन्धों को व्यवस्थित करता है। जेन्डर को स्थिति, पदानुक्रम और सामाजिक शक्ति के एक संकेत के रूप में भी देखा गया है। अन्य नारीवादी सिद्धान्तकारों ने लिंग को प्रथाओं के एक बंडल के रूप में परिभाषित किया है जो सांसारिक सामाजिक सन्दर्भों और सामाजिक संख्याओं जैसे भाषा एवं नियम में पुरुषत्व एवं स्त्रीत्व का निर्माण करते है।

12.5 सकारात्मक मनोविज्ञान

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद, मनोविज्ञान के संकाय ने चिकित्सा की ओर ध्यान आकर्षित किया। इसने क्षति की मरम्मत पर ध्यान केन्द्रित किया, तथा मानव कामकाज के रोग प्रतिमान पर बल दिया। रोग-निदान पर यह लगभग विशेष ध्यान एक पूर्ण व्यक्ति और एक सम्पन्न समुदाय के विचारों की उपेक्षा करता है। इसका परिणाम यह हुआ कि शारीरिक शक्ति का विचार जिसे चिकित्सा में अत्यधिक प्रभावी माना जाता है, को पूर्ण रूप से नजरअंदाज कर दिया गया। इस निर्धारण में से मनोविज्ञान उभरता है। सकारात्मक मनोविज्ञान का उद्देश्य जीवन में सबसे अच्छे गुणों को विकसित करने के लिए जीवन में केवल खराब चीजों की मरम्मत के साथ एक व्यवस्तता से मनोविज्ञान में तेजी से बदलाव लाना है। पिछले असुंतलन की भरपाई के लिए मनोवैज्ञानिकों ने सुझाव दिया हैं कि मानसिक बीमारी के उपचार और रोकथाम में शक्ति का विकास उत्तम तरीके से होना चाहिए। व्यक्तिगत स्तर पर सकारात्मक मनोविज्ञान का क्षेत्र सकारात्मक व्यक्तिपरक अनुभवों के बारे में है। उसमें भलाई, संतुष्टि प्रवाह, आनंद एवं खुशी के अनुभव शामिल हैं। इसमें भविष्य के बारे में रचनात्मक अनुभूति होना शामिल है, यह आशा और आशावाद है।

सकारात्मक मनोविज्ञान एक संकाय के रूप में व्यक्तिगत और सामूहिक दोनों स्तरों पर देखा जा सकता है। व्यक्तिगत स्तर पर सकारात्मक मनोविज्ञान सकारात्मक, व्यक्तिगत शीलगुणों पर बल देता है। इसमें प्रेम, साहस, पारस्परिक कौशल, सौन्दर्य संवेदना, दृढ़ता, क्षमा, मौलिकता, भविष्य की मानसिकता, उच्च प्रतिभा और ज्ञान की क्षमता शामिल है। समूह स्तर पर सकारात्मक मनोविज्ञान नागरिक गुणों और संस्थानों पर केन्द्रित है जो व्यक्तियों को एक बेहतर नागरिक बनने की ओर अग्रसर करता है जिसमें जिम्मेदारी, पोषण, परोपकारिता, नागरिकता, संयम, सहिष्णुता और नैतिकता शामिल है।

इस प्रकार सकारात्मक मनोविज्ञान को व्यक्ति के सकारात्मक अनुभवों के सकारात्मक पहलुओं और सकारात्मक व्यक्तिगत लक्षणों एवं सकारात्मक संस्थानों के वैज्ञानिक अध्ययन के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। जैसे यह जीवन की गुणवत्ता में

सुधार करने का विचार करता है और जीवन को अनुपयुक्त और अर्थहीन प्रतीत होने वाली विभिन्न विकृतियों को भी रोकता है।

यह विचार कि मनोवैज्ञानिकों को सर्वोत्तम मानवीय विशेषताओं के साथ-साथ सबसे खराब, अर्थात सकारात्मक विशेषताओं के साथ-साथ नकारात्मक का भी अध्ययन करना चाहिए जो वास्तव में मानववादी मनोविज्ञान का विषय था। हालांकि यह 1998 में अमेरिकन साइकोलाजिकल एसोसिएशन के तत्कालीन अध्यक्ष **मार्टिन सेलिगमैन** द्वारा निरस्त कर दिया गया था। सेलिगमैन ने सुझाव दिया कि मानव व्यवहार के नकारात्मक पहलुओं पर निरंतर ध्यान केंद्रित करने से मनोविज्ञान संकाय के विकास, महारत, प्रणोद एवं अंतदृष्टि जैसे कई सकारात्मक पहलुओं को अनदेखा कर दिया है जो अंवाछित पीड़ाकारक जीवन घटनाओं से विकसित होते हैं। सेलिगमैन का लक्ष्य मनोवैज्ञानिकों को मानव स्वभाव ओर मानव क्षमता के बारे में अधिका सकारात्मक संकल्पना विकसित करने के लिए राजी करना था, जो मैस्लो एवं रोजर्स के प्रसिद्ध कामों पर बनी थी।

सेलिगमैन ने मानव प्रकृति की अधिक सकारात्मक अवधारणा और सकारात्मक मनोविज्ञान के रूप में मानव क्षमता पर अधिक बल दिया, जिसे अत्यधिक प्रसंशनीय प्रतिक्रिया मिली। वर्ष 2021 तक सहसम्बन्धों और प्रसन्नता (खुशी) और अन्य सकारात्मक संवेगों के कारणों से निपटने के लिए व्यक्तिपरक उन्नति के लिए कई अध्ययन किये गये।

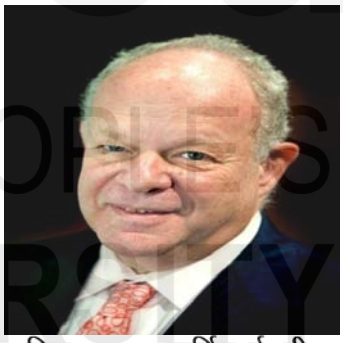

चित्र 12.9 : मार्टिन ई. पी. सेलिगमैन
स्रोत : www.britannica.com

सेलिगमैन ने सकारात्मक मनोविज्ञान के लिए अपना प्रारम्भिक प्रयास जारी करने के बाद से दस वर्षों से भी कम समय में, यह क्षेत्र बेहद सफल हो गया। प्रत्येक वर्ष बड़ी संख्या में शोध हुए, संगोष्ठियों हुई किताबों का प्रकाशन हुआ, सभी ने मानव सामर्थ्य शक्ति एवं व्यवहार के अन्य सकारात्मक पहलुओं पर बल दिया। यहाँ तक कि प्रसिद्ध पत्रिका और टेलीविजन, परिचर्चा प्रोग्रोमों ने भी मनोविज्ञान के सकारात्मक उद्देश्य की तारीफ की है। हाल के मॉडल में, सकारात्मक मनोविज्ञान ने सामान्यतः संस्थाओं के सन्दर्भ में बड़ी सीमा तक समस्याओं को सम्मिलित किया है जिनमें व्यक्तिपरक हित प्रसन्नता, जीवन संतोष आशावादी, आशा सिद्धांत और सकारात्मक मनोविज्ञान शामिल है।

जैसा कि किसी अन्य प्रगति के अनुसार सकारात्मक मनोविज्ञान का उदय अचानक नहीं हुआ। यह कहना अनुचित होगा कि सकारात्मक मनोविज्ञान 1998/1999 में आरम्भ हुआ। यह वास्तव में सुझाया गया कि सकारात्मक मनोविज्ञान हमेशा मनोविज्ञान के संकाय में व्याप्त रहा है। लेकिन यह कभी भी ज्ञान के समग्र और एकीकृत निकाय के रूप में नहीं देखा गया है। अब जिसे सकारात्मक मनोविज्ञान कहा जाता है उस पर शोध दशकों से हो रहा है। मौटे तौर पर सकारात्मक मनोविज्ञान में मानवतावादी मनोविज्ञान के साथ बहुत सी समानताएं हैं। पूर्ण रूप से कार्य कर रहे व्यक्ति और मनोवैज्ञानिक रूप से स्वस्थ व्यक्तियों के अध्ययन पर विशेष रूप से मानवतावादी मनोविज्ञान के बल के साथ बहुत सी समानताएं पाई जा सकती हैं।

चित्र 12.10 : अब्राहम मैस्लो (1907–1980)
स्रोत :
www.verywellmind.com

अब्राहम मैस्लो, मानवतावादी मनोविज्ञान के अग्रदूतों में से एक है, पचास वर्ष से अधिक समय पहले कहा गया था कि मनोविज्ञान सकारात्मक पहलुओं की तुलना में मानव प्रकृति के नकारात्मक पहलुओं पर बहुत अधिक ध्यान केन्द्रित कर रहा है। उन्होंने आगे कहा कि मनोविज्ञान ने मानव प्रकृति की कई कमियों के बारे में बहुत कुछ बताया है लेकिन क्षमता, गुण, आकांक्षाओं या पूर्ण मनोवैज्ञानिक उन्नति के संदर्भ में बहुत कम जानकारी हासिल हो सकी है। मैस्लो ने *सकारात्मक मनोविज्ञान* शब्द का उल्लेख भी किया था जो सेलिगमैन से बहुत पहले था। ऐसा करने में वह वितरण के अत्यन्त सकारात्मक छोरों पर लोगों पर विशेष ध्यान केन्द्रित करने का सुझाव दे रहा था।

बॉक्स 12.5: प्रसन्नता

सकारात्मक मनोविज्ञान में *प्रसन्नता* का अध्ययन केन्द्रीय विषय है। दार्शनिकों ने हजारों वर्ष से प्रसन्नता की परिभाषा पर बहस की है लेकिन उचित समाधान न निकाल सके। **अरस्तु** ने प्रसन्नता को किसी की क्षमता का एहसास बताया, और इसे जीवन के महत्वपूर्ण घटक के रूप में संदर्भित किया है। दूसरी ओर **वेन्थम** ने सुझाया कि प्रसन्नता आनंद की उपस्थिति एवं दर्द की अनुपस्थिति है।

समकालीन सिद्धान्तकारों ने सुझाव दिया कि जीवन की कई विशिष्ट परिस्थितियों का समाधान होने पर या पूरा होने पर प्रसन्नता का उदय होता है। उनमें आत्म-स्वीकृति, पर्यावरणीय महारत, व्यक्तिगत विकास और सम्बन्धितता शामिल हो सकती है। हालाँकि दूसरों का सुझाव है कि प्रसन्नता आनन्द एवं दर्द का औसत अनुभव हैं।

प्रसन्नता एवं व्यक्तिपरक कल्याण शब्द विनिमेय हैं किसी व्यक्ति के जीवन का व्यक्तिपरक मूल्यांकन का। इसे किसी के जीवन के साथ संतोष की अपेक्षाकृत स्थिर भावना कहा जाता है। इसमें संज्ञानात्मक मूल्यांकन और सकारात्मक प्रभाव शामिल है जो जीवन की संतुष्टि, संबंध गुणवत्ता, अर्थ और उपलब्धियों पर बल देता है। प्रसन्नता का यह पहलू प्रसन्नता के पदानुक्रम के उच्चतम स्तर का प्रतिनिधित्व करता है।

पदानुक्रम के अगले स्तर में चार घटक-सुखद संवेग, अप्रिय संवेग, जीवन संतुष्टि और प्रभुत्व संतुष्टि शामिल है। इनमें से प्रत्येक को प्रेम, चिन्ता, अर्थ और स्वास्थ्य जैसे जीवन के अनुभवों के विशिष्ट पहलुओं में विभाजित किया जा सकता है। इसके पश्चात पदानुक्रम का अगला स्तर प्रसन्नता का चेतन अनुभव है।

शोधकर्त्ताओं ने यूडेमोनिक और हेडोनिक प्रसन्नता के बीच अन्तर भी किया है। *यूडेमोनिक* प्रसन्नता अर्थ एवं उद्देश्य के बारे में है जो उन गतिविधियों में भाग लेती है जो किसी कौशल, प्रतिभा और क्षमता के वास्तवीकरण की अनुमति देती है। *हेडोनिक* प्रसन्नता सकारात्मक प्रभाव की उच्च आवृत्तियों, नकारात्मक प्रभाव की कम आवृत्तियों और संतुष्टि के रूप में जीवन का मूल्यांकन करने के बारे में है।

अपनी प्रगति की जाँच कीजिए 2

1) देशज मनोविज्ञान किस प्रकार से अंतःसांस्कृतिक मनोविज्ञान और सांस्कृतिक मनोविज्ञान दोनों के समान हो सकता है?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) मनोविज्ञान के नारीवादी आन्दोलन में नियोमी वेइस्टीन के योगदानों पर चर्चा कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

3) सकारात्मक मनोविज्ञान में शामिल मुख्य मुद्दे क्या हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

12.6 सारांश

अब जब हम इस इकाई के अन्त में आ गये हैं तो आइये हम उन सभी प्रमुख बिन्दुओं को सूचीबद्ध करते हैं जो हमने सीखे हैं :

- 20वीं शताब्दी के मध्य में और 21वीं सदी में आगे बढ़ने के बाद यह बहुत स्पष्ट था कि मनोविज्ञान का संकाय एक परिवर्तनकाल से गुजर रहा था। मनोविज्ञान में वर्तमान विचारधाराएं भी महत्वपूर्ण विशेषज्ञता के बजाय अन्तर एवं बहु-विषयक अध्ययन की ओर अग्रसर है।
- संज्ञानात्मक मनोविज्ञान भावनाओं, प्रत्यक्षण, इमेजिंग, स्मृति, समस्या समाधान, चिंतन और अन्य सभी मानसिक गतिविधियों पर केन्द्रित है। दो विद्वान जिन्होंने संज्ञानात्मक मनोविज्ञान के विकास में योगदान दिया वे जॉर्ज मिलर एंव यूलिक निस्सर हैं।
- विज्ञान के दार्शनिकों ने सुझाव दिया कि सैद्धान्तिक मान्यताओं के साथ परीक्षणों को अनुमति दी जाती है। जो भी अवलोकन किए जाते हैं वे पूर्ण सिद्धांत के आधार पर उस वस्तु के लिए जिम्मेदार अर्थ से प्रभावित होते है। इस विचार को *लेडनेस सिद्धांत* के रूप में संदर्भित किया जाता है।

- मनोविज्ञान में सामाजिक रचनावाद के प्रमुख समर्थकों में से एक सामाजिक मनोवैज्ञानिक केन गेर्गन थे। गेर्गन के अनुसार, एक सामाजिक रचनावादी जाँच मुख्य रूप से उन प्रक्रियाओं को स्पष्ट करने से सम्बन्धित है जिनके द्वारा लोग दुनिया के लिए वर्णन करते हैं, समझाते हैं या अन्यथा अनुमान लगाते हैं (उनके शामिल होना) जिसमें वे रहते हैं।

- सामाजिक रचनावाद के सम्बन्ध में आधुनिक सामाजिक विज्ञान के तीन सबसे प्रमुख संस्थापक – इमाइल दुर्खीम, मैक्स वेबर और कार्ल मार्क्स ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उन्होंने सामाजिक रचनावाद सामाजिक विज्ञान के लिए प्रमुख मिसाल कायम की है।

- मनोविज्ञान में संस्कृति के उदभव ने संस्कृति को तीन अलग-अलग दृष्टिकोणों से देखा – अंतःसांस्कृतिक मनोविज्ञान, सांस्कृतिक मनोविज्ञान और देशज मनोविज्ञान।

- अंतःसांस्कृतिक मनोविज्ञान में, संस्कृति को आमतौर पर एक पूर्वगामी चर के रूप में संचालित किया जाता है। इस प्रकार के दृष्टिकोण के विरोधाभासी उदाहरणों में संस्कृति को व्यक्तिगत रूप से और इसके अलावा बाहर देखा जाता है। सांस्कृतिक मनोविज्ञान में इसके विपरीत संस्कृति को व्यक्ति के बाहर नहीं, बल्कि एक महत्वपूर्ण तरीके से अन्दर देखा जाता है।

- नारीवाद सामाजिक और राजनीतिक आन्दोलनों की एक श्रृंखला है जिसका उद्देश्य लिंगों की सामाजिक आर्थिक और राजनीतिक समानता को परिभाषित करना और स्थापित करना है। नारीवादी मनोवैज्ञानिक मनोविज्ञान को लिंग के प्रति असमानता, विपरीत जेन्डर का होना एवं पुरुष प्रभुत्ववादी मानते है।

- नारीवादी मनोविज्ञान महिलाओं की स्थिति में सुधार करने के लिए मनोविज्ञान की सामर्थ्य का उपयोग करने का प्रयास करता है। नारीवादी मनोवैज्ञानिक एक शोधकर्त्ता, अभ्यासी, शिक्षक या कार्यकर्त्ता होने के साथ महत्वपूर्ण वार्तालापों में संलिप्त रहते हैं कि कैसे जेन्डर का अध्ययन किया जाए एवं मनोविज्ञान के लिए कैसे बेहतर बनाया जाये। मनोविज्ञान के पारंपरिक तरीकों के बारे में संदेह नारीवादी मनोविज्ञान की पहचान है।

- 1968 में नियोमी वेइस्टीन ने एक शोधपत्र प्रकाशित किया जिसे *किंडर, कुचे एच साइंटिफिक लॉ : साइकोलॉजी कंस्ट्रक्टस द फीमेल* कहा गया। इस शोधपत्र ने जेन्डर के सामाजिक निर्माण के लिए आधार तैयार किया और नारीवादी मनोविज्ञान के संस्थापकों के लिए एक दस्तावेज बन गया।

- 1973 में डिवीजन 35 *साइकोलॉजी ऑफ विमेन* बनाया गया था। इस प्रभाग के प्रथम अध्यक्ष मिशीगन विश्वविद्यालय के सामाजिक मनोवैज्ञानिक ऐलिजाबेथ डोवन थी। यह प्रभाग अमेरिकन साइकोलाजी एसोसिएशन के प्रथाओं में से एक सबसे बड़ा प्रभाग बन चुका है।

- सामाजिक मनोवैज्ञानिक सैण्ड्रा बेम ने 1974 में तर्क दिया कि इष्टतम मनोवैज्ञानिक कामकाज और व्यक्तिगत समायोजन के लिए पुरुषत्व और स्त्रीत्व दोनों के गुण होना आवश्यक है। वह इस प्रकार एक उभयलिंगी लिंग – भूमिका पहचान को अपनाने का सुझाव दे रही थीं।

- व्यक्तिगत स्तर पर सकारात्मक मनोविज्ञान का क्षेत्र सकारात्मक व्यक्तिपरक अनुभव के बारे में है। इसमें कल्याण, संतुष्टि, प्रवाह, आनन्द और प्रसन्नता के

अनुभव शामिल है। इसमें भविष्य के बारे में रचनात्मक अनुभूति होना भी शामिल है, यह आशा और आशावाद है।

- मार्टिन सेलिगमैन ने सुझाव दिया कि मानव व्यवहार के नकारात्मक पहलुओं पर एक निरंतर ध्यान केन्द्रित ने मनोविज्ञान संकाय को कई सकारात्मक पहलुओं जैसे कि विकास, महारत, प्रणोद और अंतर्दृष्टि को अनदेखा करने के लिए बनाया है जो वांछनीय, दुखपूर्ण जीवन की घटनाओं से बाहर निकलते हैं।

12.7 मुख्य शब्द

संज्ञानात्मक क्रांति : व्यवहारवाद के प्रभुत्व से नाटकीय बदलाव, मानसिक विचारों की पुनः परीक्षा के लिए जिसने संज्ञानात्मक मनोविज्ञान की है।

संज्ञान : प्रक्रियाएं जिससे संवेदी इनपुट परिवर्तित, कम, श्रम साध्य, संग्रहीत, पुनः प्राप्त और उपयोग किया जाता है।

संज्ञानात्मक मनोविज्ञान : मनोविज्ञान का उपक्षेत्र जो भावनाओं, प्रत्यक्षण, इमेजिंग, स्मृति, समस्या समाधान, चिंतन करने और अन्य सभी मानसिक गतिविधियों पर केन्द्रित है।

कम्प्यूटर रूपक : इसका उपयोग संज्ञानात्मक घटनाओं को समझाने के तरीके के रूप में किया जाता है। कम्प्यूटर को संज्ञानात्मक मनोविज्ञान के लिए एक प्रतिमान के रूप में उपयोग किया जा रहा है।

अचेतन संज्ञान : मानसिक प्रक्रियाएं जो चेतन जागरूकता से परे होती है जिन्हें अचेतन भी कहा जाता है। जो फ्रायडियन अचेतन से भिन्न है, जो प्रकृति में संवेगात्मक है। अचेतन में तार्किक प्रक्रियाएँ शामिल होती हैं।

लेडनेस सिद्धांत : निरीक्षण जिन्हें सैद्धांतिक मान्यताओं के साथ अनुमति प्रदान की गई। जो कुछ भी निरीक्षण होते हैं, वे पूर्व सिद्धान्त के आधार पर उस वस्तु के लिए जिम्मेदार अर्थ से प्रभावित होते है।

सामाजिक रचनावाद : ज्ञानमीमांसीय परिस्थिति जो भाषा निर्माण के ज्ञान की सत्यता बताता है एवं संस्कृति और समाज की थी, जिसका कोई उद्देश्य या सार्वभौमिकता नहीं है। तदनुसार घटनाओं का निरीक्षण और व्याख्या अन्य लोगों के साथ भाषण और संवाद के हिस्से के रूप में उभरती है। इसका मतलब यह है कि वास्तविकता सामाजिक रूप से निर्मित है, बजाय व्यक्ति द्वारा निर्मित होने के। सामाजिक अन्तःक्रियाओं से वास्तविकता उभरती है।

सामाजिक रचनावादी शोध : एक शोध अभिविन्यास जिसके द्वारा प्रक्रियाओं का वर्णन किया जाता है जिसके माध्यम से लोग वर्णन करते हैं,

समझते हे या दुनिया के लिए अन्यथा अनुभव न लगाते है जिसमें वे रहते है। यह समझ के सामान्य रूपों को स्पष्ट करने का प्रयास करता है क्योंकि वे अब उपस्थित हैं जैसा कि वे पहले ऐतिहासिक अवधियों में अस्तित्व में रहे हैं।

रचनावाद : सैद्धांतिक दृष्टिकोण यह बताता है कि लोग सक्रिय रूप से दुनिया की अपनी धारणा का निर्माण करते हैं और उन वस्तुओं एवं घटनाओं की व्याख्या करते है जो उन्हें पहले से ही जानते हैं।

सामाजिक रचनावाद : विचार की विचारधारा जो यह सुझाव देती है कि ज्ञान सामाजिक सन्दर्भों में अन्तर्निहित है और विचारों, भावनाओं, भाषा और व्यवहार को बाहरी दुनिया के साथ संबंधों के परिणाम के रूप में देखता है।

अंतःसांस्कृतिक मनोविज्ञान : विभिन्न संस्कृतियों और जातीय समूहों में मनोवैज्ञानिक कामकाज में समानता और अन्तर का अध्ययन है। यह संस्कृति को एक पूर्ववर्ती चर के रूप में परिभाषित करता है। इस प्रकार के विरोधाभासी उदाहरणों में, संस्कृति को व्यक्तिगत रूप से और इसके अलावा बाहर देखा जाता हैं। संस्कृति एवं मानव गतिविधि को अलग-अलग संस्थाओं के रूप में देखा जाता है।

सांस्कृतिक मनोविज्ञान : ऐतिहासिक और सामाजिक सांस्कृतिक संदर्भ में व्यक्तिगत अध्ययन है। यह विचार करता है कि संस्कृति दुनिया और दूसरों को जानने का एक तरीका है। साझा ज्ञान और साझा अर्थ संस्कृति को परिभाषित करने वाली रोजमर्रा की प्रथाओं का एक बंडल उत्पाद करते हैं। इस प्रकार संस्कृति और व्यवहार और संस्कृति और मन को अविभाज्य के रूप में देखा जाता है।

देशज मनोविज्ञान : एक विशिष्ट सांस्कृतिक सन्दर्भ में लोगों का अध्ययन। परीक्षण का मुख्य विषय अर्थ प्रणालियों का व्यक्तिगत निर्माण है, विशेषकर ऐसी प्रणालियों जो किसी परिभाषित सांस्कृतिक समूह के अन्दर साझा हैं। सभी मनोवैज्ञानिक सिद्धांत के सांस्कृतिक आधार पर ध्यान केन्द्रित करते है।

नारीवाद : नारीवाद सामाजिक और राजनीतिक आंदोलनों की एक श्रृंखला है जिसका उद्देश्य जेण्डर लिंगों की सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक समता को परिभाषित करना और उसे स्थापित करना है। इन क्षेत्रों में व्यापक परिवर्तन के हेतु राजनीतिक और बौद्धिक गति प्रदान की गई है।

नारीवादी मनोविज्ञान : नारीवादी मनोविज्ञान में हुए आन्दोलन जो महिलाओं की स्थिति में सुधार करने के लिए मनोविज्ञान की सामर्थ्य का उपयोग करने का प्रयास करता है। शोधकर्ता, अभ्यासकर्ता,

शिक्षक या कार्यकर्ता होने के संबंध में जेन्डर का अध्ययन करने के लिए सबसे अच्छा और मनोविज्ञान के लिए सबसे अच्छा कैसे करें? इसके बारे में महत्वपूर्ण वार्तालाप शामिल है।

लैंगिकवादी : लैंगिकवादियों ने विचार किया कि महिलाओं को पुरुषों से कम माना जाता है और उनके साथ भेदभाव किया जाता है क्योंकि वे महिलाएं हैं।

विषमलैंगिकवादी : इन्होंने विचार किया कि समलैंगिक पुरुषों और समलैंगिक महिलाओं को अमान्य माना जाता है और उनके साथ भेदभाव किया जाता है क्योंकि वे समलैंगिक है।

पुरुषकेन्द्रिता : पुरुष केन्द्रित होना।

जेन्डर : उन विशेषताओं और शीलगुणों को सामाजिक-सांस्कृतिक रूप से पुरुषों एवं महिलाओं के लिए उपयुक्त माना जाता है। इसे उन प्रथाओं के समूह के रूप में परिकल्पित किया गया है जो सांसारिक सामाजिक संदर्भों में और भाषा और कानून जैसे सामाजिक संस्थानों में पुरुषत्व और स्त्रीत्व को बनाते और लागू करते हैं।

सकारात्मक मनोविज्ञान : मानव के व्यक्तिपरक अनुभवों के सकारात्मक पहलुओं एवं सकारात्मक व्यक्तिगत लक्षणों तथा सकारात्मक संस्थानों के वैज्ञानिक अध्ययन के रूप में परिभाषित किया जाता है और जीवन को निकलकर और अर्थहीन प्रतीत होने वाले विभिन्न विकृतियों को भी रोकता है।

व्यक्तिगत कल्याण : व्यक्तिगत कल्याण किसी के जीवन का व्यक्तिगत मूल्यांकन है। इसमें संज्ञानात्मक मूल्यांकन और सकारात्मक प्रभाव शामिल होता है जो जीवन संतोष, सहसम्बन्ध गुणवत्ता, अर्थ और उपलब्धियों पर बल डालता है।

ईडेमोनिक प्रसन्नता : अर्थ और उद्देश्य के सम्बन्ध में प्रसन्नता, उन गतिविधियों में भाग लेना जो किसी के कौशल प्रतिभा और क्षमता के वास्तवीकरण की अनुमति देते हैं।

हेडोनिक प्रसन्नता : सकारात्मक प्रभाव की आवृत्ति के साथ प्रसन्नता, नकारात्मक प्रभाव की कम आवृत्ति और जीवन के संतोष जन के रूप में मूल्यांकन करना।

12.8 पुनरावलोकन प्रश्न

1) संज्ञानात्मक मनोविज्ञान का जनक किसे माना गया है?

2) उस प्रतिमान का नाम बताइये जिसका संज्ञानात्मक मनोविज्ञान द्वारा अनुसरण किया गया है।

3) मनोविज्ञान में सामाजिक रचनावाद का प्रमुख प्रस्तावक कौन है?

4) सामाजिक विज्ञान के तीन सबसे प्रमुख संस्थापकों के नाम बताइये जिनका सामाजिक रचनावाद पर सीधा प्रभाव पड़ा है।

5) मनोविज्ञान में संस्कृति के तीन दृष्टिकोण कौन से हैं?

6) समकालीन मनोविज्ञान की विशेषतायें क्या हो सकती हैं?

7) व्यवहारवाद के प्रभुत्व के बाद संज्ञानात्मक मनोविज्ञान कैसे उभरा? चर्चा कीजिए।

8) निस्सर ने संज्ञान का वर्णन कैसे किया है?

9) सामाजिक रचनावाद का आवश्यक विचार क्या हैं?

10) गेरमेन सामाजिक रचनावादी जाँच के अपने दृष्टिकोण के माध्यम से मनोवैज्ञानिकों को क्या बताने की कोशिश कर रहा था?

11) अंतःसांस्कृतिक, सांस्कृतिक मनोविज्ञान एवं देशज मनोविज्ञान के मध्य अन्तर कीजिए।

12) 1973 में अमेरिकन साइकोलाजी एसोसिएशन द्वारा स्थापित कार्यकारी बल के निष्कर्ष क्या थे?

13) नारीवादी मनोवैज्ञानिकों के अनुसार मनोविज्ञान किन तरीकों से पुरुष केन्द्रित रहा है?

14) नारीवादी मनोवैज्ञानिकों ऐने कांस्टेटिनोपाल और सेण्ड्रा बेम द्वारा पुरुषत्व-स्त्रीत्व की संकल्पना को कैसे चुनौती दी गई?

15) सकारात्मक मनोविज्ञान का उद्देश्य क्या है? सकारात्मक मनोविज्ञान के उद्भव और विकास में मार्टिन सेलिगमैन की भूमिका का वर्णन करें।

16) सकारात्मक मनोविज्ञान मानवतावादी मनोविज्ञान के समान कैसे है?

12.9 संदर्भ एवं पढ़ने के सुझाव

Adamopoulos, J. &Lonner, W. J. (2001). Culture and Psychology at a Cross-road: Historical Perspective and Theoretical Analysis, In Matsumoto, D. (Ed.), The Handbook of Culture and Psychology (pp. 11 - 34). Oxford: Oxford University Press

American Psychological Association (2015). The APA Dictionary of Psychology. Washington, DC: American Psychological Association

Brennan, J. F. (2014). History and Systems of Psychology. Harlow: Pearson Education Ltd.

Chung, M. C. & Hyland, M. E. (2012). History and Philosophy of Psychology. Oxford: Wiley-Blackwell Publications

Gablin, A. (2014). An Introduction to Social Constructionism. Social Research Reports, 26, 82 – 92

Greenfield, P. M. (2000). Three Approaches to the Psychology of Culture: Where Do They Come From? Where Can They Go? Asian Journal of Social Psychology, 3, 223 – 240

Gross, R. (2009). Themes, Issues, and Debates in Psychology. London: Hodder Education

Lock, A. & Strong, T. (2010). Social Constructionism: Sources and Stirrings in Theory and Practice. Cambridge: Cambridge University Press

Marecek, J., Kimmel, E. B., Crawford, M. & Hare-Mustin, R. T. (2003). Psychology of Women and Gender, In: Freedheim, D. K. & Weiner, I. B. (Eds.), Handbook of Psychology: Volume 1, History of Psychology (pp. 249 – 268). Hoboken: John Wiley & Sons, Inc

Pickren, W. & Rutherford, A. (2010). A History of Modern Psychology in Context. Hoboken: John Wiley & Sons, Inc

Schultz D. P. & Schultz, S. E. (2008). A History of Modern Psychology. Wadsworth: Thomson Learning, Inc

Seligman, M. E. P. (2002). Positive Psychology, Positive Prevention, and Positive Therapy, In: Snyder, C. R. & Lopez, S. J. (Eds.) Handbook of Positive Psychology (pp. 3 – 9). Oxford: Oxford University Press

Vaalsiner, J. (2012). Introduction: Culture in Psychology: A Renewed Encounter of Inquisitive Minds, In Vaalsiner, J. (Ed.), The Oxford Handbook of Culture and Psychology (pp. 3 - 24). Oxford: Oxford University Press

Weinberg, D. (2014). Contemporary Social Constructionism: Key Themes. Philadelphia: Temple University Press

12.10 चित्रों के संदर्भ

Cherry, K. (2020). A Biography of Lev Vygotsky, One of the Most Influential Psychologists. https://www.verywellmind.com/lev-vygotsky-biography-2795533

Cherry, K. (2020). Biography of Abraham Maslow (1908 – 1970). https://www.verywellmind.com/biography-of-abraham-maslow-1908-1970-2795524

Kesselman, A. & Blaisdell, V. (n. d.). Remembering Naomi Weisstein, October 16, 1939 – March 26, 2015. Wellesley Centers for Women. https://www.wcwonline.org/Women-=-Books-Blog/weisstein

Martin, D. (2012). Ulric Niesser Dead at 83; Reshaped Thinking. https://www.nytimes.com/2012/02/26/us/ulric-neisser-who-reshaped-thinking-on-the-mind-dies-at-83.html?

McLellan, D. T. (2021). Karl Marx. https://www.britannica.com/biography/Karl-Marx

Nolen, J. L. (2017). Learned Helplessness. https://www.britannica.com/science/learned-helplessness

Psychology's Feminist Voices (n. d.). Sandra Bem. https://feministvoices.com/ profiles/sandra-bem

Stratton-Berkessel, R. (n. d.). Being Open to Multiple Perspectives Enriches Relationships, With Ken Gergen – PS045. https://positivitystrategist.com/being-open-to-multiple-perspectives-enriches-relationships-with-ken-gergen-ps045/

The New School for Social Research (n. d.). Joan Miller, Faculty. https://www.newschool.edu/nssr/faculty/joan-miller/

Vittelo, P. (2012). George A. Miller, a Pioneer in Cognitive Psychology, Is Dead at 92. https://www.nytimes.com/2012/08/02/us/george-a-miller-cognitive-psychology-pioneer-dies-at-92.html

12.11 ऑनलाइन संसाधन

Ackerman, C. E. (2020). What is Positive Psychology & Why is it Important? https://positivepsychology.com/what-is-positive-psychology-definition/

Cherry, K. (2020). The Focus of Cross-cultural Psychology. https://www.verywellmind.com/what-is-cross-cultural-psychology-2794903#:~:text=Cross%2Dcultural%20psychology%20is%20a,think%2C%20feel%2C%20and%20act.

Farnsworth, B. (2019). What is Cognitive Psychology? https://imotions.com/blog/cognitive-psychology/

Farooqi, S. (2015). The Commonality Between Structuralism, Functionalism, Gestalt Psychology, and Behaviorism. http://www.historyofpsychology.net/2015/08/the-commonality-between-structuralism.html

Farooqi, S. (2020). The Evaluation of Life: Positive Feeling and Functioning. http://www.lifeandpsychology.com/2020/05/the-evaluation-of-life-positive-feeling.html

Psychology Research and Reference (n. d.). Second-Wave Feminism and Psychology. http://psychology.iresearchnet.com/history-of-psychology/women-and-minorities/second-wave-feminism-and-psychology/

Snibbe, A. C. (2003). Cultural Psychology: Studying More Than The 'Exotic Other'. https://www.psychologicalscience.org/observer/cultural-psychology-studying-more-than-the-exotic-other

Sommers-Flanagan, J. (2015). Constructivism Vs Social Constructionism: What's the Difference? https://johnsommersflanagan.com/2015/12/05/constructivism-vs-social-constructionism-whats-the-difference/

The Audiopedia (2017). What is Indigenous Psychology? What Does Indigenous Psychology Mean? https://www.youtube.com/watch?v=ZpSEg26sJlQ

Vinney, C. (2019). Social Constructionism Definition and Examples. https://www.thoughtco.com/social-constructionism-4586374

पुनरावलोकन प्रश्नों के उत्तर (1-5)

1) यूलिक नीस्सर

2) कंप्यूटर रूपक

3) केन गेर्गन

4) इमाइल दुर्खीम, मैक्स वेबर एवं कार्ल मार्क्स

5) अंतः सांस्कृतिक, सांस्कृतिक एवं देशज मनोविज्ञान।

इकाई 13 मनोविज्ञान संबंधी समस्याएँ तथा विचार-विमर्श*

संरचना

13.0 प्रस्तावना

13.1 प्रकृति और पोषण

13.1.1 प्रकृति

13.1.2 पोषण

13.1.3 आनुवंशिकतावाद बनाम अनुभववाद

13.2 स्वतंत्र इच्छा और नियतत्ववाद

13.2.1 नियतत्ववाद की जटिलता

13.2.2 दैहिक तथा मानसिक नियतत्ववाद

13.2.3 स्वतंत्र इच्छा, नियतत्ववाद तथा व्यक्तिगत दायित्व

13.3 मन-शरीर की समस्या

13.3.1 भौतिकवाद

13.3.2 आदर्शवाद

13.3.3 द्वैतवाद

13.3.4 द्वि-पहलूवाद

13.4 व्यक्ति और समाज में संबंध

13.4.1 क्षेत्र सिद्धांत

13.4.2 व्यक्ति, स्थिति तथा पर्यावरण

13.4.3 परिस्थितिकीय दृष्टिकोण

13.5 सारांश

13.6 मुख्य शब्द

13.7 पुनरावलोकन प्रश्न

13.8 संदर्भ तथा एवं पढ़ने के सुझाव

13.9 चित्रों के संदर्भ

13.10 ऑनलाइन संसाधन

सीखने के उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात, आप :

- मनोविज्ञान के क्षेत्र से जुड़ी कुछ महत्वपूर्ण समस्याएं तथा उन पर विचार-विमर्श कर सकेंगे;
- प्रकृति व पोषण पर विचार-विमर्श पर चर्चा कर सकेंगे;

* डॉ. सैफ़ आर. फ़ारूकी, अनुप्रयुक्त मनोविज्ञान विभाग, विवेकानंद कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

- स्वतंत्र इच्छा तथा नियतत्ववाद में अन्तर स्पष्ट कर सकेंगे;
- मस्तिष्क व शरीर से जुड़ी समस्याओं की व्याख्या; और
- मनुष्य व समाज किस प्रकार परस्पर संबंधित हैं, का वर्णन कर सकेंगे।

13.1 प्रस्तावना

मनोविज्ञान से संबंधित अनेक समस्याएं सामने आई हैं तथा उन पर विचार विमर्श भी हुआ है। जब मनोविज्ञान का शिक्षा में स्वतंत्र अस्तित्व नहीं था, उससे पहले से ही मनोवैज्ञानिक समस्याओं पर विचार सामने आते रहते थे। अनेक विचारकों के अनुसार अनेक दृष्टिकोण प्रस्तुत किये गये हैं। इससे मनोविज्ञान को लेकर अनेक विवाद सामने आये हैं तथा उन पर विचार विमर्श भी हुए हैं। लगातार प्रासंगिक प्रश्न उठाये जाते रहते के कारण मनोविज्ञान का विकास होता गया।

मनोवैज्ञानिक क्षेत्र में *प्रकृति व पोषण* को लेकर कुछ समस्याओं पर व्यापक रूप से विचार हुआ है। स्वतंत्र इच्छा तथा नियतत्ववाद को लेकर तथा मस्तिष्क व शरीर के संबंधों को लेकर तथा व्यक्ति व समाज के संबंधों को लेकर भी विचार विमर्श हुआ है। प्रकृति बनाम पोषण बहस में उस पुरातन काल से चले आ रहे प्रश्न को उठाया जाता है - क्या हम खास तरह के ही पैदा होते हैं, या खास तरह के हो जाते हैं। *स्वतंत्रता की इच्छा बनाम नियतत्ववाद* इस बात पर सोचने के लिए विवश करता है कि मनुष्य का व्यवहार आंतरिक शक्तियों से संचालित होता था बाहर शक्तियों से या फिर इस आधार पर उसके चयन की स्वतंत्रता रहती है कि हर कोई अपने कार्यों के लिए जिम्मेदार होता है - जो जैसा करेगा, वैसा भरेगा। **मन-शरीर से जुड़ी समस्याएं** मानसिक व शारीरिक घटनाओं के लिए जिम्मेदार होती हैं। क्या उनका आपस में कोई संबंध है? यदि है तो वह किस तरह का है? अंततः *व्यक्ति व समाज* को लेकर यह प्रश्न उठाया जाता है कि मनुष्य समाज में रहते हुए किस तरह काम करता है? क्या व्यक्ति समाज से निरपेक्ष रहकर कार्य करता है या उस पर समाज का दबाव रहता है। यदि हां, तो समाज व्यक्ति की भूमिकाओं को कैसे प्रभावित करता है। या फिर व्यक्ति और समाज एक दूसरे को प्रभावित करते हैं? समस्याएं तथा उन पर होने वाले विचार-विमर्श मनुष्य के व्यवहार की मौलिक प्रकृति को प्रभावित करते हैं। इस इकाई में हम मनोविज्ञान के विषय में उपरोक्त सब मुद्दों तथा उनसे संबंधित विचार-विमर्शों पर विस्तार से चर्चा करेंगे।

13.1 प्रकृति और पोषण

प्रकृति व पोषण को लेकर होने वाली बहस यह जानने के लिए होती है कि मनुष्य तथा उनके व्यवहार जैविक आनुवांशिकता द्वारा किस प्रकार निर्धारित किये जाते हैं। इसे *प्रकृति* कहा जाता है तथा मनुष्य के व्यवहार को पर्यावरण किस तरह प्रभावित करते हैं, यह *पोषण* कहलाता है।

13.1.1 प्रकृति

प्रकृति व्यवहार के निर्मित करती है, इसका अर्थ यह है कि हर व्यक्ति को आधारभूत संरचना का विकासपरक तथा आनुवांशिक है। प्रकृति के सर्वव्यापी का मत है कि विकास सामान्य ढंग से होता है। विकासात्मक व आनुवांशिक के आधार वृद्धि के

कारण वृद्धि के विकास में समानता पाई जाती है। आनुवांशिकता के साथ मिलकर प्रकृति वंशानुक्रम का निर्धारण करती है। इससे साबित होता है कि आनुवांशिक सामग्री गुणसूत्र तथा जीन एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में हस्तांतरित होते रहते हैं। मनुष्य की आधुनिक आनुवांशिकता में व्यक्ति व्यक्ति के बीच आनुवांशिक अंतर होते हैं। इस संदर्भ में आनुवांशिकता जनित अंतर होते हैं। इस संदर्भ में आनुवांशिकता जनित अंतर मनुष्य प्रजाति के हर मनुष्य एक दूसरे से अलग पहचान प्रदान करता है।

चित्र 13.1 : फ्रैंसिस गाल्टन (1822-1911)
स्रोत : www.biography.com

फ्रैंसिस गाल्टन – मनुष्यों में व्यक्तिगत विविधताएं आनुवांशिकता के साथ मिलकर व्यक्तिगत प्रकृति को पहचान देती है। गाल्टन ने इसी आधार पर '*प्रकृति-पोषण*' को 1883 में जन्म दिया। तब से ही विज्ञान में आज तक इस शब्द का प्रयोग करते है।

विकासवादी तथा आनुवांशिक आधार का अर्थ यह नहीं है कि मनुष्य की प्रकृति के निर्धारण में पर्यावरण की तनिक भी भूमिका नहीं है। प्रकृति की अवधारणा के समर्थक शोधकर्ता कहते हैं कि चरम व पर्यावरणीय प्रभाव जो मनोवैज्ञानिक रूप से निष्फल या प्रतिफल होते हैं, विकास की प्रक्रिया में बाधक बन जाते हैं। यद्यपि उनके अनुसार मौलिक वृद्धि की प्रवृत्ति मनुष्यों में आनुवांशिक रूप से मौजूद रहती है।

13.1.2 पोषण

प्रकृति के ठीक विपरीत *पोषण* के समर्थक कहते हैं कि व्यक्तियों का निर्माण पर्यावरण करता है। पर्यावरण दो प्रकार का होता है – एक, जैविक पर्यावरण तथा दूसरा सामाजिक पर्यावरण। *जैविक पर्यावरण* में पौष्टिक आहार, चिकित्सा, दवाइयां तथा दैहिक घटनाएं तथा वह सब जो जन्म से पहले गर्भावस्था में घटित हुआ।

सामाजिक पर्यावरण में निजी अनुभव, परिस्थितियाँ, सीखना, शैक्षिक पृष्ठभूमि, सामाजिक व राजनैतिक पृष्ठभूमि, परिवार, साथी, विद्यालय, समुदाय, मीडिया तथा संस्कृति आदि आते है।

किसी व्यक्ति पर पर्यावरण का प्रभाव उसी समय से पड़ना शुरू हो जाता है जब जीन और गुणसूत्र के मिलन से गर्भाधान होता है। भ्रूण को प्रभावित करने वाले घटकों में हार्मोन्स, मां द्वारा ली जा रही दवाइयां, मां का भोजन तथा माँ से संबंध कोई भी अन्य घटना। इन सभी प्रभावों को मिलाकर जैविक पर्यावरण कहा जाता है। जन्म से पहले प्रभावित करने वाले जैविक पर्यावरण का बच्चे की विकास प्रक्रिया पर विशेष प्रभाव पड़ता है। यदि गर्भावस्था में मां और गर्भस्थ शिशु का समुचित ध्यान न रखा जाय तो जैविक पर्यावरण के दुष्प्रभाव बच्चे में जन्म के बाद जैविक या मनोवैज्ञानिक विकार पैदा कर सकते हैं।

सामाजिक पर्यावरण में परिवार, जो सामाजिक पर्यावरण के बड़े घटक में आता है, विशेष भूमिका निभाता है। पोषण के समर्थकों के अनुसार सामाजिक पर्यावरण व्यक्ति के व्यक्तित्व का स्वरूप निर्धारित करता है तथा जीवन भर मनुष्य अपना प्रभाव डालता रहता है।

13.1.3 आनुवंशिकतावाद बनाम अनुभववाद

प्रकृति की अवधारणा को आनुवंशिकतावाद में खोजा जा सकता है। आनुवंशिकतावाद एक दार्शनिक सिद्धांत है जो मनुष्य की योग्यताओं, क्षमताओं का आंकलन उसके ज्ञान तथा अनुभव के आभार पर नहीं करता, अपितु आनुवांशिकता के आधार पर करता है।

पोषण की अवधारणा अनुभववादी विचारधारा में खोजी जा सकती है। जिसका संबंध 17वीं शताब्दी के महान दार्शनिकों से है, खासकर जॉन लॉकी से। लॉकी का विचार था कि मनुष्य का मस्तिष्क जन्म के समय खाली स्लेट की तरह होता है (टेबुला रासा), जैसे-जैसे बच्चा बड़ा होता जाता है खाली स्लेट पर ज्ञान व अनुभव द्वारा कुछ न कुछ लिखा जाता रहता है।

आनुवंशिकतावाद और अनुभववाद एक दूसरे के विपरीत ध्रुव माने जाते है। एक के अनुसार मानव-योग्यताएं अंतर्निहित होती हैं, तथा दूसरे के अनुसार वे सीखने की प्रक्रिया द्वारा अर्जित की जाती हैं। आधुनिक मनोवैज्ञानिक दोनों धारणाओं को अतिवादी मानते हैं। वे मानव योग्यता व क्षमताओं को आनुवांशिकता और पर्यावरण के बीच पारस्परिक संबंधों की उपज मानते हैं

इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि आनुवंशिकतावाद तथा अनुभववाद अलग-अलग होते हुए भी प्रकृति व पोषण की अवधारणा से जुड़े हैं। दोनों क्रमशः मनोविज्ञान में विशेष स्थान रखते हैं। दो अलग-अलग दृष्टिकोण हैं जो दो विचार धाराओं का अलग-अलग समर्थन करते हैं।

गेस्टाल्ट मनोवैज्ञानिक, जो मानते थे कि कि अवधारणात्मक संगठन अंतर्निहित होते हैं, वे आनुवंशिकतावादी कहलाते हैं। बाल मनोविज्ञान के आग्रणियों में से एक **आर्नोलड गोसले** ने परिक्वता की अवधारणा का परिचय देते हुए कहता है कि यह जीस में पहले से ही मौजूद रहती हैं जिसके अनुसार स्वतः ही परिवर्तन होते रहते हैं। इसके अनुसार शिशुओं व बच्चों में एक जैसे परिवर्तन लगातार आते रहते हैं जिनका क्रम व जिनकी गति एक जैसे ही होती है।

चित्र 13.2: नोम चौमस्की (1928)
स्रोत : www.salon.com

आनुवंशिकतावाद का आधुनिकतम विचार भाषा विज्ञानी **नोम चॉमस्की** का भाषा अधिग्रहण यंत्र (एलएडी) हैं। अधिग्रहण यंत्र भाषा व्याकरण के नियमों की सामान्य अथवा सार्वत्रिक प्रणाली की अंतर्निहित जानकारी प्रदान करता है। यह सिद्धांत बताता है कि व्यक्ति व्याकरण के नियमों को सार्वजिक संचय (कोष) से प्राप्त करता है तथा इसका प्रयोग उस भाषा में करता है जिसे वह जानता है।

आनुवंशिकतावाद की तरह अनुभववाद की भी विभिन्न रूपों में मनोविज्ञान में विशेष भूमिका रही है। ऐसे आरंभिक प्रभावों में से एक व्यवहारवाद है। व्यवहारवाद के संस्थापक **जॉन वाट्सन** ने एक कथन जारी किया था जिसके अनुसार किसी बच्चे को चिकित्सक, वकील या कलाकार के रूप में विकसित किया जा सकता है तथा एक चोर या भिखारी के रूप में भी, उसकी योग्यता तथा बौद्धिक स्तर जो भी रहा हो। उसका यह भी मानना था कि आनुवांशिक क्षमता बौद्धिकता अथवा स्वभाव जैसी किसी चीज का पहले से ही अस्तित्व नहीं होता है।

हाल ही में इस बात पर सहमति बनी है कि प्रकृति तथा पोषण दोनों ही व्यवहार का निर्माण करते हैं। अब तर्क इस बात के समर्थन नहीं दिया जाता है किसमें परिवर्तन किया जाये। बल्कि इस बात के समर्थन में दिया जाता है कि *कितना किया जाये*? यद्यपि इस तर्क की कटु आलोचना भी हुई है क्योंकि यह अनुवांशिकता तथा पर्यावरण की भूमिकाओं को परिमणित करता है। एक बेहतर तर्क दिया गया है - *वे किस प्रकार सम्पर्क करते हैं* ? यह इस बारे में है कि आनुवांशिकता तथा पर्यावरण एक दूसरे को गुणात्मक रूप से किस प्रकार प्रभावित करते हैं।

बॉक्स. 13.1: भाषा अधिग्रहण : प्रकृति बनाम पोषण पर उत्पन्न हुई बहस का एक उदाहरण हैं।

व्यवहारवादी बी एफ स्किनर तथा भाषा विज्ञानी नोम चोमस्की के बीच छिड़ी भाषा-अधिग्रहण पर बहस बहुत प्रचारित हुई। इसमें प्रकृति बनाम पोषण विषय खूब प्रकाश में आया। चोमस्की का भाषा अधिग्रहण का सिद्धांत प्रकृति की अवधारणा का समर्थन करता है, जबकि स्किनर का सिद्धांत पोषण का समर्थन करता है। स्किनर का कहना था कि भाषा पूरी तरह सीखी जाती है, इसीलिए वह पूरी तरह पोषण का परिणाम है प्रकृति का नहीं। भाषा-अधिग्रहण की व्याख्या करते समय उन्होंने क्रिया-प्रसूत। अनुबंधन का सिद्धांत लागू किया था

स्किनर के अनुसार जब बच्चे बोलना शुरू करते हैं, तो उनकी प्रशंसा की जाती है उन्हें प्रोत्साहित किया जाता है। माता-पिता या अभिभावक बहुत खुश होते हैं। इस प्रोत्साहन से अनुप्रेरित होकर बच्चे धीरे-धीरे भाषा सीख जाते हैं। चोमस्की इस सिद्धांत का खुला विरोध करता है। वह कहता है कि बच्चे इस तरह केवल शाब्दिक ज्ञान सीखते हैं, व्याकरण या वाक्य रचना नहीं है।

चोमस्की का मानना है कि हर व्यक्ति भाषा अधिग्रहण यंत्र (एलएडी) के साथ पैदा होता है जो व्याकरण के नियमों की सार्वजिक प्रणाली कहलाती है। वह कहता है कि मनुष्य जब किसी भाषा के सम्पर्क में आते हैं, उस भाषा के सार्वजिक के संचय से व्याकरण के नियम सीख लेते हैं। इस प्रकार चोमस्की तर्क देता है कि भाषा अधिग्रहण एक अंतर्निहित प्रक्रिया है तथा प्रकृति को अनुकूलन से मनुष्य के अंदर विकसित होती है।

13.2 स्वतंत्र इच्छा और नियतत्ववाद

स्वतंत्र इच्छा एक विचार है जिसके अनुसार व्यवहार को मौजूदा परिस्थितियों अथवा अतीत के अनुभव से बांधा नहीं जा सकता। व्यक्ति जिस तरह का व्यवहार करते हैं, वह केवल तुरन्त उद्दीपन का परिणाम नहीं होता है, न ही उसका निर्धारण पहले की घटनाओं से किया जा सकता है। स्थिति के अनुसार मनुष्य स्वयं तय करते हैं कि वे किस तरह का व्यवहार करें। दूसरी और नियतत्ववाद एक प्रकार की धारणा है कि सभी तरह के व्यवहारों के पीछे कुछ न कुछ कारण होते हैं।

स्वतंत्र इच्छा को *अनियतत्ववाद* भी कहा जाता है। यह वैज्ञानिक मनोविज्ञान को नहीं मानता है। वे मनोवैज्ञानिक जो नियतत्ववाद की धारणा के विरोधी हैं, उनका कहना है कि व्यवहार के पीछे कोई कारण नहीं होता क्योंकि यह स्वतः स्फूर्त होता है। यह एक नितांत विरोधी धारणा है जो यह कहती है कि व्यवहार के पीछे कोई कारण विशेष नहीं होता, यह स्वतंत्रतापूर्वक किया जाता है। मानवतावादी तथा अस्तित्ववादी मनोवैज्ञानिक इस तरह सोचते हैं।

स्वतंत्र इच्छा बनाम नियतत्ववाद वाद-विवाद इस धारणा पर आधारित है कि व्यवहार व्यक्ति के स्वयं के नियंत्रण में होता है, या नहीं। स्वतंत्र इच्छा के समर्थक कहते हैं कि हर व्यक्ति का अपने व्यवहार पर नियंत्रण होता है, वह व्यवहार करने के लिए स्वतंत्र होता है, कोई बाहरी दबाव उसे नियंत्रित नहीं कर सकता है। इस के ठीक

विरूद्ध नियतत्ववाद के समर्थक कहते हैं कि व्यवहार पर व्यक्ति को स्वयं का नियंत्रण नहीं होता है।

स्वतंत्र इच्छा बनाम नियतत्ववाद पर होने वाली बहस का केंद्र कारण का होना या न होना है। नियतत्ववादियों के अनुसार संसार में घटित होने वाली हर घटना का कोई न कोई कारण अवश्य होता है। क्योंकि मनुष्य संसार का हिस्सा हैं, अतः सभी मानवीय व्यवहारों के पीछे कारण का होना जरूरी है। विज्ञान सम्मतता में विश्वास करने वाले मनोवैज्ञानिक मानव व्यवहार के अध्ययन को नियतत्ववादियों के दृष्टिकोण से सहमत है। वे मानते है कि जितना-जितना हम कारणों के बारे में जान पायेंगे, उतने ही मानव व्यवहार विपरित होते जायेंगे। व्यवहार का पूर्वानुमान तथा नियंत्रण यह दर्शाती है कि व्यवहार के पीछे कारण होता है।

13.2.1 नियतत्ववाद की जटिलता

यद्यपि सभी नियतत्ववादी यह मानते हैं कि व्यवहार के पीछे कारण होता है, फिर भी वे इस बात पर सहमत है कि व्यवहार के पीछे के सभी कारणों का पता लगाया जाना संभव नहीं है। इसका एक बड़ा कारण यह है कि व्यवहार का एक नहीं, अनेक कारण हो सकते हैं। अर्थात् व्यवहार *अतिनिर्धारित* हैं। इसी कारण से व्यवहार का निश्चय सम्भव नहीं व्यवहार किसी एक घटना से अनुप्रेरित नहीं होता बल्कि अनेक घटनायें होती हैं जो पारस्परिक रूप से संबंधित होती हैं और वे ही व्यवहार का कारण बनती हैं।

व्यवहार के पीछे के सभी कारणों न जाने की बजाय यह भी है कि व्यवहार कभी-कभी अचानक अस्तित्व में आता है घटना पर महज इत्तफाक से ही व्यवहार हो जाता है। *घटना* से होने वाला व्यवहार भी इसे नियतयात्मक बनाता है। लेकिन इसकी नियतत्ववादिता निश्चित रूप से जटिल हो जाती है।

घटना से उत्पन्न हुई परिस्थितियां शायद व्यवहार की पूर्व घोषणा नहीं करती, परन्तु वे व्यवहार का कारण अवश्य बन जाती हैं। व्यवहार का निश्चयन की प्रक्रिया के बाहर होना तथा घटना से अस्तित्व में आना जटिल स्थिति उत्पन्न करता है इसमें *अनिधार्यिता* की भावना अंतर्निहित होती है। कई मनोवैज्ञानिक नियतत्ववाद के सिद्धांत पर विश्वास करते है लेकिन उन्हें लगता है कि, व्यवहार के कारणों को सही ढंग से मापा नहीं जा सकता। ऐसा क्यों कहा जाता है कि व्यवहार के पीछे मौजूद कारणों को मापा नहीं जा सकता, क्योंकि व्यवहार पर यदि निगरानी की जा रही हो तो व्यवहार बदल जाता है।

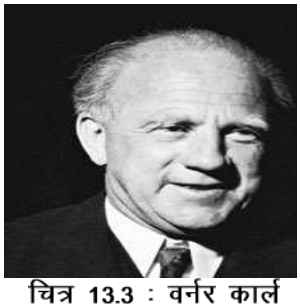

चित्र 13.3 : वर्नर कार्ल हाइजेनबर्ग

स्रोत :
www.britannica.com

यह धारणा जर्मन मनोवैज्ञानिक वर्नर कार्ल हाइजेनबर्ग के *अनिश्चय के सिद्धांत* से ली गई है। हाइजेनबर्ग ने पता लगाया था कि जब इलैक्ट्रॉन्स का निरीक्षण किया जाता है तो इसकी सक्रियता प्रभावित हो जाती है, जिससे इसकी दिशा में परिवर्तन आ सकता है। इससे निरीक्षण की वैधता पर संदेश उत्पन्न हो जाता है अतः हाइजेनबर्ग सुझाव देता है कि कुछ भी पूरी निश्चयता के साथ नहीं जाना जा सकता।

इसी प्रकार प्रयोगात्मक मनोविज्ञान के अध्ययन में किया जाने वाला प्रयोग व्यवहार में कारण के बारे में भ्रामक परिणाम देता है। इसलिए यह संभव नहीं हो पाता कि व्यवहार के पीछे के कारण का सही-सही पता लगाया जा सके। इसी सिद्धांत को

मानने वाले मनोवैज्ञानिक सुझाव देते है कि हर व्यवहार का कोई न कोई खास कारण अवश्य होता है परन्तु उसे पूरी तरह समझा या समझाया नहीं जा सकता हैं।

नियतत्ववादी सुझाव देते हैं कि व्यवहार के कारण का पता लगाया जाना एक जटिल प्रक्रिया है क्योंकि इसकी पूर्व घोषणा नहीं की जा सकती। फिर भी नियतत्ववादी यह विश्वास रखते हैं कि जितना हमने मानव व्यवहार के बारे में अब तक जाना है, उसके आधार पर सही-सही पूर्वानुमान लगाना और भविष्यवाणी करना आसान हो जायेगा।

13.2.2 दैहिक तथा मानसिक नियतत्ववाद

नियतत्ववाद को व्यापक रूप से दो वर्गो में बाँटा जा सकता है – दैहिक नियतत्ववाद तथा मानसिक नियतत्ववाद। यदि व्यवहार के कारण को प्रत्यक्ष रूप से मापा जाये तो तथा उसे परिमाणित किया जाये तो इसे *दैहिक नियतत्ववाद* कहते है। दैहिक नियतत्ववाद में जैविक, पर्यावरणीय तथा सामाजिक सांस्कृतिक नियतत्ववादिता समाहित होती है।

जैविक नियतत्ववाद में द्वारा व्यवहार के शारीरिक गतिविधियों की भूमिका कहती है अथवा आनुवांशिकी के भूमिका होती है। पर्यावरणीय नियतत्ववाद व्यवहार में पर्यावरणीय उद्दीपन की भूमिका दर्शाता है। अर्थात् यह कहता है कि व्यवहार का स्रोत पर्यावरण में होता है व्यक्ति में नहीं। सामाजिक सांस्कृतिक नियतत्ववाद व्यवहार में संस्कृति, मान्यताओं, रीति-रिवाजों की भूमिका की बात करता है।

इन सभी मामलों में व्यवहार के कारण आनुवांशिकता, पर्यावरणीय उद्दीपन, परम्पराएं आदि होते है। इस प्रकार जीव-मनोविज्ञान से जुड़े मनोवैज्ञानिक व्यावहारिक सिद्धांत तथा सांस्कृतिक मनोविज्ञान से जुड़े मनोवैज्ञानिक दैहिक नियतत्ववाद के दायरे में आते हैं।

दैहिक नियतत्ववाद के ठीक विपरीत जब व्यवहार के कारणों की व्याख्या संज्ञानात्मक तथा सांवेगिक अनुभवों के रूप में की जाती है। तब इसे *दैहिक नियतत्ववाद* कहा जाता है। ऐसे मामले में व्यवहार के कारण व्यक्तिपरक होते हैं तथा उनका परिमाण नहीं किया जा सकता और प्रत्यक्ष रूप से भापा नहीं जा सकता। इनमें निजी विश्वास, संवेग, प्रत्यक्षण, विचार तथा मूल्य शामिल होते है। वे मनोवैज्ञानिक जो चेतन, अचेतन, अवचेतन की मानसिक घटनाओं पर जोर देते हैं, जैसे संज्ञानात्मक मनोवैज्ञानिक एवं मनोविश्लेषक, ये सभी दैहिक नियतत्ववाद के दायरे में आते हैं।

13.2.3 स्वतंत्र इच्छा, नियतत्ववाद तथा व्यक्तिगत दायित्व

जब हम स्वतंत्र इच्छा अथवा स्वतंत्र चयन की बात करते तथा नियतत्ववाद की बात करते हैं, तब निजी दायित्व बोध केंद्र में सबसे पहले आता है। स्वतंत्र इच्छा का अर्थ है स्वयं निर्धारित, जो यह संकेत करता है कि हर व्यक्ति अपने व्यवहार के लिए स्वयं जिम्मेदार है। दूसरी ओर, नियतत्ववाद पर आए तो यदि हर व्यवहार का कोई न कोई कारण होता है, (दैहिक या मानसिक) तो अपने व्यवहार के प्रति व्यक्ति की जिम्मेदारी बनती ही नहीं।

जैसे नियतत्ववाद के अनुसार जो व्यक्ति अपराध करता है, तो उसके अपराध के पीछे कोई न कोई ऐसी परिस्थिति जरूर आई होगी जिसने उस व्यक्ति को इस तरह का व्यवहार करने के लिए उकसाया। जबकि चयन की स्वतंत्रता के अनुसार आपराधिक

गतिविधि पूरी तरह व्यक्ति के नियंत्रण के दायरे में मानी जाएगी। अर्थात यदि व्यक्ति यह अपराध करने से बचना चाहता, तो बच सकता था।

व्यक्तिगत जिम्मेदारी की बात क्योंकि नियतत्ववाद के दायरे से बाहर रह जाती है, इसीलिए इसकी कटु आलोचना होती है। परन्तु प्रक्रियावादी मनोवैज्ञानिक विलियम जेम्स के अनुसार एक प्रकार का नियतत्ववाद वास्तव में व्यक्तिगत जिम्मेदारी को शामिल करके चलता है।

विलियम जेम्स कठोर *नियतत्ववाद* तथा *नम्र नियतत्ववाद* के बीच भेद करता है। जब व्यवहार का कारण स्वतः स्फूर्त अथवा यांत्रिक होता है, तब इसे कठोर नियतत्ववाद कहा जाता है। ऐसे मामलों में कोई व्यक्तिगत जिम्मेदारी नहीं होती है। नम्र नियतत्ववाद, दूसरी ओर में संज्ञानात्मक प्रक्रिया शामिल होती है। जैसे इरादा, उद्देश्य तथा विश्वास। ये प्रक्रियाएं अनुभव और व्यवहार के बीच व्यवधान पैदा करते है। इन मामलों में व्यवहार इरादतन किया जाता है जिससे व्यक्तिगत जिम्मेदारी साबित हो जाती है, संज्ञानात्मक तथा तर्कसंगत क्रियाएं ऐसे व्यवहार में शामिल होती है। नम्र नियतत्ववाद के अनुसार जो व्यक्ति को खास परिस्थितियों में सक्रिय होने या सक्रिय न होने के बारे चुनाव करने की आजादी देता है या सोच-समझकर काम करने का अवसर प्रदान करता है। ये प्रक्रियाएं ही व्यवहार का कारण होती हैं। इस प्रकार नियतत्वात्मक होने के बावजूद व्यवहार आत्म-नियंत्रित भी होता है।

नम्र नियतत्ववाद कठोर नियतत्ववाद तथा चयन की स्वतंत्रता के बीच स्थित होता है जो संकेत देता है कि नियतत्ववाद में भी व्यक्ति जिम्मेदारी तय की जा सकती है।

बॉक्स 13.2 स्वतंत्र बनाम इच्छा नियतत्ववाद : मनोविज्ञान की प्रणालियां

मनोविज्ञान के इतिहास के दौरान, ऐसा लगता है, मनोविज्ञान की विभिन्न प्रणालियाँ *स्वतंत्र इच्छा* तथा *नियतत्ववाद* के मामले में एक-दूसरे की विरोधी हैं। वैज्ञानिक विधियों शामिल करते हुए मनोविज्ञान एक स्वतंत्र विचारधारा के रूप में अस्तित्व में आया है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण का एक पहलू नियतत्ववाद की धारणा है। आरंभिक दृष्टिकोण की प्रकृति नियतत्ववादी थी। बाद में आने वाले दृष्टिकोण भी नियतत्ववादी विचार में विश्वास रखते थे। फिर भी ऐसे दृष्टिकोण भी थे जो वैज्ञानिक दृष्टिकोण वाली आरंभिक प्रणालियां से सहमत नहीं थे। उनका विचार था कि वैज्ञानिक दृष्टिकोण से मानव-व्यवहार का अध्ययन या आंकलन करना ठीक नहीं है। ऐसी प्रणालियां मौजूद थीं जो चयन की स्वतंत्रता के पक्ष में थीं।

साहचर्यवाद मनोविज्ञान का सबसे पुराना दृष्टिकोण है। यह उन नियमों पर जोर देता है जो व्यवहार को नियंत्रित करते हैं साहचर्यवाद की प्रकृति नियतत्वात्मक है। *संरचनावाद* यांत्रिक सिद्धांतों का दृढ़ता से पालन करने के कारण नियतत्वात्मक प्रकृति का है, इसे मनोविज्ञान की प्रथम विचारधारा माना जाता है। मनोविज्ञान की दूसरी विचारधारा प्रकार्यवाद है जो पर्यावरण से संबंधों को मान्यता देने पर जोर देता है। इसकी प्रकृति भी नियतत्वात्मक है। मनोविश्लेषण, यह सुझाव देता है कि व्यवहार अचेतन एवं बाल्यावस्था के अनुभवों के कारण होता है, यह प्रकृति में नियात्मक हैं।

गेस्टाल्ट मनोविज्ञान

अवधारणात्मक संगठन एवं सचूना प्रसंस्करण को नियंत्रित करने वाले सार्वभौमिक कानूनों पर बल देता है, यह नित्यात्मक प्रकृति का है। व्यवहारवाद यह सुझाव देता है कि बाहरी वातावरण के अंदर उद्दीपन व्यवहार का कारण बनती है। यह नित्यात्मक है।

अन्य अनेक दृष्टिकोण जो बाद में अस्तित्व में आए, वे भी प्रायः नियतत्वात्मक ही हैं। *संज्ञानात्मक मनोविज्ञान* जो स्थिति तथा संदर्भ को व्यवहार के लिए जिम्मेदार मानता है, भी नियतत्वात्मक प्रकृति का है। *सामाजिक मनोविज्ञान* व्यवहार में स्थिति और प्रसंग की भूमिका पर बल देता है, नियतत्वात्मक प्रकृति का है। *सांस्कृतिक मनोविज्ञान* जो सांस्कृतिक गतिविधियों, जैसे नियमों, मूल्यों को व्यवहार का निर्माता मानता है, नियतत्वात्मक प्रकृति वाला है। *स्नायु मनोविज्ञान* मस्तिष्क तथा स्नायु संबंधी गतिविधियों को व्यवहार के लिए जिम्मेदार मानता है, यह भी नियतत्ववादी है यहां तक कि *विकासवादी मनोविज्ञान* जो आनुवांशिकता को व्यवहार के लिए जिम्मेदार मानता है, भी नियतत्ववादी है।

लेकिन कुछ मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण ऐसे भी हैं जो नियतत्ववादी विचारधारा का विरोध करते हैं। ये मानते हैं कि नियतत्ववाद मनुष्य को दायित्वहीन बनाता है। इनका मानना है कि मनुष्य को स्वतंत्रता की इच्छा उपलब्ध है, अतः अपने व्यवहार के लिए उसे सीधे-सीधे जिम्मेदार ठहराया जाना चाहिए। *मानवतावादी मनोविज्ञान* के अनुसार हर व्यक्ति में बाधाओं को पार करने की क्षमता होती है। अतः वह स्वयं फैसला कर सकता है, इसीलिए वह स्वतंत्र चयन में विश्वास रखता है। अस्तित्ववादी मनोविज्ञान के अनुसार मनुष्यों के जीवन का स्पष्ट उद्देश्य होता है। वे जीवन को सार्थकता प्रदान करना चाहते हैं। इसीलिए वे स्वतंत्रता इच्छा के पक्षधर हैं।

अपनी प्रगति की जाँच कीजिए 1

1) जैविक तथा सामाजिक पर्यावरण में अंतर बताइए।

.....

.....

.....

.....

2) *प्रकृति-पोषण* शब्द को किसन गढ़ा है?

.....

.....

.....

.....

3) 17वीं शताब्दी के दार्शनिक, जिनका संबंध अनुभववाद से रहा है, उनका नाम बताइए।

.....

.....

.....

.....

.....

4) चोमस्की के भाषा अधिग्रहण के सिद्धांत की व्याख्या कीजिए।

.....

.....

.....

.....

5) नियतत्ववाद स्वतंत्रता इच्छा से किस प्रकार भिन्न है?

.....

.....

.....

.....

2) फ्रैंसिस गाल्टन 3) जॉन लोके

13.3 मन-शरीर की समस्या

मनोविज्ञान में मन और शरीर की समस्या युगों पुरानी है जिसकी जड़ें स्पष्ट रूप से दर्शनशास्त्र में मौजूद हैं। मन के अस्तित्व के बारे में सदैव प्रश्न उठाया जाता रहा है, और इस बारे में भी कि मन का शरीर से क्या संबंध है। दूसरे शब्दों में मन और शरीर की समस्या मानसिक घटनाओं तथा शारीरिक घटनाओं से संबंध रखती हैं। यह जानने की तीव्र इच्छा रहती है कि क्या मन और शरीर एक दूसरे से संबंधित हैं और उनकी समस्यायें भी एक दूसरे से संबंधित हैं, तथा मन की समस्या और शरीर की समस्या के बीच कैसा संबंध है।

वर्षों तक अनेक दार्शनिक तथा मनोवैज्ञानिक मन और शरीर की समस्याओं से जुड़े प्रश्नों का अपनी-अपनी तरह जवाब देते रहे हैं। कुछ का यह मानना है कि सभी घटनाओं की व्याख्या दैहिक रूप में की जा सकती है। इन विचारकों के अनुसार मानसिक गतिविधियां शारीरिक गतिविधियों का ही हिस्सा होती हैं। इस विचारधारा को मानने वाले मनोविज्ञानियों को *भौतिकवादी* कहा जाता है। दैहिकवादियों का विश्वास है कि सृष्टि में केवल पदार्थ का ही वास्तविक रूप से अस्तित्व होता है। इन विचारकों के अनुसार संसार की हर चीज विचार भावनाएं तथा व्यवहार की व्याख्या पदार्थ के रूप में की जा सकती है। क्योंकि वे सभी चीजों की व्याख्या एक ही प्रकार के आधार पर करते हैं, अतः उन्हें *अद्वैतवादी* कहा जाता है।

भौतिकवादियों के ठीक विपरीत जिन विचारकों के विचार हैं, उन्हें *आदर्शवादी* कहा जाता है। आदर्शवादियों का विचार है कि दैहिक वास्तविकता का आधार अनुभूति ही है। यह विचारक भी एकात्मवादी हैं, क्योंकि भौतिकवादियों की तरह यह भी हर चीज की व्याख्या एक ही प्रकार की वास्तविकता के आधार पर करते हैं, और यह वास्तविकता मन अथवा चेतना है।

बड़ी संख्या में मनोवैज्ञानिकों का यह विचार है कि दैहिक तथा मानसिक घटनायें साथ-साथ अस्तित्व में आती हैं और विभिन्न सिद्धांतों द्वारा नियंत्रित होती हैं। इस स्थिति को *द्वैतवाद* कहा जाता है।

13.3.1 भौतिकवाद

थॉमस हाब्स, ब्रिटेन के अनुभववाद के संस्थापक भौतिकवाद के प्रमुख समर्थक थे अपने समय के वैज्ञानिक विकास से अत्यधिक प्रभावित थे। उन पर गैलिलियो का विशेष प्रभाव था। थॉमस हाब्स ने मनोविज्ञान में मानव प्रकृति के बारे में जो विचार व्यक्त किये उनसे स्पष्ट हो जाता है कि वे अपने समय के वैज्ञानिकों से विशेष रूप से प्रभावित थे।

हाब्स पूरी तरह दैहिक वास्तविकता में विश्वास रखते थे। वे सभी मनुष्यों को इंजन की तरह मानते थे। उनका मानना था कि मनुष्य के व्यवहार तथा उनके कारणों की व्याख्या शरीर के रूप में आत्मा जैसी कोई चीज होती है यह एक निराधार धारणा है। हाब्स मानते थे कि शरीर ही मनुष्य है और मनुष्य ही शरीर है, *शरीर* और *मनुष्य* एक ही चीज है।

वे जोर देकर यह बात कहते थे कि ब्रह्मांड में जो पदार्थ है वह निरंतर गति कर रहा है और उसको गति प्रदान करने वाले बल बाहर से प्रयुक्त किए जा रहे हैं। उन्होंने मनुष्य के विचारों को भी इसी रूप में व्याख्या की। उन्होंने विचारों को वस्तुओं की गति माना, एक ऐसी गति जो व्यक्तियों की इन्द्रियों पर प्रभाव डालती है अथवा व्यक्तियों की इन्द्रियों को सक्रियता प्रदान करती है। हाब्स के अनुसार इस गति के बाद एक और गति मस्तिष्क में उत्पन्न हो जाती है और यह तब तक सक्रियता प्रदान करती रहती है जब तक अन्य नई गति उत्पन्न नहीं हो जाती। इस प्रकार हाब्स एक सशक्त भौतिकवादी थे, इतने अधिक भौतिकवादी कि उन्होंने मनुष्य के व्यवहारों तथा विचारों की व्याख्या भी दैहिक रूप में अर्थात शरीर के रूप में की।

13.3.2 आदर्शवाद

आदर्शवादी एक अन्य प्रकार के अद्वैतवादी होते हैं जो आदर्श अथवा आध्यात्मिक अनुभव पर जोर देते हैं। आदर्शवादियों के अनुसार चेतना के अनुभवों का ही अस्तित्व होता है तथा संसार की वास्तविकता को समझने के लिये अदृश्य निकायों के अस्तित्व का ही महत्व होता है। आदर्शवाद इस बात पर जोर देता है कि दुनियां में जो कुछ भी अस्तित्व में है उस सबको मानसिक घटनाओं अर्थात विचारों द्वारा ही समझा जा सकता है।

चित्र 13.4 : रेने देकार्ते (1596–1650)
स्रोत : www.biography.com

आदर्शवाद दो प्रकार का होता है, एक तात्विक आदर्शवाद तथा ज्ञानमींमासीय आदर्शवाद। *तात्विक आदर्शवाद* अस्तित्व की वास्तविकता की प्रकृति की व्याख्या विचारों के रूप में करता है। यह धारणा भौतिकवाद के ठीक विपरीत है। भौतिकवादी वास्तविकता को केवल पदार्थ के रूप में देखते हैं।

ज्ञानमींमासीय आदर्शवाद ज्ञान प्राप्त करने की प्रक्रिया पर जोर देता है और कहता है कि मन केवल उसी चीज को ग्रहण कर सकता है जिसकी प्रकृति दैहिक है तथा वस्तुओं का अनुकूलन उनकी संवेदनशीलता के रूप में होता है।

13.3.3 द्वैतवाद

रेने देकार्ते को आधुनिक दर्शन शास्त्र का संस्थापक माना जाता है। वे हाब्स के दैहिकवाद से सहमत नहीं थे उनका मानना था कि मन और शरीर की समस्या इतनी सरल नहीं है जितनी हाब्स सोचते हैं। देकार्ते का विश्वास था कि मनुष्य एक

चिन्तनशील प्राणी है और उसकी व्याख्या दैहिक रूप में नहीं की जा सकती। उनके अनुसार सभी मनुष्य अस्तित्व में निराकर होते हैं और वे दैहिक रूप में दिखाई पड़ते हैं। देकार्ते के इस विश्वास ने द्वैतवादी विचारधारा की नींव डाली।

देकार्ते का विश्वास था कि मनुष्य दो चीजों से निर्मित होते हैं एक आत्मा अथवा मन और दूसरा शरीर। देकार्ते के अनुसार मन या मस्तिष्क पूरी तरह चिन्तनशील होता है जबकि शरीर एक दैहिक पदार्थ से निर्मित होता है और शरीर यांत्रिक नियमों का पालन करता है। मन और शरीर दो बहुत स्पष्ट निकाय हैं। यद्यपि इसका अर्थ यह नहीं है कि मन का शरीर से कोई संबंध नहीं होता। देकार्ते के अनुसार मन और शरीर के बीच गहरा संबंध होता है, दोनों ही एक दूसरे को प्रभावित करते हैं। मस्तिष्क के निर्देशों पर शरीर ऐच्छिक क्रियायें करता है इस प्रकार मन या मस्तिष्क केवल शरीर की गतिविधियों का दृष्टा नहीं है जैसा कि देकार्ते कहता है मन और शरीर पारस्परिक रूप से संबंधित होते हैं, इसे *अंतः क्रियावाद* कहा जाता है। अंतः क्रियावाद को *कार्टीजियन द्वैतवाद* भी कहा जाता है।

देकार्ते बताता है कि मन या आत्मा का निवास पीनियल ग्रंथि में होता है जो मस्तिष्क के शीर्ष बिन्दु पर स्थित होती है। इस प्रकार पीनियल ग्रंथि एक दैहिक संरचना है जिसमें मन का निवास होता है, यहीं पर मन अपने कार्य करता है।

पीनियल ग्रंथि में स्थित मन शरीर को कार्य करने के निर्देश देता है। जब मन चाहता है कि कुछ घटित हो, तो पीनियल ग्रंथि में उद्दीपन होने लगता है। यह उद्दीपन मस्तिष्क के उन क्षेत्रों में पहुंच जाता है जो इच्छित व्यवहार का नियंत्रण करते हैं। मन स्वतंत्र होता है तथा जो प्रभाव यांत्रिक ढंग से व्यवहार पर पर्यावरण डालता है उसे मन रोक भी सकता है और उसमें संशोधन भी कर सकता है।

देकार्ते के अनुसार व्यवहार के ठीक उलट भावनाओं को सचेतन ढंग से अनुभव किया जाता है। भावनाओं में प्यार, घृणा, आश्चर्य, इच्छा, खुशी, क्रोध तथा दुखी होना आदि मनोभाव शामिल हैं। देकार्ते मानना था कि इच्छा मनोभावों को नियंत्रित करती है जिससे मनुष्य के व्यवहार में गुणवत्ता आ सके उदाहरण के लिये यदि किसी को क्रोध आता है उसके मन की भावना उत्पन्न होती है केवल तब ही मस्तिष्क भावनाओं को अभिव्यक्त करने की अनुमति देता है। यदि मस्तिष्क ऐसा न करे तो मनुष्य आक्रमकता की स्थिति उत्पन्न न हो तो मस्तिष्क ऐसे मनोभावों को रोककर रखता है। यदि मनोभावों की तीव्रता बढ़ जाती है तो मस्तिष्क मनुष्य को तदानुरूप सक्रिय होने से नहीं रोक पाता और परिणामस्वरूप मनुष्य से अतार्किक व्यवहार हो जाता है।

देकार्ते का द्वैतवाद का विचार यह प्रदर्शित करता है कि अदैहिक निकाय मन शरीर के साथ किस तरह संबंधित होता है। देकार्ते का विचार हाब्स के विचार से बिल्कुल अलग है। हाब्स यह मानता है कि सब कुछ केवल दैहिक स्तर पर ही होता है, फिर भी देकार्ते ने स्पष्ट रूप से यह बताया था कि मन और शरीर एक दूसरे से बिल्कुल अलग होते हैं लेकिन व्यवहार के स्तर पर अथवा भावना या विचार की अभिव्यक्ति के स्तर पर उनके बीच गहन संबंध होता है।

देकार्ते का सशक्त विश्वास था कि मन की व्याख्या दैहिक रूप में नहीं होता है जबकि इसके ठीक विपरीत शरीर दैहिक पदार्थों द्वारा ही निर्मित होता है। इसीलिये शरीर में यांत्रिक प्रक्रियाओं का समावेश होता है और शरीर की व्याख्या दैहिक स्तर पर की जा सकती है।

13.3.4 द्वि-पहलूवाद

द्वि-पहलूवाद का विचार फ्रांस के दार्शनिक बेनेडिक्ट स्पाइनोज ने दिया था। द्वि-पहलूवाद दैहिकवाद, आदर्शवाद तथा द्वैतवाद (विशेष रूप से पारस्परिकतावाद) का विरोध करता है।

आरंभ में स्पाइनोज देकार्ते के दर्शन से अत्यधिक प्रभावित हुआ था। स्पाइनोज की पहली किताब का कार्टीजिअनवादी फिलोसोफी पर थी। बाद में चलकर स्पाइनोज देकार्ते के मन और शरीर को अलग-अलग निकाय मानने के दर्शन से असहमत हो गया। इसके स्थान पर स्पाइनोज ने विचार व्यक्त किये कि मन और शरीर दोनों एक ही चीज के दो अलग-अलग पक्ष होते हैं।

चित्र 13.5: बेनेडिक्ट स्पाइनोज (1632–1677)
स्रोत : www.ethics.org.au

स्पाइनोज का विश्वास था कि मन और शरीर एक सिक्के के दो पक्षों की तरह होते हैं। मन और शरीर एक दूसरे से अलग नहीं किये जा सकते क्योंकि यदि शरीर में कुछ होता है तो उसकी अनुभूति मन में अवश्य होती है, तथा उसी तरह प्रभावित करते हैं। मन और शरीर एक ही निकाय के दो अलग-अलग पक्ष हैं, ऐसा कहकर स्पाइनोज ने मनोविज्ञान और दर्शनशास्त्र को संयुक्त रूप से एक ही प्रणाली बता दिया था। स्पाइनोज के मन व शरीर से जुड़ी समस्याओं पर आधारित दर्शन को *साइकोफिजिकल डबल एस्पैक्टिज्म* अथवा *डबल एस्पैक्टिज्म* मोनिस्म कहा जाता है अथवा *सिम्पल डबल एस्पैक्टिज्म* भी कहा जाता है।

यद्यपि देकार्ते का दृष्टिकोण व्यापक रूप से सराहा गया परंतु उसके द्वैतवाद को वैज्ञानिक जगत में समुचित स्थान नहीं मिल पाया। स्पाइनोज का विचार आधुनिक वैज्ञानिक मनोविज्ञान में अधिक सराहा गया। स्पाइनोज के दर्शन ने आधुनिक मनोविज्ञान के विविध पक्षों को आधार प्रदान किये, और देकार्ते कार्टीजनवादी दर्शन अपेक्षाकृत असफल रहा। स्पाइनोज का द्वि-पहलूवाद मनोवैज्ञानिक नियतत्ववाद में विशेष रूप से सहयोगी हुआ जिसने मस्तिष्क के वैज्ञानिक विश्लेषण की आधारशिला रखी। स्पाइनोज को मानव व्यवहार के बारे में आधुनिक दार्शनिक के रूप में जाना जाता है। उनका दर्शन स्पष्ट रूप से नियतत्ववादी दृष्टिकोण पर आधारित था। इसके आधार पर गुस्ताव थियोडर फेकनर तथा विलहम वुन्ट मनोविज्ञान में प्रायोगिक पद्धति का आविष्कार कर पाये।

बॉक्स 13.3: द्वैतवाद के प्रकार

अन्तःक्रियावाद – *अन्तःक्रियावाद* के अनुसार मन और शरीर एक दूसरे से प्रभावित होते हैं जिससे यह साबित होता है कि इन दोनों के बीच गहन पारस्परिक संबंध होता है। अन्तःक्रियावाद बताते है कि मन व्यवहार को जन्म देता है। रेने देकार्ते ऐसे पहले व्यक्ति थे जिन्होंने मन और शरीर के पारस्परिक संबंधों की व्याख्या की। सिगमन्ड फ्रायड तथा अन्य मनोविश्लेषक ने भी इस प्रकार के द्वैतवाद को स्वीकार किया था। मनोविश्लेषण से यह पता लगता है कि मानसिक घटनायें जैसे द्वन्द्व तथा चिंता यद्यपि मन में उत्पन्न होते हैं परंतु यह शरीर को रोगी बना सकते हैं। इससे स्पष्ट हो जाता है कि मन और शरीर अंतर्संबंधित होते हैं।

उद्भवनवाद – *उद्भवनवाद* यह दावा करता है कि शारीरिक स्थिति के लिये मानसिक स्थिति जिम्मेदार होती है। उद्भवनवाद का एक प्रकार इस बात पर जोर देता है कि मानसिक घटना दैहिक संरचना (मस्तिष्क) में उत्पन्न होती है। मानसिक

घटनायें मस्तिष्क की गतिविधियों को प्रभावित करती है। इसका अर्थ यह है कि मन और मस्तिष्क (शरीर) के बीच स्थाई पारस्परिक संबंध होता है। यह अन्तःक्रियावाद की तरह ही है। नोबेल पुरस्कार प्राप्त विचारक रोजर स्पैरी ने इसका समर्थन किया था।

उपोत्पादवाद – *उपोत्पादवाद* एक प्रकार का उद्भवनवाद ही होता है जो अन्तःक्रियावाद से अलग होता है। उपोत्पादवाद के अनुसार मस्तिष्क मानसिक घटनाओं को जन्म देता है। परन्तु मानसिक घटनाओं का प्रभाव मस्तिष्क पर नहीं पड़ता। इससे पता लगता है कि उपोत्पादवाद के अनुसार मानसिक घटनाएं दैहिक घटनाओं का ही उत्पादन होती हैं। परन्तु वे मस्तिष्क को प्रभावित नहीं करती। व्यवहारवाद के संस्थापक जॉन वाट्सन ने आरंभ में उपोत्पादवाद को अपनाया था परन्तु बाद में वे दैहिक अद्वैतवादी बन गये।

मनोदैहिक समानान्तरवाद – मनोदैहिक समानान्तरवाद के अनुसार मन और शरीर एक दूसरे से पूरे तरह अलग अस्तित्व रखते है तथा उनके बीच पारस्परिक संबंध नहीं होती। मनोवैज्ञानिक समानान्तरवाद के अनुसार पर्यावरणीय अनुभव शरीर व मन को साथ-साथ प्रभावित करते हैं, परन्तु मन व शरीर एक दूसरे को प्रभावित नहीं करते। विलियम वुण्ट तथा एडवार्ड टिचेनर दोनों ने इस तर्क को स्वीकार किया था।

पूर्व-स्थापित सामंजस्य – *पूर्व-स्थापित सामंजस्य* के अनुसार मन व शरीर दो अलग-अलग निकाय हैं तथा मानसिक घटनाएं शारीरिक घटनाओं से अलग होती हैं। परन्तु कुछ बाहरी घटकों द्वारा दोनों के बीच समन्वय होता है।

द्वि-पहलूवाद – *द्वि-पहलूवाद* मन व शरीर की व्याख्या करती है। मनुष्य मानसिक व शारीरिक दोनों प्रकार की घटनाओं की अनुभूति करता है। यह विचार स्पाइनोज का था, जिसके अनुसार मन व शरीर एक दूसरे से अलग नहीं होते, वे एक ही निकाय के दो पहलू होते हैं।

अपनी प्रगति की जाँच कीजिए 2

1) भौतिकवाद और आदर्शवाद में क्या अंतर है?

.....

.....

.....

.....

.....

2) स्पाइनोज का *द्वि-पहलूवाद* देकार्ते के *द्वैतवाद* से किस प्रकार भिन्न है?

.....

.....

.....

.....

.....

13.4 व्यक्ति और समाज में संबंध

यह प्रश्न अक्सर पूछा जाता रहा है कि मनुष्य समाज में किस प्रकार कार्य करता है। इस प्रश्न के उत्तर में दिये गये तर्क व्यक्ति व समाज के बीच संबंधी की व्याख्या करते हैं। मानव-व्यवहार की जांच-पड़ताल में ये तर्क सहयोगी हैं – यह बताते हैं कि मनुष्य का मूल्यांकन स्वतंत्र निकाय के रूप में किया गया था। सामाजिक प्रभावों के संदर्भ में मनुष्यों की व्याख्या की जाए।

आरंभ में मनोविज्ञान ने चेतना के अनुभवों को चेतना के तत्वों तथा इंद्रिय-जन्य अनुभवों के रूप में समझने पर जोर दिया था। अहस्तक्षेपीय त्वरित अनुभवों पर विशेष जोर दिया गया था। इससे यह धारणा उभर कर आई कि व्यक्ति एक स्वतंत्र निकाय है। उसके मूल्यांकन के लिए पर्यावरणीय किसी संदर्भ की आवश्यकता नहीं है। एक तरह से यह कहा गया था कि मन और चेतना को बिना किसी संदर्भ के समझा जा सकता है। पर्यावरण व समाज के उन पर छोड़े जा रहे प्रभावों को गिनने की जरूरत नहीं है।

चेतना के बारे में तत्वों तथा त्वरित अनुभवों वाले विचार का मनोविज्ञान के अन्य दृष्टिकोणों ने स्वीकार नहीं किया। उनके अनुसार बिना संदर्भों के चेतना का आकलन संभव नहीं। इस पर भारी बहस आरंभ हो गई जिसका विषय यह था कि संदर्भ, पर्यावरण तथा समाज में मनुष्य की स्थिति क्या है?

13.4.1 क्षेत्र सिद्धांत

परमाणुवाद तथा तत्ववाद के विरोध में क्षेत्र मनोविज्ञान में क्षेत्र सिद्धांत का प्रादुर्भाव हुआ। मनोविज्ञान में क्षेत्र-संबंधों की प्रवृत्ति को लाने का श्रेय गेस्टाल्ट मनोविज्ञान को है, परन्तु इसके लक्षण *क्रिया मनोविज्ञान* में तथा *उर्जवर्ग विचारधारा* में मौजूद हैं। क्षेत्र मनोविज्ञान में क्षेत्र-सिद्धांतों का प्रभाव दैहिक विज्ञान से आया जिसमें शक्ति क्षेत्रों की अवधारणा का इस्तेमाल किया जाता था।

गेस्टाल्ट मनोविज्ञान इस धारणा से विशेष रूप से प्रभावित हुआ जिसका विकास कर्ट लेविन ने किया था। गेस्टाल्ट की अवधारणा को आगे बढ़ाते हुए लेविन ने सुझाव दिया था कि किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व को व्यक्ति के पर्यावरणीय संबंधों अंतर्संबंधों के आधार पर परखा जाना चाहिए। लेविन के अनुसार किसी व्यक्ति को बेहतर ढंग से समझने के लिए उसके चारों ओर के परिस्थितिगत परिप्रेक्ष्य को समझा जाना जरूरी है। व्यक्ति यह अंतर्संबंधीय क्षेत्र प्रतिमान लेविन के होडोलाजिकल स्पेस सिद्धांत पर आधारित था यह एक ज्यामिति प्रणाली होती है जो निम्नलिखित चीजों पर जोर देती है –

चित्र 13.6 : कर्ट लेविन
(1890–1947)
स्रोत :
www.verywellmind.com

- मनोवैज्ञानिक रूप से निर्देशित रास्तों पर गति,
- व्यक्ति-पर्यावरण संबंधों का गतिविज्ञान, तथा
- पर्यावरणीय बाधाओं तथा रूकावटों के प्रति व्यक्ति का व्यवहार।

कर्ट लेविन ने दैहिक एवं सामाजिक संदर्भ में मनुष्य के व्यवहार की व्याख्या करने पर जोर दिया था। दैहिक शास्त्र से क्षेत्र-सिद्धांत के विचार को लेते हुए लेविन ने सिद्ध किया कि मनुष्य की मनोवैज्ञानिक गतिविधियां मनोवैज्ञानिक दायरे में ही घटित होती

हैं। इसी को लेविन ने इस मनोवैज्ञानिक क्षेत्र को '*लाइफ-स्पेस* की संज्ञा दी थी। लेविन के अनुसार लाइफ स्पेस या 'जीवन-अवधि' में अतीत, वर्तमान व भविष्य की सभी घटनाएं सम्मिलित होती हैं जो व्यक्ति को प्रभावित कर सकती हैं। ये सभी घटनाएं विशेष परिस्थितियों में व्यवहार का निश्चयन करती हैं। इस प्रकार जीवन अवधि में व्यक्ति का मनोवैज्ञानिक वातावरण इसे अंतर्संबंध प्रतिबिम्बित होता है।

जीवन अवधि के विचार को आगे बढ़ाते हुए लेविन ने सामूहिक गतिविज्ञान पर महत्वपूर्ण काम किया। यह था मनोवैज्ञानिक अवधारणा को व्यक्ति तथा व्यक्तियों के सामूहिक व्यवहार पर लागू करना। लेविन ने बताया कि जिस प्रकार व्यक्ति अथवा उसका पर्यावरण मनोवैज्ञानिक क्षेत्र निर्मित करता है उसी प्रकार समूह तथा उसका पर्यावरण सामाजिक क्षेत्र का निर्माण करते हैं। लेविन के अनुसार सामाजिक व्यवहार सामाजिक निकायों जैसे उपसमूहों, समूहों, रूकावटों तथा सम्पर्क के माध्यमों का सामूहिक परिणाम होता है। लेविन ने इस बात पर जोर दिया था कि व्यापक सामाजिक संदर्भ में वास्तव में मनुष्य के व्यवहार को किस प्रकार आकार देता है।

1939 में अपने उच्च स्तरीय प्रयोग द्वारा लेविन तथा उसके साथियों ने अधिकारवादियों, लोकतांत्रिक तथा अहस्तक्षेपी नेतृत्व में विश्वास रखने वाली नेतृत्व की शैलियों के मानव समूहों पर प्रभाव का परीक्षण किया। अधिकारवादी नेता अपने सभी निर्णय स्वयं लेता था। जबकि लोकतांत्रिक नेता सहयोगी प्रकृति का था तथा गैर लोकतांत्रिक नेता निष्क्रिय था और लोगों को जैसा वे चाहते थे वैसा करने देता था। ऐसा पाया गया कि अधिकारवादी समूहों का व्यवहार आक्रामक था, लोकतांत्रिक समूहों के सदस्य मिलनसार थे और उनमें अत्यधिक क्षमता थी तथा स्वेच्छाचार में विश्वास रखने वाले समूहों में सामंजस्य का अभाव था तथा क्षमताओं की कमी थी। प्रयोग का मुख्य उद्देश्य यह दिखाना था कि मनुष्य का व्यवहार सामाजिक वातावरण से तय होता है जिस पर समाज के नेतृत्व करने वाले व्यक्ति का भी प्रभाव होता है। यह स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि मनुष्य के व्यवहार का आकलन सामाजिक संदर्भ में ही किया जाना चाहिए, व्यक्ति को स्वतंत्र इकाई मानते हुए नहीं।

13.4.2 व्यक्ति, स्थिति तथा पर्यावरण

कर्ट लेविन के क्षेत्र सिद्धांत ने इस विचार का सशक्तीकरण किया कि व्यक्ति के कार्य सामाजिक संदर्भ में घटित होते हैं इसलिये समाज से अलग हटाकर किसी व्यक्ति के व्यवहार का आंकलन करना सही परिणाम नहीं देगा। इससे लक्षण बनाम परिस्थिति पर बहस छिड़ गई अर्थात मनुष्य के व्यवहार को उसके व्यक्तित्व से जोड़ा जाए अथवा जिन परिस्थितियों में मनुष्य पला बढ़ा है उनसे जोड़ा जाए, इस पर व्यापक रूप से बहस हुई।

सामाजिक मनोविज्ञानी व्यक्तिगत लक्षणों की लम्बे समय तक अवहेलना करते रहे और यह कहते रहे कि व्यक्ति का व्यवहार उन परिस्थितियों से निर्मित होता है जिनमें वह जीवित रहता है। उनका तर्क था कि विभिन्न परिस्थितियों में एक ही व्यक्ति अलग-अलग व्यवहार करता है। उदाहरण के लिये एक परिस्थिति में मनुष्य विश्वास से भरा हो सकता है और उसका व्यवहार सरल हो सकता है और दूसरी परिस्थिति में वही व्यक्ति उत्सुकता से भरा अथवा परेशान हो सकता है।

दूसरे मनोवैज्ञानिकों का यह तर्क था कि व्यवहार इतना सरल नहीं होता, उनका सुझाव था कि व्यवहार को केवल परिस्थिति प्रभावित नहीं करती व्यवहार पर

सामाजिक स्थितियों का विशेष रूप से प्रभाव पड़ता है। यदि किसी व्यक्ति को अपना जीवन कठोर निमयों में बिताना पड़ता है और इसे चयन की स्वतंत्रता नहीं मिलती तब ऐसी परिस्थितियों में मनुष्यों के व्यवहार में अंतर आ जाते हैं। यदि मनुष्य का व्यवहार केवल परिस्थिति द्वारा संचालित होता तो खास प्रकार की परिस्थिति में हर व्यक्ति एक जैसा व्यवहार करता, परन्तु ऐसा नहीं होता हैं ऐसे मामलों में ज्यादातर मनोवैज्ञानिक इस बात पर सहमत हैं कि व्यवहार व्यक्तित्व विशेषताओं तथा परिस्थिति के बीच अंतर्संबंधों से निर्मित होता है। यह तर्क यह संकेत देता है कि मनुष्यों तथा उनके संदर्भों के बीच पारस्परिक संबंध होते हैं।

फिर भी ज्यादातर सामाजिक मनोवैज्ञानिक संदर्भ पर अधिक जोर देता है। अरस्तु के इस विचार के आधार पर कि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है यह साबित होता है कि मनुष्य एक-दूसरे से व्यवहार करते हैं तथा पारस्परिक रूप से एक दूसरे पर निर्भर होते हैं। उनके अंदर जितनी भावना एक-दूसरे से जुड़ने की होती है उतनी ही अपने मन की होती है। सामाजिक प्राणी होने के कारण मनुष्य अपने निकटतम लोगों का साथ संबंध रखना ज्यादा पसंद करते हैं। सामाजिक मनोविज्ञानी इस बात पर जोर देते हैं कि परिस्थितियां मनुष्य को इस तरह प्रभावित करती हैं कि वे एक खास प्रकार का व्यवहार करने के लिये विवश हो जाते हैं। इस तर्क के आधार पर सामाजिक मनोविज्ञानी हेजल मार्कस यह निष्कर्ष निकालता है कि लोगों का निकटवर्ती लोगों से ही संबंध बनाने का व्यवहार निदनीय है। मनुष्य अपने सामाजिक संदर्भ स्वयं निर्मित कर लेते हैं और उनके इस दृष्टिकोण के कारण व्यवहारों की निर्मित बाह्य सामाजिक बलों द्वारा ही निर्मित होने लगती है।

व्यवहारवादियों द्वारा बाह्य बलों से व्यवहार की निर्मित के विचार पर ज्यादा जोर दिया गया। व्यवहारवादियों ने इस बात पर जोर दिया कि पर्यावरण ही मनुष्य के व्यवहार का कारण होता है और मनुष्य प्रायः बाहरी घटनाओं का अधिक विरोध नहीं करते बल्कि उनके प्रभाव में आ जाते हैं। व्यवहारवादियों ने पर्यावरणीय तथा परिस्थितिगत निर्धारकों को मनुष्य के व्यवहार के लिये पूरी तरह जिम्मेदार ठहराया। इसीलिए उन्होंने यह निष्कर्ष निकाला कि मनुष्य का व्यवहार पर्यावरणीय परिस्थितियों द्वारा सीखने की प्रक्रिया से निर्मित होता है।

बाद में व्यवहारवादियों को सामाजिक संज्ञानात्मक सिद्धांतकार माना गया। आरंभिक व्यवहारवादियों से असहमत होते हुए उन्होंने यह सुझाव दिया कि मनुष्य पर्यावरणीय प्रभावों के साथ अनुकूलन करते हुए केवल उन्हीं प्रभावों के आधार पर व्यवहार नहीं करते बल्कि उनके व्यवहार में उनके व्यक्तित्व के आंतरिक घटक भी शामिल होते हैं। सामाजिक संज्ञानात्मक सिद्धांतकार मनुष्यों को सक्रिय निकाय मानते थे जो पर्यावरण के साथ संबंध रखते हुए उनसे प्रभाव ग्रहण करते हैं और उन प्रभावों को स्वविवेक द्वारा अपने व्यवहार का हिस्सा बनाते हैं। उनका विश्वास था कि मनुष्य दृष्टा होते हैं, विचारक होते हैं तथा योजनाकार होते हैं। हर व्यक्ति बाहरी घटनाओं का विश्लेषण करता है अतीत के बारे में सोचता है और अनुमान लगाता है कि भविष्य में क्या हो सकता है। इन तमाम घटकों को केन्द्र में रखते हुए व्यवहार करने का फैसला लेता है। सामाजिक संज्ञानात्मक सिद्धांतकार यह मानते हैं कि पर्यावरणीय परिस्थितियों का संज्ञानात्मक विश्लेषण करते हुए मनुष्य सामाजिक वातावरण से प्रभाव जरूर ग्रहण करता है, परंतु उन्हें विचार पूर्वक अपने व्यवहार में शामिल करता है।

सामाजिक संज्ञानात्मक सिद्धांतकार *पारस्परिक नियतत्ववाद* के सिद्धांत पर बात करते हुए कहता है कि व्यक्ति तथा पर्यावरण दोनों एक दूसरे को प्रभावित करते हैं। दोनों के बीच दो तरफा संबंध है। इसका अर्थ यह है कि पर्यावरण व्यक्ति के व्यवहार का निर्माण करता है तथा मनुष्यों का व्यवहार पर्यावरण को जन्म देता है। व्यक्ति तथा परिस्थितियां एक दूसरे का निर्माण करती हैं तथा व्यक्तियों के व्यवहार को समझने के लिए यह जानना जरूरी है कि हम यह जान लें कि विशिष्ट परिस्थिति में व्यक्तियों का परिस्थितियों के साथ अंतःसंबंध किस प्रकार का है।

सामाजिक मनोविज्ञानी, व्यवहारवादी तथा सामाजिक संज्ञानात्मक सिद्धांतकार स्थिति तथा पर्यावरण पर जोर देते हुए, दूसरे दृष्टिकोणों को आधार प्रदान करते हैं – यह पता लगाने के लिए कि सामाजिक संदर्भ की मानव-व्यवहार के निर्धारण में क्या भूमिका है। मनोवैज्ञानिक समाज के व्यक्तियों पर प्रभाव के महत्व पर अधिक जोर देने लगे हैं तथा व्यक्ति और समाज के संबंधों को समझने के लिए नींव स्थापित करने लगे हैं। परिस्थितिकी का दृष्टिकोण एक ऐसी उदाहरण है जो सामाजिक प्रभावों पर अधिक जोर देता है तथा व्यक्ति व समाज के संबंधों पर विशेष रूप से प्रकाश डालता है।

13.4.3 परिस्थितिकीय दृष्टिकोण

परिस्थितिकीय दृष्टिकोण प्राणियों तथा उनके पर्यावरण के साथ अंतसंबंधों का अध्ययन करता है। परिस्थितिकीय दृष्टिकोण को केवल 19वीं शताब्दी जर्मनी में देखा जा सकता है। उस समय इसे जीवनधारियों तथा पर्यावरण के बीच संबंधों के विज्ञान के रूप में प्रस्तुत किया गया था।

परिस्थितिकी का अर्थ होता है कि सृष्टि में समस्याओं के अनेक स्तर हैं अथवा अनेक पर्तें हैं उन सब पर विचार किया जाना चाहिए जिनमें व्यक्तिगत, पारिवारिक, पड़ोस से संबंधित, सामुदायिक तथा राष्ट्रीय स्तर की नीतियां शामिल हैं। यह दृष्टिकोण सामुदायिक मनोविज्ञान के क्षेत्र में अच्छी तरह प्रस्तावित किया गया है। सामुदायिक मनोविज्ञान व्यक्तियों के समुदायों तथा समाजों से संबंधों पर विशेष जोर देता हैं यह जीवन की गुणवत्ता में अभिवृद्धि करने तथा उसे समझने के प्रयास करता है जिसका उद्देश्य व्यक्तियों, समुदायों तथा समाजों के जीवन स्तर को बेहतर बनाना होता है। इसलिए ऐसा माना जाता है कि पारंपरिक, व्यक्तिपरक दृष्टिकोण के प्रति एक बदलाव की स्थिति उत्पन्न होती जा रही है। सामुदायिक मनोविज्ञानी, इस बात पर विशेष रूप से ध्यान देते हैं कि व्यक्ति समुदाय तथा समाज अंतर्संबंधित हैं, वे केवल व्यक्तियों पर अपने ध्यान को केंद्रित नहीं करते। संदर्भ अथवा पर्यावरण समझ तथा समुदायों के साथ काम करने और उन लोगों के साथ काम करने जो इनसे जुड़े हैं का अनिवार्य अंग माना जाता है।

सामुदायिक मनोविज्ञान व्यक्तियों समुदायों तथा समाजों के बीच विभिन्न प्रकार के संबंधों की व्याख्या करता है। एक व्यक्ति अनेक समुदायों में रहता है और उसे अनेक स्तरों पर अपनी भूमिका निभानी पड़ती है। जैसे परिवार, दोस्तों के समूह, कार्यस्थल, विद्यालय, स्वैच्छिक संस्थायें, पड़ोस तथा संस्कृतियां। अतः व्यक्ति को इन सब के साथ संबंधों के आधार पर समझा जाना चाहिए, कि निरपेक्ष रूप से। इस प्रकार यह न केवल व्यक्तियों अथवा समुदायों पर ध्यान केंद्रित करता है परंतु उनके बीच के संबंधों पर भी ध्यान केंद्रित करता है। सामुदायिक मनोविज्ञान समुदायों के विकास तथा

व्यक्तिगत जीवन के विकास को समझने में सहयोगी है। वो उन्हें एक दूसरे का विरोधी नहीं मानता। वो उन्हें एक दूसरे पर आधारित मानता है तथा यही मानता है कि उन्हें कभी एक दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता। व्यक्ति तथा समुदाय को एक दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता। यह विचार मनोविज्ञानियों की 'उरी ब्रोफेनबेनर ब्रैनर' की परिस्थिति की प्रणाली के सिद्धांत में पाया जाता है।

1979 में ब्रोफेनब्रेनर ने परिस्थितिकी प्रणालियों के सिद्धांत पर शोध प्रस्तुत किया था जो व्यक्तियों की उस परिस्थिति की व्याख्या करता है जो व्यक्ति और पर्यावरण के विभिन्न स्तरीय संबंधों पर आधारित हैं।

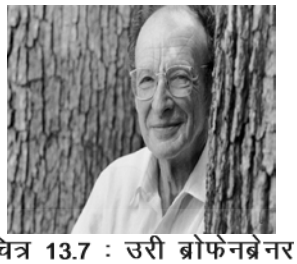

चित्र 13.7 : उरी ब्रोफेनब्रेनर (1917–2005)
स्रोत : www.firstdiscoverers.co.uk

ब्रोफेनब्रेनर के अनुसार अंतसंबंधित पर्यावरण प्रणालियां 5 प्रकार की होती हैं –

1) माइक्रो, 2) मीजो, 3) एक्सो, 4) मेक्रो तथा 5) क्रोनो।

ये छोटे स्तर से लेकर बड़े स्तर तक की प्रणालियां जो प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप से विकास की प्रक्रिया को प्रभावित करती हैं। सबसे समीपस्थ प्रणाली *माइक्रो प्रणाली* है, इसमें वे व्यवस्थाएं आती हैं जो व्यक्तियों के सीध सम्पर्क में आती हैं। माइक्रो प्रणाली के कुछ उदाहरण – परिवार, संगी-साथी, शिक्षण संस्थान तथा आस-पड़ोस आदि है। दूसरा परिस्थितिकी स्तर *मीजो प्रणाली* हैं। मीजो प्रणाली में वे प्रक्रियाएं शामिल होती हैं जो अनेक प्रकार की सूक्ष्म प्रणालियों के बीच स्थित होती हैं जिनके व्यक्ति मौजूद रहते हैं। एक मीजो प्रणाली में अनके सूक्ष्म प्रणालियां होती हैं। जो एक सूक्ष्म प्रणाली में घटित होता है, वह दूसरी सूक्ष्म प्रणाली को प्रभावित करता है। इसके बाद आती है एक्सो प्रणाली। *एक्सो प्रणाली* वे माइक्रो प्रणालियां आती हैं जिनमे मनुष्य शामिल तो होते हैं परन्तु सीधे-सीधे मौजूद नहीं रहते। एक्सो प्रणाली दूसरों के माध्यम से विकास को प्रभावित करती है जो व्यक्तियों के जीवन में योगदान करते हैं। अगला परिस्थितिकी स्तर *मेक्रो प्रणाली* है। मेक्रो प्रणाली व्यापक क्षेत्र में काम करती है इसमें प्रमुख विश्वास, मूल्य तथा मान्यताएँ आती हैं।

अंतिम परिस्थितिकी की स्तर *क्रोनो प्रणाली* है। क्रोनो प्रणाली सामाजिक ऐतिहासिक स्थिति होती है। इसके अंतर्गत वे परिवर्तन अथवा अनुकूलन आते है जो केवल व्यक्तियों से संबंधित ही नहीं होते, अपितु उस पर्यावरण से भी संबंधित होते हैं जिसमें मनुष्य रहते हैं।

परिस्थितिकीय दृष्टिकोण जैसा कि सामुदायिक मनोविज्ञान तथा परिस्थितिकी प्रणाली सिद्धांत में बताया गया है, स्पष्ट रूप से संकेत करता है कि व्यक्ति समाज का अभिन्न अंग होता है, और समाज का व्यक्ति तथा उसके व्यक्तित्व को आकार देने में सशक्त प्रभाव होता है।

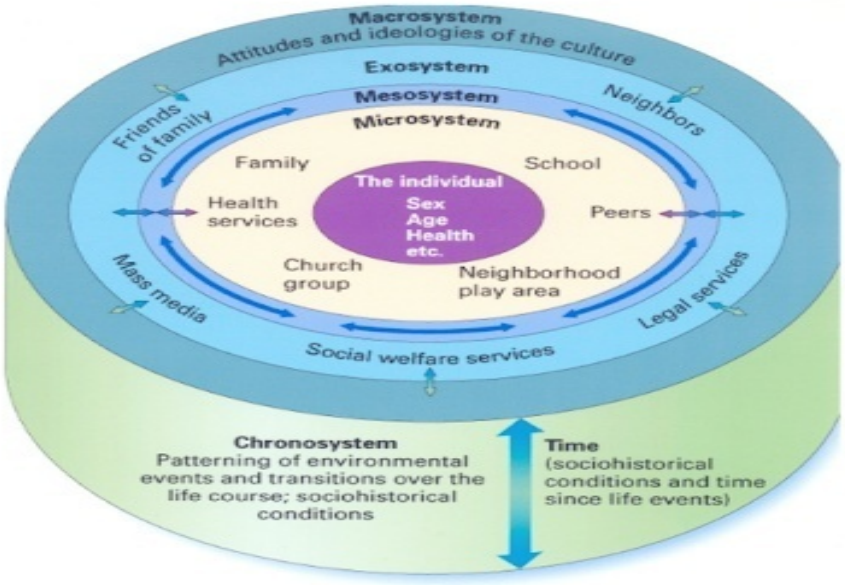

चित्र 13.8 : पारिस्थितिक तंत्र सिद्धांत

बॉक्स 13.4 : सामाजिक परिवेश में व्यक्ति : मनोविज्ञान के उप-क्षेत्र

- यद्यपि मनोविज्ञान ने एक स्वतंत्र विज्ञान के रूप में अपनी यात्रा आरंभ की थी, आने वाले वर्षों में मनोविज्ञान के उप-क्षेत्र विकसित होते चले गये जिन्होंने इस बात पर जोर दिया कि व्यापक सामाजिक संदर्भ मनुष्यों पर अपना प्रभाव डालते हैं। मनोविज्ञान के उप-क्षेत्रों का संक्षिप्त विवरण नीचे दिया गया है –
- **सामाजिक मनोविज्ञान** – *सामाजिक मनोविज्ञान* विचारों, भावनाओं तथा व्यवहार पर परिस्थितियों तथा संदर्भों की भूमिकाओं का परीक्षण करता है। यह पता लगाता है कि सामाजिक संदर्भ जैसे सामाजिक मान्यताएं तथा सामाजिक परिवर्तन मनुष्यों पर किस प्रकार प्रभाव डालते हैं।
- **पर्यावरणीय मनोविज्ञान** – *पर्यावरणीय मनोविज्ञान* व्यक्तियों के अपने परिवेश के साथ अंतर्संबंधों की व्याख्या करता है। यह बताता है कि व्यक्ति तथा परिवेश एक दूसरे पर किस प्रकार अपने प्रभाव छोड़ते हैं। परिवेश का क्षेत्र व्यापक हो सकता है जिसमें बड़े स्तर पर फैला विविधताओं वाला समाज आता है।
- **सांस्कृतिक मनोविज्ञान** – *सांस्कृतिक मनोविज्ञान* बताता है कि सामाजिक सांस्कृतिक गतिविधियां सामाजिक परिवर्तनों तथा विकास की क्रियाओं में किस प्रकार भूमिका निभाती हैं तथा समय बीतने के साथ-साथ व्यक्तियों के विचारों, भावनाओं तथा व्यवहार में किस तरह बदलाव आ जाते हैं।
- **सामुदायिक मनोविज्ञान** – *सामुदायिक मनोविज्ञान* इस बात की जांच करता है कि व्यक्ति, समुदाय तथा समाज किस प्रकार परस्पर अंतर्संबंधित हैं। यह बताता है कि विविध सामाजिक संदर्भ किस तरह व्यक्तियों को प्रभावित करते हैं। सामुदायिक मनोविज्ञान यह भी बताता है कि समाज समुदायों को किस प्रकार प्रभावित करता है और समुदायों व्यक्तियों पर किस प्रकार अपने प्रभाव डालते हैं।
- **राजनैतिक मनोविज्ञान** – *राजनैतिक मनोविज्ञान* यह बताता है कि राजनैतिक परिदृश्य समाज में व्यक्तियों के विकास, उनके दृष्टिकोणों, विश्वासों, उनकी सोच तथा विचारधारा को किस प्रकार प्रभावित करता है।

अपनी प्रगति की जाँच कीजिए 3

1) लेविन का क्षेत्र सिद्धांत क्या है?

.....

.....

.....

.....

.....

2) देकार्ते परिप्रेक्ष्य के अनुसार मन व शरीर के अंतर्संबंध की व्याख्या कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

3) परिस्थितिकी परिप्रेक्ष्य व्यक्ति व समाज के अंतर्संबंधों की व्याख्या किस प्रकार करता है।

.....

.....

.....

.....

.....

13.5 सारांश

अब जब हम इस इकाई के अन्त में आ गये हैं तो आइए हम उन सभी बिन्दुओं को सारणीबद्ध करते हैं जो हमने सीखे हैं :

- प्रकृति बनाम पोषण इस बारे में एक बहस है कि व्यक्ति तथा उसके व्यवहारों को जैविक अनुवांशिकता किस सीमा तक आकार देती है। *प्रकृति* पर पर्यावरणीय घटकों के प्रभाव को *पोषण* कहा जाता है।
- *जैविक पर्यावरण* में पौष्टिकता, चिकित्सीय देख-रेख, दवाएँ तथा दैहिक घटनाएं तथा वह सब जो (जन्म से पहले) घटित होता है, आदि शामिल हैं।
- *सामाजिक पर्यावरण* में व्यक्तिगत अनुभव, परिस्थितियां, ज्ञान, सामाजिक तथा राजनैतिक पृष्ठभूमि, परिवार, संगी साथी, विद्यालय, समुदाय, मीडिया तथा संस्कृति आदि शामिल हैं।
- स्वतंत्रता इच्छा को गैर नियतत्ववाद भी कहा जाता है। इसके अनुसार व्यवहार मौजूदा परिस्थितियों अथवा अतीत के अनुभवों द्वारा नियंत्रित नहीं होता है।

नियतत्ववाद एक अवधारणा है जिसके अनुसार हर व्यवहार के पीछे कोई न कोई विशेष कारण अवश्य होता है। नियतत्ववाद दो प्रकार का होता है – एक दैहिक नियतत्ववाद, दूसरा मानसिक नियतत्ववाद। यदि व्यवहार के कारण को सीधे सीधे मापा जा सकता है तथा उसका परिमाणन किया जाता है तब इसे *दैहिक नियतत्ववाद* कहते हैं। मानसिक नियतत्ववाद में जैविक, पर्यावरणीय तथा *सामाजिक, सांस्कृतिक नियतत्ववाद* शामिल हैं।

- जब व्यवहार के कारणों की व्याख्या संज्ञानात्मक तथा संवेदी अनुभवों के रूप में की जाती है तब इसे मानसिक नियतत्ववाद कहा जाता है। ऐसे हर मामले में व्यवहार के कारण व्यक्तिपरक होते हैं तथा उन्हें न तो सीधे-सीधे मापा जा सकता है और न ही उनका परिमाणन किया जा सकता है।
- विलियम जेम्स ने कठोर नियतत्ववाद तथा नम्र नियतत्ववाद के बीच अंतर स्थापित किया था। जब व्यवहार का कारण स्वचालित अथवा यांत्रिक होता है। तब इसे कठोर नियतत्ववाद कहा जाता है। नम्र नियतत्ववाद में संज्ञानात्मक प्रक्रियायें जैसे – इरादा, अभिप्रेरणा तथा विश्वास आदि आते हैं।
- अनेक मनोवैज्ञानिक यह मानते है दैहिक तथा मानसिक दोनों प्रकार की घटनायें साथ-साथ अस्तित्व में होती हैं तथा उन्हें विभिन्न सिद्धांतों द्वारा नियंत्रित किया जाता है। इस स्थिति को द्वैतवाद कहा जाता है।
- 'थॉमस हाब्स' ब्रिटेन के अनुभववाद के संस्थापक थे, वे दैहिकवाद के प्रमुख समर्थक थे उनके अनुसार मनुष्य इंजन की तरह होते हैं तथा उनके व्यवहार और व्यवहारों की उत्पत्ति के कारणों को शरीर के स्तर पर ही व्याख्यायित किया जा सकता है।
- *आदर्शवाद* एक अन्य प्रकार का अद्वैतवाद होता है जो अनुभव आदर्श तथा आध्यात्मिकता की भूमिका पर जोर देता है। वास्तविकता मुख्यतः सचेतन अनुभवों के बारे में होती है तथा वे अदृश्य निकाय वास्तविकता को समझने में महत्वपूर्ण होते हैं।
- देकार्ते का विश्वास था कि मनुष्य दो चीजों से निर्मित होते हैं - आत्मा अथवा मन और शरीर। मन पूरी तरह सोचने वाला अवयव होता है जबकि शरीर पूरी तरह एक दैहिक पदार्थ होता है तथा वह यांत्रिक नियमों का पालन करता है। मन और शरीर मनुष्य के दो स्पष्टतया भिन्न निकाय होते हैं। मन और शरीर परस्पर अंतिर्निबंधित होते हैं। इस विचार को परस्पर क्रियावाद कहा जाता है। परस्पर क्रियावाद को *कार्टीजन द्वैतवाद* भी कहा जाता है।
- *द्वि-पहलूवाद* के विचार को बेनेडिक्ट स्पाइनोज ने प्रस्तुत किया था। द्वि-पहलूवाद भौतिकवाद, आदर्शवाद तथा द्वैतवाद (खासकर परस्पर क्रियावाद) का विरोधी है।
- मनोविज्ञान में क्षेत्र सिद्धांतों का प्रभाव दैहिक शास्त्र से आया था जिसमें शक्ति क्षेत्रों की धारणा का इस्तेमाल किया गया था। गैस्टॉल्ट मनोविज्ञान इस धारणा से अत्यधिक प्रभावित था। कर्ट लेविन ने इसे आगे बढ़ाया था।
- लेविन का विचार था कि व्यक्तित्व को व्यक्ति और पर्यावरण के अंतर्संबंधों के गत्यात्मक क्षेत्र के परिप्रेक्ष्य में परखा जाना चाहिये। व्यक्ति की मनोवैज्ञानिक गतिविधियां एक मनोवैज्ञानिक क्षेत्र में घटित होती हैं जिसे *जीवन अवधि* कहा

जाता है। जीवन अवधि में अतीत, वर्तमान तथा भविष्य की वे सभी घटनायें समाहित होती है जो व्यक्ति को प्रभावित कर सकती हैं।

- हेजल मार्कस ने सुझाव दिया था कि मनुष्य निंदनीय है, मनुष्य अपने सामाजिक संदर्भ से अनुकूलन करते हैं और यह मानते हैं कि व्यवहार बाहय सामाजिक शक्तियों द्वारा निर्मित होता है।
- सामाजिक संज्ञानात्मक सिद्धांतकार पारस्परिक नियतत्ववाद के सिद्धांत पर जोर देते हैं। वे यह मानते हैं कि व्यक्ति तथा पर्यावरण एक दूसरे को प्रभावित करते हैं और उनके बीच दो तरफा संबंध है।
- परिस्थितिकीय परिप्रेक्ष्य प्राणियों और उनके पर्यावरण से अंतर्संबंधों की व्याख्या करता है। यह विचार कि व्यक्ति और समुदाय अभिन्न होते हैं, उनके एक दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता, उरी ब्रोफेनब्रेनर के परिस्थितिकी प्रणाली में मौजूद है।
- ब्रोफेनब्रेनर के अनुसार पर्यावरणीय प्रणालियां जो परस्पर संबंधित होती है। पांच प्रकार की होती हैं – 1) माइक्रो, 2) मीजो, 3) एक्सपो, 4) मैक्रो, 5) क्रोनो, ये छोटे स्तर से बड़े स्तर तक व्याप्त प्रणालियां हैं, जो प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप से विकास की प्रक्रिया को प्रभावित करती हैं।
- परिस्थितिकीय परिप्रेक्ष्य जैसा कि सामुदायिक मनोविज्ञान तथा परिस्थितिकी प्रणालियों के सिद्धांत में बताया गया है, स्पष्ट रूप से संकेत करता है कि व्यक्ति समाज का अभिन्न अंग होता है और समाज का व्यक्ति तथा उसके व्यक्तित्व के निर्माण पर सशक्त प्रभाव पड़ता है।

13.6 मुख्य शब्द

प्रकृति : व्यवहार की विकासात्मक तथा अनुवांशिक आधारशिला।

पोषण : यह धारणा कि व्यक्तियों का निर्माण पर्यावरण के द्वारा होता है।

आनुवंशिकतवाद : एक दार्शनिक सिद्धांत जो इस बात पर जोर देता है कि व्यक्ति की योग्यताओं व क्षमताओं के विकास का निर्णय अनुवांशिकता करती है, अधिगम तथा अनुभव नहीं।

अनुभववाद : वह दर्शन जो इस बात पर जोर देता है कि ज्ञान तथा अनुभव से व्यक्ति का विकास होता है।

स्वतंत्र इच्छा : यह विचार कि व्यवहार का निर्माण वर्तमान परिस्थितियों अथवा अतीत के आधार पर नहीं होता। व्यवहार परिस्थितियों के आधार पर व्यक्तिगत रूप से तय किए गये निष्कर्षों के आधार पर आकार ग्रहण करना है। इसे स्वंतत्र इच्छा स्वातंत्रय कहा जाता है।

नियतत्ववाद : यह अवधारणा कि हर व्यवहार के पीछे कोई न कोई कारण अवश्य होता है।

अनियतत्ववाद : व्यवहार के कारणों को सही सही मापा जा सकता क्योंकि व्यवहार का निरीक्षण करने से व्यवहार में परिवर्तन आ जाता है। इसी को अनियतत्ववाद कहा जाता है।

दैहिक नियतत्ववाद : व्यवहार का कारण सीधे-सीधे मापा जा सकता है तथा उसका परिमाणन भी किया जा सकता है।

मानसिक नियतत्ववाद : व्यवहार के कारण संज्ञानात्मक तथा संवेगात्मक अनुभवों के रूप में व्याख्यायित किए जा सकते हैं। ऐसे मामले में व्यवहार के कारण व्यक्तिपरक होते हैं तथा उन्हें प्रत्यक्षतः मापा नहीं जा सकता और उनका परिमाणन भी नहीं किया जा सकता।

नम्र नियतत्ववाद : नम्र नियतत्ववाद इस व्यवहार में संज्ञानात्मक प्रक्रियाएं शामिल होती हैं, जैसे – इरादा, प्रेरणा, विश्वास आदि। ये प्रक्रियाएं अनुभव तथा व्यवहार के बीच हस्तक्षेप करती हैं।

कठोर नियतत्ववाद : कठोर नियतत्ववाद व्यवहार का कारण स्वचालित या यांत्रिक होता हैं। ऐसे मामलों में व्यक्तिगत जिम्मेदारी नहीं होती।

आदर्शवाद : यह विश्वास की वास्तविकता चेतन्य अनुभवों पर आधारित होती है तथा अदृश्य निकाय वास्तविकता को समझने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। यह इस बात पर भी जोर देता है कि जो कुछ भी अस्तित्व में होता है, उसे मानसिक घटनाओं के रूप में जाना जा सकता है।

द्वैतवाद : मनुष्यों के विश्वास दो अवयवों से निर्मित होते हैं - आत्मा या मन और शरीर। मन पूरी तरह चिंतनशील अवयव है जबकि शरीर एक दैहिक अवयव है तथा यांत्रिक नियमों का पालन करता है। मन तथा शरीर दो बहुत स्पष्ट तथा विशेष निकाय होते हैं।

द्वि–पहलूवाद : यह विश्वास कि मन व शरीर अभाज्य होते हैं - वे एक ही निकाय के दो अलग-अलग पक्ष हैं।

क्षेत्र सिद्धांत : यह परिप्रेक्ष्य कि व्यक्तित्व को व्यक्ति व पर्यावरणीय अंतर्संबंधों के गतिशील क्षेत्र के अंतर्गत पर खा जाना चाहिए।

लाइफ स्पेस : मनोवैज्ञानिक क्षेत्र जिसमें व्यक्ति की सभी मनोवैज्ञानिक गतिविधियाँ घटित होती हैं। इसमें अतीत, वर्तमान तथा भविष्य की वे सभी घटनाएं जो व्यक्ति को प्रभावित करती हैं, सम्मिलित हैं। ये सभी घटनाएं विशिष्ट परिस्थितियों में व्यवहार का निर्धारण करती हैं।

पारस्परिक नियतत्ववाद : पर्यावरण तथा व्यक्ति के बीच दो तरफा संबंध व्यक्ति तथा पर्यावरण का एक दूसरे को प्रभावित करना।

परिस्थितिकीय परिप्रेक्ष्य : जीवधारियों तथा पर्यावरण के बीच अंतर्संबंध/परिस्थितिकी का अर्थ है कि समस्याओं के अनेक स्तर सतहें होती हैं जिन पर विचार किया जाना चाहिए जैसे - व्यक्ति, परिवार, आस पड़ोस, समुदाय तथा राष्ट्रीय स्तर की नीतियां।

सामुदायिक मनोविज्ञान : व्यक्तियों के समुदायों तथा समाजों से संबंधों का अध्ययन। यह व्यक्तियों के जीवन की, समुदायों की तथा समाजों की गुणवत्ता में वृद्धि करने तथा उन्हें समझने का प्रयास करता है।

परिस्थितिकीय प्रणाली सिद्धांत : परिस्थितिकीय प्रणालियों का सिद्धांत जो पर्यावरण के विभिन्न स्तरों पर आधारित व्यक्तियों की परिस्थितिकी की व्याख्या करता है। परस्पर अंतर्संबंधित यह पर्यावरणीय प्रणालियां पांच प्रकार की होती हैं – 1) माइक्रो, 2) मीजो, 3) एक्सपो, 4) मैक्रो, 5) क्रोनो।

13.7 पुनरावलोकन प्रश्न

1) विकास में प्रकृति के विचार की व्याख्या कीजिए?
2) सहजवाद तथा अनुभववाद मनोविज्ञान पर किस प्रकार अपना प्रभाव डालते हैं उनकी व्याख्या कीजिए?
3) नियतत्ववाद मानव व्यवहार के बारे में किस प्रकार जटिल है?
4) विलियम जेम्स ने किस प्रकार यह सुझाव दिया था कि नियतत्ववाद में व्यक्तिगत जिम्मेदारी भी शामिल हो सकती है?
5) देकार्ते के अनुसार मन और शरीर दो अलग-अलग निकाय किस तरह हैं?
6) लेविन की मनोवैज्ञानिक क्षेत्र की धारणा व्यक्तिगत व्यवहार में संदर्भ की भूमिका पर किस प्रकार जोर देती है?
7) सामाजिक संज्ञानात्मक सिद्धांतकारों के अनुसार मनुष्यों तथा पर्यावरण के बीच दो तरफा अंतर्संबंध क्या होते हैं?
8) व्यक्तिपरक दृष्टिकोण से सामुदायिक मनोविज्ञान किस प्रकार भिन्न है?
9) ब्रोफेनब्रेनर द्वारा वर्णित विभिन्न परिस्थितिकीय स्तरों की व्याख्या कीजिए?

13.8 संदर्भ एवं पढ़ने के सुझाव

Bell, A. (2002). *Debates in Psychology*. Hove: Routledge

Brennan, J. F. (2014). *History and Systems of Psychology*. Harlow: Pearson Education Ltd.

Chung, M. C. & Hyland, M. E. (2012). *History and Philosophy of Psychology*. Oxford: Wiley-Blackwell Publications

Ettekal, A. V. & Mahony, J. L. (2017). *Ecological Systems Theory,* In Peppler, K. (Ed.), The SAGE Encyclopaedia of Out-of-School Learning. Thousand Oaks: SAGE Publications

Gross, R. (2009). *Themes, Issues, and Debates in Psychology.* London: Hodder Education

Hergenhahn, B. R. & Henley, T. B. (2009). *An Introduction to the History of Psychology*. Wadsworth: Cengage Learning

Kloos, B., Thomas, E., Wandersman, A., Elias, M. J., & Dalton, J. H. (2012). *Community Psychology: Linking Individuals and Communities.* Wadsworth: Cengage Learning

Maltby, J., Day, L., & Macaskill, A. (2007). *Personality, Individual Differences, and Intelligence.* Harlow: Pearson Education Ltd.

Myers, D. G. (2010). *Social Psychology.* New York: McGraw-Hill

Passer, M. W. & Smith, R. E. (2009). *Psychology: The Science of Mind and Behavior.* New York: McGraw-Hill

Santrock, J. W. (2011). *Lifespan Development.* New York: McGraw-Hill

Schultz D. P. & Schultz, S. E. (2008). A *History of Modern Psychology.* Wadsworth: Thomson Learning, Inc

Wolman, B. B. (1981). *Contemporary Theories and Systems in Psychology.* New York: Plenum Press

13.9 चित्रों के संदर्भ

Bayler, R. (2021). Werner Heisenberg. https://www.britannica.com/biography/Werner-Heisenberg

Biography.com (2020). Francis Galton. https://www.biography.com/scientist/francis-galton

Biography.com (2020). René Descartes. https://www.biography.com/scholar/rene-descartes

Cherry, K. (2020). Quotes from Psychologist Kurt Lewin. https://www.verywellmind.com/kurt-lewin-quotes-2795692

First Discoverers (n.d.). Child Development Theories: John Watson, https://www.firstdiscoverers.co.uk/child-development-theories-john-watson/

First Discoverers (n.d.). Child Development Theories: Uri Bronfenbrenner. https://www.firstdiscoverers.co.uk/child-development-theories-urie-bronfenbrenner/

History.com Editors (2019). John Locke. https://www.history.com/topics/british-history/john-locke

Kallen, H. M. (2021). William James, https://www.britannica.com/biography/William-James

Komp, C. (2013). Noam Chomsky: America is a Terrified Country. https://www.salon.com/2013/11/23/noam_chomsky_america_is_a_terrified_country_partner/

McCrum, R. (2017). The 100 Best Non-fiction Books: No. 94 – Leviathan by Thomas Hobbes (1651). https://www.theguardian.com/books/2017/nov/20/the-100-best-nonfiction-books-no-94-leviathan-thomas-hobbes-1651

Sites.google.com (n. d.). Self, Social, and Moral Development: Bronfenbrenner's Social Development. https://sites.google.com/site/itsyourfirstyearteaching510/self-social-and-moral-development/bronfenbrenner-s-social-development

The Ethics Centre (2018). Big Thinker: Baruch Spinoza. https://ethics.org.au/big-thinker-baruch-spinoza/

13.10 ऑनलाइन संसाधन

Boeree, C. G. (1999). Metaphysics. http://webspace.ship.edu/cgboer/meta.html

Carlisle, C. (2011). Spinoza, part 1: Philosophy as a way of life. https://www.theguardian.com/commentisfree/belief/2011/feb/07/spinoza-philosophy-god-world

Cave, S. (2016). There is no such thing as free will. https://www.theatlantic.com/magazine/archive/2016/06/theres-no-such-thing-as-free-will/480750/

Encyclopedia.com (n. d.). Person-Situation Debate. https://www.encyclopedia.com/social-sciences/applied-and-social-sciences-magazines/person-situation-debate

Exploring Your Mind (2018). Kurt Lewin and Field Theory. https://exploringyourmind.com/kurt-lewin-field-theory/

Jason, L. A., Glantsman, O., O'Brien, J. F., & Ramian, K. N. (2021). Introduction to community psychology. In R. Biswas-Diener & E. Diener (Eds), *Noba textbook series: Psychology*. Champaign, IL: DEF publishers.https://nobaproject.com/modules/introduction-to-community-psychology

Lumen Learning (n. d.). Nature and Nurture. https://courses.lumenlearning.com/wmopen-psychology/chapter/outcome-gene-environment-interaction/

Petrona, A. (2018). What is the Ecological Perspective? https://www.theclassroom.com/ecological-perspective-6638441.html

Robinson, D. S. (2020). Idealism. https://www.britannica.com/topic/idealism

Sampson, G. (2020). Nativism v. Empiricism. https://www.grsampson.net/REmpNat.html

Sorell, T. (2020). Thomas Hobbes. https://www.britannica.com/biography/Thomas-Hobbes

The Editors of Encyclopaedia Britannica (2020). Mind-body Dualism. https://www.britannica.com/topic/mind-body-dualism

The Great Debate (2006). Determinism and Free Will in Science and Philosophy. http://www.thegreatdebate.org.uk/determinismandfreewill.html

The Psychology Notes Headquarters (2019). What is Bronfenbrenner's Ecological Systems Theory? https://www.psychologynoteshq.com/bronfenbrenner-ecological-theory/

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

कुछ महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिकों का क्रमविकास

(प्रारंभिक यूनानी दार्शनिकों से लेकर आज तक)

कालावधि	मनोवैज्ञानिक	योगदान
428-347 ईसा पूर्व	प्लेटो (ग्रीक दार्शनिक)	मनोवैज्ञानिक विकास की प्रकृति की भूमिका के लिए तर्क दिया।
384-322 ईसा पूर्व	अरस्तु (ग्रीक दार्शनिक)	मनोविज्ञान विकास में पोषण (नरचर) की भूमिका को प्रस्तुत किया।
1588-1679	थॉमस हाब्स (ब्रिटिश दार्शनिक)	मानव प्रकृति के यांत्रिकवादी नियम।
1596-1650	रेने देकार्ते (फ्रांसीसी दार्शनिक एवं गणितज्ञ)	*मुझे लगता है, इसलिए मैं हूँ, शरीर/आत्मा द्वैतवाद का मॉडल विकसित किया*।
1632-1704	जॉन लॉक (ब्रिटिश दार्शनिक)	वर्ष 1689 में इन्होंने एक पुस्तक *'एन एस्से कनसरनिग हयूमन'* जिसने आधुनिक अनुभववाद को प्रोत्साहित किया।
1712-1778	जीन-जैक्स रूसो (फ्रेंच दार्शनिक)	पश्चिमी दुनिया में शिक्षा के दर्शन पर पहला मूलग्रंथ एमिल (1762)।
1801-1887	गुस्ताव फेकनर (जर्मन प्रायोगिक मनोवैज्ञानिक)	ध्यान देने योग्य अंतर विचार विकसित किया जिसे पहला अनुभवजन्य मनोवैज्ञानिक माप माना जाता है।
1809-1882	चार्ल्स डार्विन (ब्रिटिश प्रकृतिवादी)	*ओन दी ओरिजन ऑफ स्पेसीज (1859)* प्रकार्यवादी विचारधारा एवं विकासवादी मनोविज्ञान के क्षेत्र को प्रभावित किया।
1832-1920	विलिहम वुण्ट (जर्मन चिकित्सक एवं दार्शनिक)	जर्मनी के लिपज़िग में पहली मनोविज्ञान प्रयोगशाला स्थापित की, संरचनावाद को विकसित करने में सहायता, स्वयं को 'मनोवैज्ञानिक के रूप में वर्णित करने वाले पहले व्यक्ति।
1842-1910	विलियम जेम्स (अमेरिकी मनोवैज्ञानिक)	अमेरिकी मनोविज्ञान में अग्रणी, मनोविज्ञान के प्रकार्यवादी विचारधारा को विकसित करने में सहायता

		प्रदान।
1849-1936	इवान पावलव (रूसी शरीर-क्रिया विज्ञानी)	अधिगम के प्रयोगों में प्राचीन अनुबंधन के सिद्धांत को जन्म दिया।
1850-1909	हर्मन एबिन्गहास (जर्मन मनोवैज्ञानिक)	*स्मृति (1885)* की उच्च मानसिक प्रक्रियाओं का अध्ययन किया।
1850	डोरोथी डिक्स (कनाडाई मनोवैज्ञानिक)	मानसिक स्वास्थ्य में योगदान एवं कनाडा के हैलिफैस में पहला मानसिक अस्पताल खोला।
1856-1939	सिगमंड् फ्रायड (आस्ट्रियन न्यूरोलाजिस्ट)	मनोविश्लेषण, चिकित्सा का मनोदैहिक रूप स्थापित किया गया था।
1863-1930	मेरी कालकिन्स (अमेरिकन मनोवैज्ञानिक)	अमेरिकन साइकोलोजिकल एसोसिएशन की प्रथम महिला अध्यक्ष।
1857-1911	अल्फ्रेड बिने (फ्रेंच मनोवैज्ञानिक)	बुद्धि लब्धि की पहली व्यावहारिक परीक्षा बिनेट - साइमन टेस्ट (1905) का निर्माण किया
1867-1927	एडवर्ड ब्रेडफोर्ड टिचनर (ब्रिटिश मनोवैज्ञानिक)	मन के लए संरचनात्मक दृष्टिकोण विकसित किया।
1878-1958	जॉन बी वाट्सन (अमेरिकन मनोवैज्ञानिक)	व्यवहारवादी दृष्टिकोण स्वीकार किया।
1886-1969	सर फ्रेडरिक सी. वार्टलेट (ब्रिटिश मनोवैज्ञानिक)	संज्ञानात्मक मनोविज्ञान के अग्रदूत
1889-1944	प्रो. नरेंद्र नाथ सेनगुप्ता (भारतीय मनोवैज्ञानिक)	भारत की पहली शोधपत्र इंडियन जर्नल ऑफ साइकोलॉजी (1925) में शुरू किया तथा वर्ष 1940 में प्रायोगिक मनोविज्ञान विभाग की कलकत्ता में स्थापना।
1896-1980	जीन पियाजे (स्विस विकासात्मक मनोवैज्ञानिक)	संज्ञानात्मक विकास के चरण
1895-1954	फ्रांसिस सेसिल समर (अफ्रीकी अमेरिकन मनोवैज्ञानिक)	मनोविज्ञान में पी.एच.डी. की डिग्री प्राप्त करने वाले प्रथम अफ्रीकी अमेरिकी। *अश्वेत मनोविज्ञान के जनक।*
1904-1990	बी. एफ. स्किनर (अमेरिकन मनोवैज्ञानिक)	व्यवहारवाद विचारधारा में योगदान
1908-1970	अब्राहम मैस्लो (अमेरिकी मनोवैज्ञानिक)	आत्म-सिद्धि के मानवतावादी सिद्धांत के लिए जाना

		जाता है।
1913-1994	रोजर स्पेरी (अमेरिकी न्यूरोसाइकोलाजिस्ट एवं न्यूरोबायोलाजिस्ट)	विभक्त मस्तिष्क के लिए नोबल पुरस्कार प्राप्त किया।
1932	कोनेरु रामकृष्ण राव (भारतीय मनोवैज्ञानिक)	मनोविज्ञान में अनुकरणीय कार्य के लिए पद्म श्री से विभूशित।
1955	सी.एम. भाटिया	भारतीय परिस्थितियों में उपयोग के लिए बुद्धि के परिक्षणों की बैटरी की स्थापना तथा इस कार्य को प्रकाशित किया।
1925	अल्बर्ट बंडुरा (कनाडाई मनोवैज्ञानिक)	अपने ''बोबो-डाल'' के साथ सामाजिक अधिगम सिद्धांत को प्रस्तुत किया।
1926-1993	डोनाल्ड ब्राडवेंट (ब्रिटिश संज्ञानात्मक मनोवैज्ञानिक)	अवधान का फिल्टर मॉडल।
1942	मार्टिन सेलिगमैन (अमेरिकी मनोवैज्ञानिक)	सकारात्मक मनोविज्ञान और कल्याण तथा अधिगम असहायता का सिद्धांत।
20वीं और 21वीं सदी	लिड़ा बार्टोशुक, डेनियल कन्नमैन, एलिजाबेथ, मिलर (अमेरिकी मनोवैज्ञानिक)	स्मृति, अधिगम एवं निर्णय का अध्ययन करके मनोविज्ञान की संज्ञानात्मक विचारधारा में योगदान
2013	अमेरिकन साइकियाट्रिक एसोसिएशन	डीएसएम-5 (मानसिक विकारों के नैदानिक और सांख्यिकीय मैनुअल का पांचवा संस्करण)।
1921-2016	थामस शेलिंग (अमेरिकी अर्थशास्त्री)	आर्थिक व्यवहार में द्वंद्व और सहयोग को समझने के लिए गेम थ्योरी का निर्माण तथा इसी कार्य के लिए 2005 में नोबेल पुरस्कार।
1922-1998	दुर्गानंद सिन्हा (भारतीय मनोवैज्ञानिक)	भारत के संदर्भ में बच्चों के विकास को समझने का पारिस्थितिक मॉडल (1977)।
1970	हंस सेली (हंगेरियन मनोवैज्ञानिक)	तनाव का मनोविज्ञान।